समर्पण

(द्वितीय खण्ड)

प्रेरक प्रसंगो के साथ साथ 241 भक्ति गीत

डॉ. चन्द्र प्रभाकर कोकड़ा

जगवीर सिंह प्रकाशन
मुण्डाल खुर्द, भिवानी–127041(हरियाणा)
मो. 9254846995

लेखक : डॉ. चन्द्र प्रभाकर कोकड़ा

ISBN : **978–81–923278–1–5**

प्रकाशक : जगवीर सिंह प्रकाशन
मुण्डाल खुर्द, भिवानी–127041(हरियाणा)
मो. 9254846995

संस्करण : प्रथम, 2013

मूल्य : 160.00 रुपये

Samarpan (2nd part) by : Dr. chander prabhakar Kokra

प्रकाशकीय

समर्पण भक्तिगीतों का पूर्वार्ध पाठकों द्वारा बहुत पसन्द किया गया। इसके अन्दर आठ सौ सत्ताइस नये पद है। पूर्व प्रकाशिक ग्यारह पुस्तकों के पद विशेष परिशिष्ट में जोड़ दिये गये है। इसमें कुल भक्ति गीतों की संख्या दो हजार इक्यावन है। अन्तिम भाग में ज्ञानामृत भी दिया गया है। अध्यात्म पथिकों के लिये यह पुस्तक निश्चित रूप से उनकी साधना को सुदृढ़ करेगी। इसी श्रृंखला में समर्पण द्वितीय खण्ड को प्रकाशित करते हुए मुझे अपूर्व प्रसन्नता हो रही है। साहित्यकार एवं समालोचक डा. मनोज भारत के शब्दो में –डॉ. चन्द्र 'प्रभाकर' का सृजन वर्तमान युग की अति भौतिकता वादी, अतिरंजक, लम्पट जीवन शैली की तपती हांपती दीप्त दोपहरी में रिमझिम सावन की सुहाती शीत फुहरों जैसा सृजन है। साहित्य सृजन का फलक बहुआयामी तथा बहुवर्णी है। जिस भाव और रस से सिक्त हो कर श्री कोकड़ा जी साधना कर रहे है वह वर्तमान सृजन शिल्पियों में नगण्य है। सर्वप्रथम ऐसा प्रयास करने वाली कलम को अनेकानेक नमन व साधुवाद। समर्पण द्वितीय खण्ड में एक और उभयनिष्ठ विशेषता सर्वत्र परिलक्षित होती है पृष्ठ के एक भाग में गेय यह तथा दूसरे भाग में प्रेरक प्रंसगों का संकलन किया गया है। प्रसंगो का चयन बहुत सावधानी से किया गया है। अध्यात्म पथिकों के लिये गद्य तथा पद्य दोनो का एक साथ संकलन निश्चित रूप से उनकी साधना को सुदृढ़ करेगा। भाषायी कौशल और काव्यशास्त्र की परम्पराओं से उपरत हो कर, भक्ति मार्ग के पथिक साधको के मन को यह कृति निश्चित रूप से भाव विभोर कर देगी। साहित्यकार एवं समालोचक डॉ लखन लाल शर्मा के शब्दों में समर्पण में दो नही हो सकते जब तक मैं का भाव है समर्पण हो ही नही सकता। कोकड़ा जी ने लिखा है –

हरि जपो न चिन्ता घेरेगी, मैं की होली जल जायेगी।
हरि नचा रहा तू नाच रहा, हरिजपो सुरति लग जायेगी।

वैसे तो ईश्वर का निर्गुण रूप ही सर्वाधिक प्रगट हुआ है। तथापि ईश्वर के सगुण रूप राम कृष्ण का न केवल नामोल्लेख हुआ है अपितु कवि पर मीरा, कबीर, सूरदास आदि का प्रभाव भी स्पष्ट है जैसे –

रामा राम जपूं दिनराती, निशदिन मेरी अंखियां बहती।
दर्शन को यह प्यासे नयना, कैसे भेजूं तुमको पाती।

अनहद ताने बाने की बात सुन कर तो कबीर दास की याद आ जाती है–

बजता अनहद मैं ना सुनता, किन ताने बानों को बुनता।
खो कर चैन भटकता जग में, हरि की कृपा मिले पथ मिलता।

इसी प्रकार –

जपो मन नाम हरि सुखदाई, पाना क्या खोना इस जग में मेला छूटा जाई। जैसी पंक्तियां तो ऐसा दिखाई देता है मानो स्वयं सूरदास ने ही लिखी हो। लेखक जगवीर सिंह के शब्दो में :– संसार सागर अथाह है, इससे पार जाना लगभग सभी की लालसा होने के उपरान्त भी बहुत कम लोग होते है जो दृश्य विषयों का त्याग करके प्रभु स्मरण द्वारा भक्ति रूपी नौका पर सवार हो कर इससे पार पा लेने में सक्षम हो जाते है। वासनामयी सत्ता का परित्याग, दृश्य वस्तु के प्रति दृष्टि आकर्षण भाव और मन की चंचलता से सदैव सजग हो कर निरन्तर प्रभु स्मरण की अभ्यास समाधि में आकन्ठ डूब जाने के प्रेरणा भाव संजोये है, इनकी पुस्तकें।

प्रकाशक
जगवीर सिंह

समर्पण द्वितीय खण्ड

क्र.	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
1	पी पुकार मन पुकार मन	13
2	अपना अपना जाल बिछाये	13
3	एक ही तो गम नही है	14
4	खोज क्या मैं को मिटा दे	14
5	साथ छोड़ जाये कोई कब	15
6	कितना कर ले कर्ता ना बन	15
7	जो दर्द तुमने दे दिया	16
8	हरि नाम जपो जग प्रीति तजो	16
9	मौत जिन्दगी साथ चली है	17
10	बहती जाती जीवन धारा	17
11	अंखियां बरसी तुम ना आये	18
12	जो हरि चाहे वह ही होता	18
13	हरि चरणों में मन तू पड़ जा	19
14	जंगल का राज यहाँ चलता	20
15	किससे तृप्त हुआ मन बोलो	20
16	हरि जपें तुम को मनायें	21
17	तुम में बनना तुममें मिटना	21
18	लाया एक हवा झोंका	22
19	कौन हो तुम कौन हो तुम	22
20	कौन किसका है यहाँ पर	23
21	ताने बाने क्या बुनता मन	23
22	हरि हरि जप बरस रहे आंसू	24
23	खो जाये कब इस मेले में	25
24	कृपाकरो हरि दीन अबल हम	25
25	आंसू से भरे नयन मेरे	26
26	कथा आज की आज कर चलो	26
27	ज्ञान तेरा ही जगत में	27
28	चंचल मन कैसे समझाऊँ	27
29	ढलती शाम उसी घर जाना	28
30	हरि भजन कर सुख इसी में	28

समर्पण द्वितीय खण्ड

क्र.	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
31	कर्म शुभ हो ज्ञान दे दे	29
32	गीत को गाते रहे हम	29
33	अंखियां रोये जग में उलझे	30
34	हरि नाम जपो कर्ता वह ही	30
35	हरि नाम जपो बीते रैना	31
36	तुम बिन रोये मेरी अंखियां	31
37	पी ले प्याला अमृत बरसे	32
38	आंसू से भीगी है अंखियां	32
39	जीवन दाता बालक तेरे	33
40	तज दे मैं मन तज दे मैं मन	33
41	सारे जग का वह ही स्वामी	34
42	हरि भजन करो मन सुख पाओ	34
43	किस तरह दिल को लगाये	35
44	मन बना रहा किससे चाहत	35
45	जीवन नदिया बहती जाये	36
46	पकड़ हाथ हरि मुझे ले चलो	36
47	मन काहे ना हरि को खोजे	37
48	गाओ हरि नाम प्यारा है	37
49	बहता जीवन यह ही चाहे	38
50	खोज यहाँ क्या पागल मन है	38
51	मन तू ऐसा गीत सुना दे	39
52	तेरी राजी में रहें रजा	39
53	चरण पड़ो हरि के मन पागल	40
54	जप ले हरि जपता ही जा मन	41
55	कब लहर उठे कब लहर गिरे	41
56	बरसे अंखियां छिपो नहीं तुम	42
57	मन ध्यान करो हरि का हरपल	42
58	देखे क्या क्या जग में सुपने	43
59	अपना ना कुछ सब कुछ हरि का	43
60	एक सहारा केवल तेरा,	44

समर्पण द्वितीय खण्ड

क्र.	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
61	जप ले करूणा का सागर है	44
62	कितना सोचा कितना पाया	45
63	मन मैल धुले जप ले हरि को	45
64	तुमसे मिलना कैसे होई	46
65	ओम जपो मन ओम जपो मन	46
66	आये ना दिन बीते जायें	47
67	नयना बरसे तुमको तरसे	47
68	क्यों उदास किसकी आशा मन	48
69	पागल मन प्रीति बढ़ा ले	48
70	बिछुड़े तुमसे बहते नयना	49
71	जप मन जप मन देख ना सुपन	49
72	कहने का अधिकार न मुझको	50
73	चल चल के गिरे पहुचे न पर	50
74	पागल मन गा हरि के नगमें	51
75	हरि भजो हरि नाम है प्यारा	51
76	इस जीवन को खेल खिलावे	52
77	काहे ना मन हरि को भजता	52
78	जप मन नाम हरि गोविन्दा	53
79	खोजता हूँ मैं स्वयं को	53
80	मन सुमरन करता जा हर पल	54
81	किस किस की बातें करे यहाँ	54
82	ले चल मुझे भुलावा देकर	55
83	तुमको पुकारूँ आ जा अब	55
84	अपना प्यार मुझे तू दे दे	56
85	किसको अपना दर्द दिखाये	56
86	यह शीश झुका तेरे सम्मुख,	57
87	सोचे तेरे क्या होता मन	57
88	हरि ओम जपो हरि ओम जपो	58
89	वह न आवे दुख जिय पावे	58
90	राम राम कह राम बचावे	59

समर्पण द्वितीय खण्ड

क्र.	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
91	एक सहारा और बता क्या	59
92	कहाँ कहाँ ले जायेगा तू	60
93	राम नाम जप बहती अंखियां	60
94	ले जाता नैया केबट बन	61
95	दर्द ले कर चल रहे हम	61
96	टूट न जाये तुमसे धागे	62
97	कौन यहाँ पीते हम गम को	62
98	पार करा दे मुझ को नदिया	63
99	जीना न यहाँ है मुश्किल	63
100	पूछे आंसू कहाँ गयो रे	64
101	मैं ना हूँ तुम मैं ना हूँ तुम	64
102	जप देख उसे जो देख रहा	65
103	पी तुझे पुकारूँ छिप ना	65
104	यहाँ प्रीति किसी से न करनी	66
105	गम अनेको कर भजन हरि	66
106	खोजूं कहाँ मनाऊँ कैसे	67
107	जी रहे हम पी रहे गम	67
108	बैचेनी में कटते ना पल	68
109	किसको मतलब यहाँ किसी से	68
110	कितनी पीड़ भरी गीतों में	69
111	अर्चना तेरी करे हम	70
112	देख हमें लो अंखियां भीगे	70
113	तेरी कृपा मिले जब	71
114	तुम बिन ज्ञान कहाँ से उपजे	71
115	शक्ति मुझे दे बन बन्शी में	72
116	ले चल मुझे भुलावा दे कर	72
117	दो पल की मिल जाये खुशियां	73
118	हरि जप हरि जप ज्ञानी वह ही	73
119	जप ले हरि बरसे है अंखियां	74
120	किसे सुनाये कौन सुनेगा	74

समर्पण द्वितीय खण्ड

क्र.	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
121	तुमको मिलने जियरा भटके	75
122	जपले रे मन प्यारा छैला	75
123	बहते आंसू स्वामी तू ही	76
124	पीड़ मिटे ना तुम ना आये	76
125	दिन आता है दिन जाता है	77
126	छिप गये बीच मझधार छोड़	77
127	मर्जी हरि की सब चले यहाँ	78
128	जैसा राखे हरि की मर्जी	78
129	हरि ध्यान निरन्तर बना रहे	79
130	जायेगे कहाँ न पता हमें	79
131	कितना तड़फे कितना रोये	80
132	हरि अपनी कृपा सदा रखना	80
133	कल का सूरज क्या खबर दे	81
134	ना चले तेरे इशारे	81
135	दिल क्यों न भजन में लगता है	82
136	चल वहाँ ऐसी जगह पर	82
137	ध्यान हरपल हो तुम्हारा	83
138	स्वप्न सी सारी कहानी	83
139	टूटे फूटे शब्द लिखूं मैं	84
140	मेरे मांझी भूल मुझे ना	84
141	कितने है मजबूर यहाँ हम	85
142	सुख दुख का है खेल जगत में	85
143	क्या खोया क्या पाया हमने	86
144	जलता रहता यह दिल	86
145	सुपना सी जिंदगी यह	87
146	कैसी नियति हमारी	87
147	चलने को चला चल न पाया	88
148	जाये लहर कहाँ पर	88
149	बालक हम तुम्हारे	89
150	बीतेगी कैसे रातें	89

समर्पण द्वितीय खण्ड

क्र.	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
151	टूटी वीणा उठा रहा स्वर	90
152	हरि नाम जपूं बरसे अंखियां	90
153	एक बार देखो	91
154	जप ले हरि को बन ना पागल	91
155	कितनी करूँ प्रतीक्षा तेरी	92
156	हरि हरि जप ले सुखदाई मन	92
157	खोज क्या है चाह क्या है	93
158	हरि कृपा हो दीप जलता	93
159	आंसू से भीगी अंखियां है	94
160	ना हम होगे निर्मोही सुन	94
161	प्यार दे यह चाह हमको	95
162	जाने न सुपने हजारों	95
163	प्रीति लगा ले तू हरि से मन	96
164	हर ओम जपो हरि ओम जपो	96
165	नयनों में मचल रहे आंसू	97
166	सब ही बहलाते मन अपना	98
167	मन प्रीति बसे हिय में जप ले	98
168	नहीं कुछ बोल नहीं कुछ तोल	99
169	उफ न करे जो पिये हलाहल	99
170	कुछ तो कह दे ओ निर्मोही	100
171	मन प्रीति लगा ले तू हरि से	100
172	जमाने से शिकायत क्या	101
173	बसो नयन में तुम मेरे	101
174	जमाने से शिकायत क्या	102
175	जीवन में कुछ करना होगा	102
176	जमाने से शिकायत क्या	103
177	हरि ने जो भी रच दीन्हा	103
178	मुझ को ले चल मेरे मांझी	104
179	जमाने से शिकायत क्या	104
180	जमाने से शिकायत क्या	105

समर्पण द्वितीय खण्ड

क्र.	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
181	जहाँ जाये वही मंजिल	105
182	सारा जग ही है उपदेशक	106
183	कहने को ना कुछ सुनने को	107
184	चलना तो खुद को पड़ता है	107
185	दुख के पल होते है भारी	108
186	क्या पाना है क्या खोना है	108
187	ज्ञानी मैं ना तू ना दीखे	109
188	कितनी पीड़ा कितना दुख है	109
189	ना पता जाये कहाँ	110
190	दो पल के इस सुख की खातिर	110
191	ले चल संग में अपने निष्ठुर	111
192	खिलने से पहले झड़ जाये	111
193	करूणा के सागर हो तुम तो	112
194	तुम्हारी बांसुरी मोहन	112
195	चाहे तुम मेरा जीवन लो	113
196	कुछ नहीं पाना कुछ न खोना	113
197	परिवर्तित सुख को जो पकड़े	114
198	हरि को जी ले हरि को पी ले	114
199	कौन हो तुम कौन हो तुम	115
200	हरि तड़फ तड़फ कर रह जाते	115
201	कितना बिखरा दर्द यहाँ है	116
202	टूटी वीणा स्वर न उठाये	116
203	हरि बिन कृपा नहीं कुछ होई	117
204	छोड़ तुमको जाऊँ कहाँ पर	117
205	लहरे हमे डराने आवे	118
206	जो मीत बने बन गये शत्रु	118
207	हरि बिन कृपा चैन ना पावे	119
208	तू बना मदारी नचा रहा	119
209	राम जपूं मैं राम पुकारूँ	120
210	जब तन भी अपना यहाँ नहीं	120

समर्पण द्वितीय खण्ड

क्र.	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
211	मत मान यहाँ दुख क्या माने	121
212	स्वर मिले कर्ता मिटेगा	122
213	नही ठुकरा नही ठुकरा हरि	122
214	क्यो न दर्द पहचाने अपने	123
215	किससे मन आशा रखता है	123
216	गीत सुनेगा कौन हमारे	124
217	कुछ हमने कहा, तुमने कहा,	124
218	देखी दुनिया तुम्हारी	124
219	तुम बिन रोये मेरी अंखियां	125
220	कहने वाले मिले बहुत ही	126
221	कौन हूँ मैं कौन हूँ मैं	126
222	कौन हो कुछ तो कहो तुम	127
223	यह होता सोचे वह होता	127
224	प्रीति न कर निष्ठुर हैं वह तो	128
225	बहती जाये यहाँ लहर पर	128
226	ले चल नाविक धीरे धीरे	129
227	जब जोर नहीं चलता अपना	129
228	हरि प्रेम बढ़े तुझमें मेरा	130
229	सूर्य चन्द्रमा करते फेरी	130
230	मन लगाते फिर रहे सब	131
231	तुही तू है मैं नहीं हूँ	131
232	तुम न कहो पर हम जपते है	132
233	जपते हम तुम तो ना कहते	132
234	धरती भीगे बरसे रिमझिम	133
235	पल पल परिवर्तित यह दुनिया	133
236	लिये जा रहा जब सागर	134
237	आंसू से खोजे तू किसको	134
238	हरि प्यार मिले मैं लिये भूख	135
239	नाम जपो मन यह सुखदाई	135
240	जग से प्रीति हुई न पागल	136
241	मन यह उड़े कहाँ को जावे	136

1

पी पुकार मन पी पुकार मन, सुनले बजती है अनहद धुन।
जग से प्रीति करे क्या पागल, पल पल में होता परिवर्तन।
शाश्वत हरि मन जप ले उसको, ताप हरे दे छैया हमको।
यहाँ भीड़ में सभी अकेले, मिले शान्ति जप ले मन उसको।
कर्ता बन क्यों करे झमेला, दो दिन का यह रैन बसेरा।
मर्जी उसकी आना जाना, जप ले टूटे दुख का घेरा।
हरि हरि जप इस जग का स्वामी, नैया तेरी पार करेगा।
जप अन्तस में दीप जला ले, अंधियारा सब दूर करेगा।
हरि की लीला हरि ही जाने, जपे उसे संग में पहचाने।
लहर बना बहता जाये वह, जीवन उसका सदा बखाने।
हरि हरि जप ले वह सुखदाता, नीर नयन से देखो आता।
झुक जा मन हरि के चरणों में, सुमरन कर नैया ले जाता।

2

अपना अपना जाल बिछाये, बैठे सब कोई फंस जाये।
बिन हरि भजन न मन सुख पाये, इन नयनों में आंसू आये।
मन हरि भजन करो सुख पाओ, मिटते दन्श लगे जो हरपल।
रैन बसेरा दो दिन जीना, तृष्णा में फंस बहता है जल।
गा हरि नगमें नयना बरसे, पिया मिलन को जियरा तरसे।
मिटती जाती सभी कहानी, सुख पा हरि भज अमृत बरसे।
हरि हरि गा पड़ जा चरणों में, सत्य देख क्या तेरे बस में।
मर्जी उसकी जग में आया, खेल मिटाये वह पल भर में।
हरि हरि गा सब उसकी लीला, कर्ता बन क्यों लेता पीड़ा।
बहता जा बन लहर यहाँ तू, सागर करता है सब क्रीड़ा।
नीर बहे हरि को ही दे दे, पी हरि मदिरा सुख से जी ले।
लिये जा रहा तेरी नैया, करो समर्पण हरि को जप ले।

एक सूफी फकीर ने परमात्मा से प्रार्थना की एक रात कि उसके पड़ोस में एक आदमी है जो बाधा डालता है प्रार्थना में, पूजा में, उपद्रवी है, दुष्ट है, शैतान है पूरे का पूरा, इसे सुधार दो, क्योंकि इसके रहते पूजा प्रार्थना ही मुश्किल हो गई है। तो उसने अपने सुपने में आवाज सुनी कि उस आदमी को मैं तीस साल से स्वीकार कर रहा हूँ और तुझे तो अभी तीन महीने ही इस पड़ोस में आये हुए हैं। और जिसे मैंने स्वीकार किया है उसे तुझे अस्वीकार करने की क्या जरूरत है? और अगर वह तेरी पूजा व प्रार्थना में बाधा डालता है तो तू उस पर ध्यान मत दे तेरी पूजा व प्रार्थना कमजोर है। तू स्मरण कर। और जानकर ही मैंने तुझे उस पडोस में भेजा है ताकि तेरी पूजा कितनी गहरी है उसका तुझे पता भी चल जाये।

रोम के एक

3

एक ही तो गम नही है, गम तो अनेको है यहाँ।
ढूंढ रहे है मुकाम वह, ना हो निशां गम का जहाँ।
कर भजन हरि चैन आवे, ना उलझ दिल को जलावे।
जप हरि ज्ञानी वही है, ज्ञान दे जप चैन आवे।
सभी कलुष जायेगा धुल , मन हरि भजो बहते नयन।
उसकी दुनिया वह जाने, सुख यही जपो हरि का बन।
हरि भजो वह ही सहारा, बहती है उसकी धारा।
कौन तू जो जगत आया, जाने न ले हरि सहारा।
जपो हरि को कर्म कर ले, नीर बहें मैं को तज ले।
बन जा कठपुतली हरि की, नाचो तप हरि को जप ले।
प्रीति जग से ना बढ़ा मन, पलटते हैं रंग हरपल।
जप हरि ले जाये नौका, देख ले गिरता नयन जल।

4

खोज क्या मैं को मिटा दे, आज है कल ना पता दे।
एक हवा का झोका तू, कौन तू यह तो बता दे।
छोड़ शिकवा करो विनती, जिन्दगी की शाम ढलती।
कुछ न तेरे हाथ में है, जप कृपा हरि साथ रहती।
हरि भजो उपजे यहाँ सुख, बज रही अनहद सदा धुन।
नही सताएँ जग के दुख, जब प्रीति हरि से बढ़े मन।
गिरते नयनों से आँसू, खोजते सुख चैन सारे।
हरि भजन बिन भाग कितना, अन्त में सब कोई हारे।
हरि भजो दे ज्ञान वह ही, जाता ले वह ही किस्ती।
उसकी दुनिया वह कर्ता , जप ले नौका स्वयं बहती।
मिट रही सारी कहानी, कठपुतली उसकी नाचो।
ध्यान डोरी पर सदा हो, दुख हरे हरि नाम सांचो।

एक यात्री आया। रोम के उस चौराहे पर बारह भिखमंगे बैठे हुए थे। सब स्वस्थ मालूम पड़ते थे।शरीर अभी ठीक लगता था।तो यात्री को हुआ कि निश्चित ही अलाल ,आलसीद्ध है, भीख मांगने का धन्धा कर रहे है। तो उसने खड़ा हो कर कहा कि यह जो सोने का सिक्का है वह उसके लिये है तुममें से सबसे ज्यादा अलाल हो। ग्यारह आदमी भाग कर आये और उन्होने कहा कि मैं सबसे ज्यादा अलाल हूँ। उसने कहा कि ठहरो, जो आदमी पीछे लेटा हुआ है यह रूपया उसके लिये है। पर उन्होने कहा कि हम दावा कर रहे है, और आपने कहा है कि जो सबसे ज्यादा अलाल होऋ मैं कहता हूँ कि मैं सबसे ज्यादा अलाल हूँ , और सि(कर सकता हूँ।

5

साथ छोड़ जाये कोई कब, मोह करो ना मन हरि को जप।
नाच रहे कठपुतली उसकी, ध्यान डोर पर कर हरि को जप।
लिये जा रही हरि की धारा, न अपना जोर बहे जल खारा।
हरि के आगे करो समर्पण, अन्तिम पल तक वही सहारा।
हरि भज ले प्यारा है छलिया, छलक रही देखो यह अंखियां।
हरि भज लो मन चैना आवे, पी ले अमृत वह है रसिया।
जग के दन्श सतावे नाहीं, जपो हरि यह बीते उमरिया।
खिल जाती है दिल की कलियाँ, जो भी पड़ता हरि के पैयां।
जपले हरि हरि उसकी लीला, मैं को तज हर लेगा पीड़ा।
नयन बसाले मूरति उसकी , देख यहाँ सब उसकी क्रीड़ा।
सागर बहता लहर यहाँ तू, जप अन्तस में छिपा वही तू।
साथ तेरे वह सदा रहा है, जप जप साथ पकड़ले मन तू।

6

कितना कर ले कर्ता ना बन, कर्ता बन क्यों दुख अपनाता।
हरि जो देवे ज्ञान करे तन, सुख हरि चरण गिरे ही मिलता।
समय नचाता हम कठपुतली, सुमरन कर सब दुख मिट जाता।
पल पल रंग बदलती दुनिया, देखो नीर नयन से आता।
हरि हरि जपले गा उसके गुन, वही चलावे उसका जा बन।
उसकी मर्जी जग में आया, मैं छोड़ो यह उसका जीवन
सुपना सब कुछ पलभर खेला, ले जाती उसकी ही धारा।
जाने कुछ ना अमृत पी ले, हरि जप ले मन वही सहारा।
हरि हरि जप बरसे यह अंखियां, अपना कुछ ना मालिक रसिया।
करो समर्पण हरि के आगे, खिल जाती है दिल की कलियां।
नाच यहाँ ले डोर उसी की, कौन यहाँ तू चले उसी की।
ध्यान करो हरि हाथ डोर है, सुख पा सुरति रखो मन हरि की।

उसने कहा कि सि(करने का सवाल ही नही है। दावा ही वह करता है जिसके भीतर सि(नहीं है। वह आदमी सि(अलाल है। उठकर भी नहीं आया है रूपया लेने भी नहीं आया है, कोई दावा भी नहीं किया मैं अलाल हूँ। दावा क्या करना? आश्वस्त है। और जब वह उसे रूपया देने के लिये गया तो उसने इशारा किया कि स्वीसे में रख दो।

बु(की वाणी में अक्सर ऐसे वचन है। बु(से कोई पूछता है कि हम क्या करें? तो बु(नहीं कहते कि क्या करोऋ बु(कहते है मैं तो इतना ही बता देता हूँ ऐसा करने से ऐसा होगा और ऐसा करने से ऐसा होगाऋ मैं यह नहीं कहता कि तुम क्या करो? अगर तुम वासना में हो तो दुख होगाऋ अगर तुम निर्वासना में हो तो सुख

नाम सहारा जग में केवल, जप लो हरि ले जाये नैया।
सुख चाहे हर पल यह मनुआ, ताप हरे जप देता छैया।
अन्तिम पल तक सदा जपो मन, देखो छिनता जाता है तन।
सुख पा नयन बसा ले मूरति, लीन उसी में होना सब मन।

7

जो दर्द तुमने दे दिया, ले कर उसे है फिर रहे।
बहते नयन से नीर जो, ना देखते हो कह रहे।
स्वामी जगत के हम अबल, गिरे नयन से मेरे जल।
चल कर गिरे फिर फिर उठे, प्रभु जांनू सब तेरा बल।
हरि हरि जपे हरि ज्ञान दो , दुख से उबारो थाम लो।
बसो नयन में मेरे तुम, नहीं परीक्षा और लो।
ढलती जाती है संध्या, खोजता हूँ पर न मिलता।
अश्रु को स्वीकार कर लो, मै चरणा तेरे पड़ता।
नाम तेरा ही सहारा, ले चल हरि मैं तो हारा।
सृष्टि के तुम ही रचियता, चाह बन जाऊँ दुलारा।
देखो तपती है गलियां, हरि ज्ञान दो मिले छैयां।
मै लहर सागर तुही है, संग मेरे जानूं सैया।

8

हरि नाम जपो जग प्रीति तजो, मिटता सब शाश्वत नहीं तजो।
वह साथ सदा उसकी लीला, बन लहर यहाँ मन सदा भजो।
जायेगी कहाँ न पता उसे, सागर संग सुख पा सदा भजो।
लहरों का अपना क्या वश है, सागर संग सुख पा सदा भजो।
सुपना दुनिया सुपना रसिया, सुपने में पी ले अमतृ रस।
हरि की लीला हरि ही जाने, जप सुख पा ले कुछ ना है बस।
हरि नयन बसे दुख सभी मिटे, बन लहर बहे सागर में वह।
कुछ ना अपना सब कुछ उसका, मैं मिटा गिरे चरणों में वह।

होगा। मैं नहीं कहता कि तुम निर्वासना करो या वासना करोऋ मैं तो सिर्फ नियम कहता हूँ।

एक सूफी फकीर यात्रा कर रहा था, मक्का जा रहा था। और उसने, उसके मित्रों ने एक महीने का उपवास किया हुआ था। उपवास वे तोड़ेगे मक्का जा कर । वे एक गांव में आये, लेकिन बड़ी मुश्किल हो गई। चार–छह दिन ही हुए थे यात्रा को और गांव के एक आदमी ने, जो उस सूफी का भक्त था, अपनी सब खेती, जमीन, मकान सब बेच दिया था। क्योंकि सूफी आ रहा था, उसके साथ सौ सूफी फकीर आ रहे थे और उसके भक्त ने सब बेचकर पूरे गांव को भोज है दिया। सब फूंक दिया वो उसके पास था। तो गुरू आ रहा था। जब

हरि हरि जप ले नयना झरते, परिवर्तित जग के दुख ना ले।
पतवार सौंप हरि हाथों में, बन लहर यहाँ हरि को जप ले।
जैसा राखे सागर मर्जी, जायेगे कहाँ पर नहीं पता।
हो उसे समर्पित नहीं जुदा, लहरों की होती नहीं खता।

9

मौत जिन्दगी साथ चली है, अंखियां फिर किसलिये बही है।
मगन होय मन हरि लीला में, जाने वह सब जगह वही है।
अपना कौन पराया जग में, पल पल परिवर्तित सब कसमें।
हरि में मन तू ध्यान लगाले, जाता ले ना रोये नगमे।
हरि हरि गा यह सुन्दर सुपना, छोड नही मन हरि को जपना।
दन्श लगे इस जग में हरपल, कौन संभाले भूल न सजना।
सुपना दुनिया रोती काया, उलझ उलझ जग में भरमाया।
नाम जपो हरि सुख पाओ मन, करो समर्पण मिलती छाया।
हरि हरि जप उसकी ही लीला, कौन यहाँ तू करता क्रीड़ा।
दो पल के हुए है मेहमा, जप ले मिट जाती है पीड़ा।
सकल सृष्टि का मालिक वह ही, उपजे ज्ञान करे तन वह ही।
खेल खिलावे जग में आया, ले लायेगा नैया वह ही।
जपता जा जप सुन अनहद धुन, बाज रही लय हो जा तू मन।
उठती गिरती इन लहरो में, कौन यहाँ तू–भ्रम छोड़ो मन।
नचा रहा है नाच यहाँ ले, मैं छोड़ो हरि चरण पकड़ ले।
आंसू से भीगी अंखियां है, पार लगावे नैया जप ले।

10

बहती जाती जीवन धारा, तू सबको पार लगाता है।
आंसू से भीगी यह अंखिया, सुनले जिय भर भर आता है।
मैं दास तुम्हारा हरि सदा, कितने जन्मों से भटक रहा।
कुछ ना जानूं दे दे छैया, तपती राहों में झुलस रहा।

गुरू को पता लगा तो शिष्य बड़ी बैचेनी में पड़े। शिष्यों ने कहा, अब क्या होगा? हम तो उपवासित हैं। गुरू का उपवास हैऋ उपवास टूट सकता नहीं। चाहे जान रहे कि जाये उपवास नहीं टूट सकता। गुरू सुनता रहा वह कुछ बोला नहीं। लेकिन जब पहुँचा तो खाने के लिये बैठ गया। और जब गुरू बैठ गया तो शिष्यों को मजबूरी में बैठना पड़ा। रात अकेले शिष्य और गुरू रह गये तो शिष्यों ने कहा कि यह हमारी समझ के बाहर है। यह तो बड़ी भारी दुर्घटना है कि हमने उपवास किया महीने भर का , और यह छह दिन में ही टूट गया गुरू ने कहा, घबड़ाने की क्या बात है? आज से हम फिर शुरू करते हैऋ एकमहीना चलेगा। लेकिन उस गरीब ने सब

करूणा सागर हरि तुझे कहे, तुम रूठ नहीं मुझ से जाना।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, तुझ कृपा बिना दूभर जीना।
ले याद तुम्हारी नीर बहें, तेरा ही मुझे सहारा है।
कठपुतली मैं तो हूँ तेरी, बहती नयनो से धारा है।
ले कर मैं तेरा नाम बहूँ, संग मेरे धुन यह छायेगी।
मझधार बीच नौका मेरी, ना पता कहाँ ले जायेगी।
हरि सुरति रहे तुझमे हरपल, यादों में तेरी बहें नयन।
सुपना सा सब खोता जाता, हरि चैन मिले तुम बसो नयन।

11

अंखियां बरसी तुम ना आये, कैसे इस दिल को समझायें?
दास तुम्हारा जन्मों का मैं, कृपा करो हरि तुमको पाये।
बसो नयन में प्रीति बढ़े हरि, अज्ञानी हूँ बालक तेरा।
बिन हरि कृपा नहीं चल पाऊँ, तू ही तो साहस है मेरा।
कोई भी दे मुझे भुलावा, पार लगा दे इस नैया को।
बरस रही अंखियां यह मेरी, तुझ बिन बता कहूँ मैं किसको?
नयन बसो मिट जाये सब गम, ताप मिटे शीतल हो यह तन।
बहती जीवन की धारा में, सदा साथ जाने यह जीवन।
अंखियों से तुम दूर न होना, जहाँ ले चलो मन्जिल वह ही।
वसे नयन में छवि प्रभु तेरी, प्यासे प्राणों का जल तू ही।
सांसों में हो गीत तुम्हारा, गिरे उठे लहरें ना हारा।
सभी दिशाएँ करे अर्चना, प्रीति बढे नित दास तुम्हारा।

12

जो हरि चाहे वह ही होता, अपने चाहे क्या कुछ होता।
उड़ता नभ पर पंछी होता, मानुष जन्म लिये क्यों रोता?
लिये मुक्ति की अभिलाषा को, काहे को यह जप तप करता।
जाने अपना जोर नहीं कुछ, चरण हरि काहे नही पड़ता।

कुछ फूंक डालाऋ उससे यह कहना कि हम उपवासित है, उससे अकारण जटिलता पैदा होती, उससे उसे दुख होता। यह कैसे हुआ, इसकी बात ही क्यों उठानी। फायदा ही हुआ हमको एक महीने छह दिन के उपवास का फायदा हुआ। कल से हम फिर उपवास करेंगे, और एक महीना उपवास चलेगा।

लाओत्से का एक भक्त लीहत्जु एक गांव से गुजर रहा था। तो उसने देखा कि राजा के घुड़सवार उसके पीछे दौड़ते चले आ रहे है। वह अपने गधे पर सवार था। घुड़सवारों ने उसे रोका। राजा का बड़ा मन्त्री भी आया था। उसने कहा कि सम्राट की आज्ञा है कि आप चले और सम्राट के प्रधान सलाहकार आप हो जायें। सम्राट की बड़ी उलझने हैं, उन्हें हल करना है। लीहत्जु ने कहा, अगर

अनजान जगत जपो हरि जुगत, नाचे हम हरि की कठपुतली।
प्यासे प्राण पिला दे पानी, नचावे ले हाथ में सुतली।
जप अन्तिम पल तक साथ वही, न पकड़ जगत है साथ कहीं?
सच देख यहाँ पी ले अमृत,जप साथ मिले सब जगह वही।
दो दिन का रैन बसेरा यह, हरि हरि जप ले तृष्णा तज दे।
वह लिये जा रहा नैया को, पतवार सौंप चिन्ता तज दे।
उठती गिरती लहरें हरपल, बरसे अंखिया अपना क्या दम।
हरि भजो चैन आये दिल को, लागेगा साथ मिटेगा गम।

13

हरि चरणों में मन तू पड़ जा, सुख दुख खेल करे सब वह ही।
जपता जा हरि ज्ञानी वह ही, उपजे ज्ञान करे तन वह ही।
देख रहा मन सुख का सुपना, बिन हरि भजन मिले ना चैना।
सत्य देख मन इन नयनों से, साक्षी बन जा छोड़ न जपना।
आती लहर जाये कहाँ पर, नयन झरे ना जाने कुछ पर।
लाने ले जाने वाला हरि, कौन यहाँ तू करे क्यों फिकर।
पल पल जग में दन्श लग रहे, तृष्णा में फंस नयन रो रहें।
बन असहाय फिरें इस जग में, जप ले हरि ना दूर वह रहे।
जप हरि सारी उसकी दुनिया, रूला हँसा कर खेले छलिया।
मझधारे में डोले नैया, जपले पार लगाये नैया।
परिवर्तित यह तो जग सारा, पकड़ा जिसने वह ही हारा।
पकड़ कूल पर हाथ न आये, बहती जाती जीवन धारा।
ध्यान डोर पर रख सुख मिलता, बस तेरे क्या जलती होली।
जपता जा हरि खेल करे वह, बन जा तू उसकी कठपुतली।
नयना बरसे जपता जा हरि, खेला कुछ पल अमृत पी ले।
लिपटे जग में क्या सुख मिलता, खोल नयन को हरि को जपले।

मेरे भीतर का सम्राट मुझे कभी वहाँ लाया तो मैं आ जाऊँगा, और दूसरा कोई उपाय नहीं है। नहीं लाया, नहीं आऊँगा। अब मैं नहीं हूँ। अब वह भीतर वाला ही मुझे चलाता है। सत्य की जो खोज करता है उसके जीवन में एक चरित्र आना शुरू होता है जैसे फूलों में सुगन्ध। उसमें कर्तृत्व खो जाता है वह कुछ करता नहीं, उससे कुछ होता है।

झेन फकीर रिंझाई कहा करता था कि बु(को जब ज्ञान हुआ, उसके बाद उन्होंने कुछ भी नहीं किया। पर कहानी तो साफ है कि चालीस साल तक वह गांव –गांव गये, लोगो को समझाया ज्ञान के लिये जगाया। न मालूम कितनो की प्यास तृप्त की। न मालूम कितनों में सोची प्यास को जगाया और अतृप्त किया। और न

14

जंगल का राज यहाँ चलता, बनता मिटता खेला चलता।
मन पकड़ यहाँ हरि का दामन, बहता जा संग तेरे रहता।
आंसू से भीगी अंखियां है, कर याद उसे वह रसिया है।
तपते दिल को दे शीतलता, जपले हरि उसकी दुनिया है।
अनजान डगर न कोई खबर, पल में परिवर्तन हो जाये।
हरि नाम जपो दे ज्ञान वही, इन नयनों में आंसू आये।
चलता जा जपता जा हरि को, बरसे अमृत उसको पीले।
ले जायेगा वह ही नैया, जाने सब वह उसको जप ले।
हरि हरि जप ले ना गर्व करो, हरि दास बनो हरि सदा भजो।
आये यहाँ जायेगे कहाँ, कितना जाने अज्ञान तजो।
अनजान जगत जपो हरि जुगत, नाचे हम हरि की कठपुतली।
प्यासे प्राण पिला दे पानी, नचावे ले हाथ में सुतली।
जप अन्तिम पलतक साथ वही, नापकड़ जगत है साथ कहीं?
सच देख यहाँ पी ले अमृत, जप साथ मिले सब जगह वही।
हरि को सुमरो सुखदाता मन, ना कर्ता बन उसका जीवन।
हरि नयन बसे दुख सभी मिटे, जो भी न्हाये होता पावन।

15

किससे तृप्त हुआ मन बोलो, हरि को जप लो अमृत पीलो।
सुपना सी सारी यह दुनिया, सुपने में जप सुखसे जी लो।
हरि हरि जप मन मोह करे ना, बनो लहर जाने कुछ भी ना।
नयन लड़ा ले हरि का बनजा, सदा साथ उसबिन कुछ भी ना।
बीते है दिन लगता ना दिल, अंखियां बरस रही हैं रिमझिम।
करूणा का सागर कहलाता , उसे पुकारो मिटते सब गम।
सारे जग का वह ही स्वामी, बहता जा उसकी ही धारा।
मझधारे में नैया डोले, जपले उसका नाम सहारा।

मालूम कितने लोग रूपांतरित हुए। चालीस वर्ष अथक भटकन थी, श्रम था और रिझाई कहता था, बु(ने ज्ञान के बाद कुछ नहीं किया था। लोगो को समझाया ज्ञान के लिये जगाया। न मालूम कितनो की प्यास तृप्त की। न मालूम कितनों में सोची प्यास को जगाया और अतृप्त किया। और न मालूम कितने लोग रूपांतरित हुए। चालीस वर्ष अथक भटकन थी, श्रम था और रिझाई कहता था, बु(ने ज्ञान के बाद कुछ नहीं किया था। तो उसके भक्त उससे पूछते थे कि आप बार –बार ऐसा क्यों कहते है? हमें पता है कि बु(चालीस साल तक अथक श्रम में लगे रहें तो रिझाई कहता था, वह तुम्हे लगता है कि श्रम था, वह बु(की सुगन्ध थी। उन्होने कुछ किया नहीं, उनसे हुआऋ ज्ञान के बाद उनसे

हरि हरि जप हरि कृपा मिलेगी , नैया तेरी पार लगेगी।
अंधियारे में दे प्रकाश वह, जपले दिल में ज्योति जगेगी।
हरि हरि जप सब उसकी लीला, बन जा दास करे वह क्रीड़ा।
करो समर्पण भूल न पल भर, लिये जा रहा मिटती पीड़ा।

16

हरि जपें तुम को मनाये, नयन से है नीर आये।
कुछ न जानूं मैं भटकता, आस तेरे चरण पाये।
कर सके स्वीकार तेरे, प्रभु हर कदम को शक्ति दो।
तेरी दुनिया हम बालक, प्यासा चाहता नीर दो।
कृपा करो औघढ़ दानी, बहता नयनों से पानी।
प्यार तेरा चाहतें हैं, मिट रही सारी कहानी।
तड़फती बिन नीर मछली, न समझ क्या उसकी गलती?
फिर रही अपनी नियति ले, प्यार चाहे करे विनती।
चाहते ना रूठना तुम, दास तेरे हम सदा है।
देख लो रोते नयन को, तू नचाता नाचते है।
तुमको समर्पण हम करें, हरिनाम ले कर ही मिटे।
हरि बसो नयन में मेरे, पथ हो सुगम तुमको रटे।

17

तुम में बनना तुममें मिटना, बीता जाता सारा सुपना।
जब भी हरी कृपा हो तेरी, बन जाये सुन्दर यह सुपना।
तेरा जीवन स्वामी तू ही, अंखियां बरस रही यह रिमझिम।
नहीं खफा तुम मुझसे होना, नाथ अबल मैं ना मुझमे दम।
कैसे तुझे मनायें प्रभु हम, छोड़ नहीं मझधार बीच में।
जनम जनम से दास तुम्हारा, सुमरन तेरा बसो नयन में।
तुम बिन मेरी बगिया सूनी, तड़फे मछली जल बिन पानी।
पिया रटूँ मैं छिपा कहाँ तू, नाच नचावे वह ही होनी।

कुछ हुआ। ज्ञान के पहले उन्होने कुछ कियाऋ ज्ञान के बाद उनसे कुछ हुआ।

एक बार अन्धकार ने परमात्मा को जा कर कहा कि सूरज मेरे पीछे क्यों पड़ा है? आखिर मैंने इसका कुछ बिगाड़ा नहीं। मैं रात भर विश्राम भी नहीं कर पाताऋ इसके भय से ही पीड़ित होता हूँ। सुबह फिर हाजिर। तो परमात्मा ने कहानी है सूरज को बुलाया और पूछा कि तुम अन्धेरे के पीछे क्यो पडे हो? सूरज ने कहा यह अन्धेरा कौन है? इसे मैं जानता ही नहीं। आप उसे मेरे सामने बुला दे ताकि मैं उसे पहचान लूँ और फिर ऐसी भूल न करूँ। वह अब तक नहीं हो सका। क्यों कि अन्धेरे को सूरज के सामने कैसे लाया जाये।

सुरति रहे तू साथ सदा है, कृपा करो हरि अज्ञानी मैं।
सागर तू है लहर नाचती, क्या गुमान कर्ता ना हूँ मैं।
प्रीति बढ़े हरि मिलता है सुख, गया हार मैं हर लो सब दुख।
नाम सहारा बस तेरा है, डुबो रंग अपने पाऊ सुख।

18

लाया एक हवा झोंका, प्यार से इस जग को देखा।
फिर रहे निज ले कहानी, लिपटे उतना यह रूखा।
खोज क्या ले फिर रहे हैं, आ गये अनजान दुनिया।
हरि भजन बिन चैन ना है, बह रही पल पल में अंखियां।
दर्द इस दिल में उफनता, किसको कहें हम दास्ता।
कूल सारे छूटते हैं, कर ना पकड़ने की खता।
बीत जायेगी उमरिया, पकड़ हरि पग वह खिवैया।
चलती उसकी खेल उसका, जपो उसे तेरा सैया।
तम मिटे दीपक जला मन, जप हरि का दास जा बन।
कुछ पलों का खेल सारा, पी अमी मिट जाये क्रन्दन।
बह रही जीवन की धारा, देख क्या जाने किनारा?
बन लहर बह छोड़ चिन्ता, जाये ले जिसका सहारा।

19

कौन हो तुम कौन हो तुम, कुछ कहो तो कौन हो तुम?
जग स्वामी सबके साथी, क्यों छिपे हो कौन हो तुम?
नाचे कठपुतली बन सब, कर रहे लीला अनेकों।
चलती दुख सुख की चक्की, नीर बहे टेरे तुमको।
गंगाजल सा नाम तेरा, बहता अंखियो से पानी।
देख ले नजरें उठा कर, कुछ समय की अब कहानी।
प्यार चाहूँ दास तेरा, निज व्यथा किसको सुनाऊँ?

जीसस ने एक कहानी कही है। एक धनपति ने अपने अंगूर के बगीचे में कुछ लोगों को काम करने के लिये बुलाया। कुछ सुबह आये कुछ को दोपहर खबर मिली, वे दोपहर आये। कुछ को सांझ खबर मिली, वे शाम आये। कुछ तो तब आये जबकि काम बन्द होने को जा रहा था। जैसे जैसे खबर मिली, लोग आते गये। और सांझ को उस धनपति ने सब को बराबर पुरस्कार दिया। लोग बड़े नाराज हो गये। जो सुबह से आये थे, उन्होने कहा यह अन्याय हैऋ हम सुबह से जी तोड़ मेहनत कर रहे हैऋ कुछ लोग दोपहर आये, उनको भी उतनाऋ कुछ साँझ आये उनको भी उतना, कुछ आये ही है, उन्होने कुछ किया ही नहीं, उनको भी उतनाऋ यह कैसा अन्याय है? उस धनपति ने कहा, मैं न्याय से नहीं

शरण में राखो मुरारी, बल तेरा जो चल पाऊँ।
याद में तेरी बहे जल, न रूके बह पाये मन्जिल।
कर सको तो माफ करना, न खता मेरा तू सम्बल।
नीर से करूँ मैं पूजा, पास में कुछ भी नहीं है।
दास को अपना बना लो, विनय बस मेरी यही है।

20

कौन किसका है यहाँ पर, चल रहा संसार सारा।
मन भजन कर हरि खिवैया, बहती आंसू की धारा।
हरि सुमरो हरि की लीला, कौन तू जग करे क्रीड़ा।
जपो हरि का नाम सांचा, वह हरता सीरा पीड़ा।
बहती जीवन की धारा, जाने ने इसका किनारा।
खेल कुछ पल जपो हरि को , वही बन जाता सहारा।
हरि जपो जपते रहो मन, भूल न वह तेरा सम्बल।
अजनबी जग वह सहारा, जान ले मन दुनिया जंगल।
नाचे कठपुतली उसकी, बरसते दिन रात नयना।
पी अमी जप ले उसी को, झुक हरी के चरण पड़ना।
बहे आंसू याद कर हरि, बल उसी का अपना न कुछ।
जाता ले तेरी किस्ती, पीड़ हरे वह ही सब कुछ।

21

ताने बाने क्या बुनता मन, जल मिले बीज जाता है खिल।
उसके बस क्या कोई दे जल, हरि कृपा फूल जाता है खिल।
मन हरि जप उसकी ही लीला, हरि करे यहाँ जग में क्रीड़ा।
जप पार करेगा वह किस्ती, वह दूर करे सारी पीड़ा।
जप नाम सहारा यहाँ पकड़, बहती नयनों से धारा है।
सच जान यहाँ खेवट वह ही, पीड़ा दिल की सब हरता है।
हरि जप हरि जप जपता ही रह, ना कर्ता बन कर्ता वह ही।

देता, मैं दया से देता हूँ। तुमने जितना काम किया है तुम्हें मिल गया, उससे ज्यादा मिल गया। जीसस कहते है परमात्मा भी तुम क्या करते हो उस हिसाब से नहीं देख रहा। तुम आये यही काफी है।

एक चोर एक बैंक में रात प्रविष्ट हुआ साज–सामान ले कर गया था, डायनामाइट ले कर गया था कि तिजोड़ी को तोड़ डालेगा। लेकिन तिजोड़ी के सामने एक छोटी सी तख्ती उसने लगी देखी। बहुत चकित हुआ। तख्ती पर लिखा हुआ थाॠ डोन्ट यूज डाइना माइट ॠ दि सेफ इज नाट लॉक्ड, जस्ट पुश दि बटनॠ डयना माइट का उपयोग मत करो, ताला है नहीं तिजोड़ी पर, सिर्फ बटन दबाओ। वह चकित हुआ कि बड़े अद्‌भुत लोग है। उसने बटन दबाई ।

ल े कि न

विधि के हाथों मजबूर यहाँ, जप पार करे नैया वह ही।
हरि जप प्यारा यह नाम सदा, कुछ पल खेले फिर नहीं यहाँ।
पीले अमृत जप ले उसको, देता सुवास खिल फूल यहाँ।
जप ले हरि हरि बन लहर बहो, संग सागर सुमरन सदा रखो।
हरि जप प्यारा यह नाम सदा, कुछ पल खेले फिर नहीं यहाँ।
पीले अमृत जप ले उसको, देता सुवास खिल फूल यहाँ।
जप ले हरि हरि बन लहर बहो, संग सागर सुमरन सदा रखो।
ले जाये मर्जी है उसकी, पलभर दूरी ना कभी रखो।

22

हरि हरि जप बरस रहे आंसू, खोई मन्जिल कैसे पाऊँ।
पतवार सौंप हरि हाथों में, मैं मिटा जपो हरि सुखदाऊ।
मन करो भजन हरि खेवट है, नैया को पार लगाता है।
उठती गिरती इन लहरों में, देता हरिनाम सहारा है।
उसकी लीला हम खेल रहे, चाहत अपनी क्या नीर बहे।
हरिभजन करो मन सुख पाओ, रसिया वह हरपल अमी बहे।
हरि जप ले उसकी है दुनिया, मर्जी कब ले जाये छलिया।
हरि हाथ डोर हम नाच रहे, हरि करो समर्पण वह रसिया।
जी सुख दुख में ना शान्त हुए, जप मन को आयेगा चैना।
टूटे का वही सहारा है, सुख पा ले जप दुनिया सुपना।
हरि हरि जप बह हरि धारा में, ले जायेगा बह यादों में।
हरि हाथ डोर तू कठपुतली, मन करो समर्पण हरि पग में।
देता प्रकाश अंधियारे में, जप ले उस बिन ना ठौर कहीं।
हरि हरि जप मन यह कर ले तप, आनी जानी इस दुनिया में।
दो दिन का रैन बसेरा यह, जप सुख पा ले इस सुपने में।

बटन दबाते ही एक बहुत बड़ा रेत का थैला उसके ऊपर गिरा सारे बैंक में बल्ब जल गये। घंटिया बजने लगीं पुलिस भीतर आ गई। स्टेचर पर उसे बाहर ले जाया गया। जब वह होश में आया और एम्बुलेसं में रखा जा रहा था तब उसके मुंह से वे शब्द सुने गयेॠ माय फेथ इन ह्युमिनिटी हैज बीन शेकन वेरी डीपॠ मेरा भरोसा मनुष्यता में बुरी तरह जर्जरित हो गया है।

एक सूफी कथा है चार यात्री, जो एक दूसरे की भाषा से अपरिचित थे, एक रात एक धर्मशाला में रूके। वही उन की पहचान हुई। काम चलाऊ, कुछ एक दूसरे की भाषा समझ लेते थे। सुबह भोजन का विचार हुआ तो सभी ने अपने पैसे इकट्ठे किये। अन्तिम पड़ाव था यात्रा का और

23

खो जाये कब इस मेले में, गाता ही जा मन हरि के गुन।
उस बिन ना पार लगे नैया, जप देखो तेरे बहे नयन।
अपना क्या सब कुछ उसका है, उसकी कठपुतली नाचे हम।
जो ज्ञान उपजता हिय में है, कर रहा वही तन कर ना गम।
जलती होली दिन रात यहाँ, गिर चरण हरि वह सहारा है।
बह रही हवा ले जायेगी, दीखे ना दूर किनारा है।
जपते ही रहो हरि हरि सदा, जब तक तन देवे साथ यहाँ।
सब बदले रंग यहाँ हरपल, शाश्वत वह तज सब मोह यहाँ।
कितनी ही चाहत बना यहाँ, मिट रही कहानी सभी यहाँ।
हरि भजन करो चैना आये, सुख पाये जिय पी अमी यहाँ।
पी तेरा उसको सदा रटो, स्वामी तेरा मन सदा भजो।
गा गीत उसी के लय हो जा, सागर में बन कर लहर भजो।

24

कृपा करो हरि दीन अबल हम, दे दो अपना नाथ सहारा।
जनम जनम की पीड़ मिटा दो, मिट जाये तम होय सुबेरा।
शरण तुम्हारी प्यार हमें दो, बहे आंसू देख इन्हे लो।
जीवन की बहती धारा में, ना बिछड़ो विनती हरि सुन लो।
मझधारे में डोले नैया, तुम बिन नहीं कोई खिवैया।
बरसे अंखियां राह निहारें, ताप हरो दो शीतल छैया।
बरस रही यह अंखियां झरझर, दीनबन्धु करूणा के सागर।
तुम बिन कहूँ किसे बन्शीधर, अज्ञानी मैं रीती गागर।
फेर नजर ना प्यार हमें दे, बहें आंसू देख इन्हे ले।
अज्ञानी पर बालक तेरे, बढ़ा हाथ को थाम हमें ले।
जपते तुझे बीते उमरिया, बरसे नयन देख सांवरिया।
जग की पथरीली राहों पर, कष्ट हरो पड़ते हम पैयां।

सभी के पास कम पैसे बचे थे। और चारों इकट्ठा पूल कर लें इकट्ठा करले धन को, तो ही यात्रा चल सकती थी। और फिर उन चारों ने विचार प्रगट किया कि वे क्या खरीदना चाहते है। उनमें से एक यूनानी था उसने कुछ कहा। उनमें एक अरबी था उसने कुछ कहाऋ उनमें एक हिन्दुस्तानी था, उसने कुछ कहा। उनमें एक ईरानी था उसने कुछ और कहा। और चारों झगड़ने लगे।क्योंकि बस उतने पैसे से चार चीजें नहीं खरीदी जा सकती थी। और तब उस सराय का मालिक उनके पास आया और हँसने लगा। उसने कहा कि तुम मुझे पैसे दोऋ चारों की चीजें खरीदी जा सकेगी। और जब वह खरीद कर लाया तो वे अंगूर थें और वे चारों हँसने लगे और नाचने लगे क्योंकि चारों

25

आंसू से भरे नयन मेरे , हरि कृपा करो तुमको टेरे।
इस जग का तुही रचियता है, बालक अज्ञानी पर तेरे।
डगमग करती मेरी नैया, पतवार थाम खेवट मेरे।
अनजान राह जानूं ना कुछ, देखो अंखियां आंसू गेरे।
करूणा सागर तुम कहलाते, पीड़ा भक्तो की तुम हरते।
देदे तू मुझे भक्ति का वर, हरि चरण तुम्हारे हम पड़ते।
जीते ले ले कर हम सुपने, तृष्णा में फंस रोती काया।
हरि नाम तुम्हारा सुन्दर है, आंखों में भरा समुन्दर है।
बन लहर मिटू इसके अन्दर, स्वामी तेरे हम सेवक है।
स्वीकारे हरि तेरी मर्जी, ना दूर कभी नयनों से हो।
बल तेरा ना मुझमे है कुछ, हम खुश हो जिसमें तू खुश हो।

26

कथा आज की आज कर चलो, कल की होनी अलग कहानी।
ऐसा कृत्य करो ना कोई, कल आये आँखों में पानी।
हरि भज हरि भज हरि भजता जा, दुनिया रैन बसेरा सुपना।
पकड़ न कोई कूल यहाँ पर, नदिया बहती है बस बहना।
हरि भज हरि भज शाश्वत वह है, जग से प्रीति करे दुख होई।
बदले रंग यहाँ पर हरपल, पकड़ करे तो अंखियां रोई।
हरि भज हरि भज चैन मिलेगा, दुख सारे वह दूर करेगा।
कर्ता ना तू कर्ता वह ही, नैया तेरी लिये चलेगा।
आया तुझ को पूछा किसने, जायेगा ना जोर चलेगा।
कठपुतली बन नाच उसी की, सुमर उसे हिय कमल खिलेगा।
कर स्वीकार उसी की मर्जी, करो समर्पण हरि के आगे।
जो भी रचना रच दी हरि ने, जपो उसे ना बनो अभागे।
ज्ञान ध्यान सबका का वह मालिक, चल ले वही चलाये जब तक।

की चीजे आ गई थी। वे चारों अंगूर के लिये अपनी–अपनी भाषा का शब्द उपयोग कर रहे थे। धर्म तो एक है। भाषाये बहुत हैं।

एक आदमी घर लौटा सांझ, दिन भर का थका मांदा। पत्नी है घर में। छोटी बेटी है तीन साल की। द्वार पर ही उसने बेटी को बैठे देखा तो उसने अपनी बेटी को कहा कि क्या विचार है, डैडी के लिये एक चुम्बन देना है या नहीं? उसकी लड़की चुपचाप बैठी रही। दुबारा उसने पूछा तो उस लड़की ने कहा कि नहीं।तो उस आदमी ने कहा कि मुझे शर्म आती हैऋ तुम्हारे लिये ही मैं दिन भर पैसा कमाता हूँ और घर आता हूँ तो मेरी छोटी बेटी मुझे चुम्बन देने के लिये इन्कार करती है। चलो, उठो, कम ओन

जनम मरण की छूटे पीड़ा, जो भी बन जाता हरि सेवक।
जप ले नाम सहारा जग में, जो भी जपे कभी ना हारा।
लहर मिटे सागर हो जाती, सबमें बैठा सृजन हारा।

27

ज्ञान तेरा ही जगत में, फैला अंधेरा नाश कर।
अंखियां अनेको रो रही, दे प्यार उनको माफ कर।
बाग तेरा फूल खिलते, जाने ना तुमसे पलते।
जगत का तू ही रचियता, देखले यह नयन बहते।
स्वप्न सा सब खेल सारा, हरि जपे बीते उमरिया।
स्वप्न में सुख पाये जिया, शरणा तेरी दो छैया।
तृष्णा में फंस भटकते, चैन ना पर ठौर तू है।
नयनों में मेरे बस जा, जिन्दगी की दौड़ तू है।
कर सको तो माफ करना, न गलत मैं पड़ता पैया।
आंसू से भीगी अंखियां, प्यार दे बीते उमरिया।
कोहरा छाया घनेरा, नाम तेरा ही सहारा।
ना कभी तुम रूठ जाना, करो कृपा पाऊँ द्वारा।

28

चंचल मन कैसे समझाऊँ, दिल जख्मी किसको दिखलाऊँ?
छिप गया बीच मझधार छोड़, पीड़ा को मैं ना पी पाऊँ।
आन मिलो सजना तुम मुझ से, जन्मों से तुझ से नाता है।
नाचूं कठपुतली मैं तेरी, ना रूठ सहारा मेरा है।
मुश्किल इन जग की राहो पर, आंसू मेरे झर झर बरसे।
तुम बिन बोलो मैं कहूँ किसे, कुछ तो कह जो जियरा हरषे।
गा गीत विरह कटती रैना, दीखे ना दिल यह ना लगता।
कैसा तूने यह ज्ञान दिया, जियरा तड़फे आंसू आता।
निर्मोहि न बन दे प्यार मुझे, ढलती संध्या अब थाम मुझे।

एण्ड गिव मी किस , व्हे अर इज दि किस? कहाँ है तेरा चुम्बन? आ कर उस लड़की ने उस आदमी की आखों में गौर से देखा और कहा, व्हे अर इज दि मनी? धन कहाँ है, जो दिन भर हमारे लिये कमाया?

बु(एक गांव में आयें उस गांव के सम्राट ने, जैसे ही खबर मिली, अपने बजीरों को बुलाया और कहा, तैयारी करो स्वागत की , और मैं राज्य की सीमा पर बु(का स्वागत करूँगा। उसके वजीर ने कहा, आप खुद ही स्वागत करने जायेंगे? बु(तो एक भिखारी है। एक सम्राट उनके स्वागत को जाये? सम्राट के मन में भी तो यह बात चलती थी कि एक सम्राट भिखारी का स्वागत करने जाये। लेकिन सम्राट डरता था, क्योकि और सम्राटो ने

इस पाप पुण्य की नगरी में, तपती राहें दे छांव मुझे।
आंसू से पग तेरे धोऊँ, सिर चरणों में रख मैं रोऊँ।
बालक तेरा अज्ञानी मैं, विनती तुमको हरि मैं पाऊँ।

29

ढलती शाम उसी घर जाना, गा ले मन तू हरी तराना।
जायेगे न कोई ठिकाना, बसे नयन सुख उपजे जाना।
हरि हरि गा भीगी यह अंखियां, दुख हरता पड़ जा मन पैया।
लहरों का अपना क्या बोलो, नचा रहा सागर वह सैंया।
प्यासे प्राण पिला जल इसको, ताप हरे छैयां दे तन को।
जिसके नयनों में हरि बसते, सकल सि(पूजे तब पग को।
हरि यादों में गंगा बहती, शिकवा नहीं किसी से करती।
दास बने बीते यह जीवन, बसो नयन यह विनती होती।
जपले मन हरि नाम सहारा, लिये जा रही हरि की धारा।
खेल खिलावे सुख दुख के वह, जप बहती नयनों से धारा।
जायेगा ले सागर मर्जी, लहर नहीं सागर की चलती।
कुछ पल खेले लय हो जाये, पकड़े सागर ना वह मिटती।

30

हरि भजन कर सुख इसी में, सौंप दे पतवार उसको।
जाने क्या जग में आया, पथ मिले जप हरे तम को।
ढलती फिरती छाया जग, दुख अनेको कर न गिनती।
जपो हरि मन चैन आये, जप वह ले जाये किस्ती।
बरसे अमृत बन न कर्ता, झुको हरि के चरण पड़ना।
नयन बरसे मन भजन कर, जप सुख से बीते सुपना।
जप ले हरि मन संग सांचा, जपो उसको यह है जंगल।
जोड़ो यह पतली डोरी, टूटे होवेगा न मंगल।
जपो यहाँ पर मांग भक्ति, ना अपना उस का जीवन।

स्वागत किया था आसपास। तो जब बजीर ने यह कहा तो सम्राट ने कहा कि बात तो तुम्हारी ठीक है कि एक भिखारी के स्वागत को सम्राट के जाने का क्या प्रयोजन? वजीर हंसने लगा और उसने कहा– मेरा इस्तीफा स्वीकार कर लें, क्योंकि जो सम्राट बु(जैसे भिखारी के स्वागत को नहीं जाता वह सम्राट होने योग्य ही नहीं है।

एक आयरिश की कथा हैं। एक बूढ़ी वृ(बहुत चिन्तित, पीड़ित और दुखी थी। मौत करीब आती थी। बिस्तर पर लग गई थीऋ बिस्तर से उठना भी मुश्किल था। और आखिरी चिन्ता जो मन को बहुत काले बादल की तरह घेरे थी, वह यह थी कि उसे लगता था कि उसका सम्बन्ध ईश्वर से टूट गया है। कोई सम्बन्ध

बरसे अमृत पी उसे ले, पाये सुख उसका यह तन।
तजो मैं को भजो हरि को, ज्ञान दे वह ले चलेगा।
नाचता सागर लहर तू, ताप सारे वह हरेगा।

31

कर्म शुभ हो ज्ञान दे दे, तम तुही सबका मिटाये।
तेरे बालक हम सब है, प्यार मिले खिल ही जाये।
बल तेरा कुछ न मुझ में, नाचता जैसे नचाये।
जग की अनजानी गलियां, देखो आंसू है आये।
दीनबन्धु करूणा सागर, मेरी रीति भरो गागर।
दास तेरा मैं सदा से, नयन बरसे देख झर झर।
मैं अबल तुम ही सबल हो, तुम छिपे किस मोड़ पर हो?
दृष्टि से करना न ओझल, सुन ले विनती ब्रह्म तुम हो।
तू चलाता है हवाएँ, नाचूं पत्ता मैं बन कर।
तुम बिना किसको कहूँ मैं, गिर रहे हैं नीर झर झर।
तुम अन्तर्यामी जग के, प्यार बिन कुछ भी नहीं है।
प्यार में डूबूं तुम्हारे, चाह बस अन्तिम यही है।

32

गीत को गाते रहे हम, प्यार तेरा हम चहे।
बीत जायेगी उमरिया, स्वप्न पर नयना बहे।
पड़ता चरणों में तेरे, मैं अबल सम्भालना।
बल तेरा मुझ मे ना कुछ, लाज मेरी राखना।
चोंच दे चुग्गा तुही दे, सभी तेरा खेल है।
बहते नयनों से आंसू, प्यार चाहे नीर है।
सुख दुखों का खेल दुनिया, नचाता हमें छलिया।
समय के हम तो खिलौने, आती भर भर अंखियां।
जायेगा केवट वह बन, सौप पतवार उसको।

उसे मालूम नहीं होता था। कोई भाव ईश्वर के प्रति बहता नहीं मालूम होता था। मौत करीब आती थी और ईश्वर से कोई लगाव, कोई सेतु बीच में नहीं रह गया था। जीवन ने सब सेतु गिरा दिये है। एक मित्र उसे देखने के लिये आया तो उसने कहा तू चिन्ता मत कर, ईश्वर का भाव आखिरी क्षण तक भी पुनः पाया जा सकता है। क्योंकि वस्तुतः हम कभी उससे टूटते नहीं हैं, ख्याल ही होता है कि टूट गया। क्योंकि टूट जायें तो हम मिट ही जाये। तो तू चिन्ता मत कर, तू आंख बन्द कर और प्रार्थना कर और उससे ही कह कि मैं तो असमर्थ हूँ मेरे हाथ छोटे हैं, तुझ तक कैसे फैलाऊँऋ लेकिन तेरे हाथ तो अनन्त है ऋ तेरा हाथ तो विराट हैऋ तू

हरि जपो हरि का जहाँ मन, सुख मिले जप उसी को।
हरि जपो दे ज्ञान वह ही, कर्ता सबका वह ही।
करो समर्पण हरि आगे, न लहर सागर सदा ही।

33

अंखियां रोये जग में उलझे, हरि बिन जियरा पायेना सुख।
स्वारथ की सारी यह दुनिया, चैना आये जप मिटते दुख।
जपले मन हरि सांचा है धन, स्वप्निल है यह सारी दुनिया।
पल पल में सब रंग बदलते, जप ले हरि शाश्वत वह छलिया।
अब यहाँ कल जाय कहाँ पर, लेखा राखे किस किस का तू।
करो समर्पण हरि के आगे, खेल खिलावे कर्ता ना तू।
हरि हरि जप हरि नयन बसाले, छोड़ यहाँ मैं हरि को भजले।
उसकी दुनिया वह ही जाने, जपता जा हरि चरण पकड़ ले।
कितने फूल खिले धरती पर, उसका पता किसी को है क्या?
जप हरि हिय को अमी पिला दे, उसकी दुनिया तू जाने क्या?
मिटती है सब यहाँ कहानी, आता याद बहे जब पानी।
सदा जपो खिल जाये बगिया, हरि हरि जप प्यासे का पानी।

34

हरि नाम जपो कर्ता वह ही, जप पाये पथ कर नहीं फिकर।
मन वही समाया है तुझमें, फिर भी खोजे खो गई डगर।
हरि हरि जप एक सहारा वह, अंधियारे में भी तारा वह।
उस बिन रोती रहती अंखियां, तेरा खेवट ले जाये वह।
दुख क्या करना रचना रच दी, हरि नाम जपो अमृत को पी।
दो दिन का रैन बसेरा यह, जप ले हरि को वह तेरा पी।
हरि हरि जप ले हरि की लीला, जप ले मिट जाती सब पीड़ा।
कठपुतली उसकी नाच रहे, आंखे खोलो देखो क्रीड़ा।
सागर लहरें सागर ढूंढे, अंसुओं से नयनों को सीचें।

अपने हाथ को फैला मेरे सिर पर रख।

वृ(ने आँख बन्द कर लीऋ खुशी के आंसू उसके आंख से बहने लगे। चिन्ता एक नई पुलक में बदल गई और उसने प्रार्थना की कि हे परमात्मा, मेरे हाथ छोटे है, मैं तुझे खोजूँगी तो भी तुझे नहीं खोज पातीऋ तू ही अपने हाथ को बढ़ा। और तब वृ(ने अनुभव किया, उसके सिर पर कोई हाथ आ गया है। आनन्द के आंसू बहने लगे। फिर उसने आंख खोली और थोड़ी सी चिन्ता चेहरे पर आई। और उसने मित्र से कहा, बात तो आनन्दपूर्ण रही, लेकिन एक शक मुझे पैदा होता है। वह जो हाथ मेरे सिर पर आया, बिल्कुल तुम्हारे हाथ जैसा लगता था। उस मित्र ने कहा, निश्चित ही, कोई

ना ताप मिटे हरि जपे बिना, सुख दुख में सब वह ही खीचे।
हरि हरि जप अन्तस में वह ही, हरि प्रीति बढ़ा मन सुख वह ही।
परिवर्तित लहरों में ना फंस, जप संग सदा जानों वह ही।

35

हरि नाम जपो बीते रैना, बरसे अमृत फिर ना कहना।
अनजाने पथ का साथी वह, सुख पावे जियरा हरि जपना।
दे चोंच वही चुग्गा भी दे, मर्जी उसकी जब तक जी ले।
कर्ता भर्ता हर्ता वह ही, क्या अपने बस जप सुख पा ले।
हरि जप ले देवे ज्ञान वही, उसकी दुनिया सब जगह वही।
नयनों में जिसके बसते हरि, ना घबरावे ले चले कहीं।
नैया खुद ही बहती जाये, पतवार बिना अचरज ही क्या?
मन करो समर्पण हरि आगे , सुख से बीते सुपना तू क्या?
बन लहर नाच ले सागर में, ले जाये वह उसकी मर्जी।
अन्तस में तेरे वही छिपा, जप ले स्वीकारो हरि मर्जी।
सबका ही भाग्यविधाता वह, जप उसबिन रोवे यह अंखियां।
हरि हरि जप ले प्यारा छलिया, वह ताप हरे देगा छैया।

36

तुम बिन रोये मेरी अंखियां, छिप न मुझ से श्याम।
नयनों में मेरे बस जाओ, ढलती जाती शाम।
जनम जनम का दास तुम्हारा, व्याकुल मेरे प्रान।
सुनूँ बाँसुरी नाचे जियरा, सुना मुझे अब तान।
जीवन दाता बालक तेरा, चाहूँ तेरा प्यार।
मैं हूँ अबल ज्ञान कुछ नाहीं, करो मोहि स्वीकार।
ठोकर खा खा गिरूँ यहाँ पर, बहे नयन से धार।
अन्तर्यामी रूठ न मुझसे, नहीं छोड़ मझधार।
हरि हरि गाऊँ तुझे मनाऊँ, नयन बसों गोपाल।
प्रीति तुम्हारी बढ़ती जाये, वर दे दो नंदलाल।

परमात्मा आकाश से इतना लम्बा हाथ करके तेरे सिर पर रखेगा ऐसा थोड़े ही हैऋ जो हाथ पास में मिल गया, उसका ही उसने उपयोग कर लिया। सभी हाथ उसके है।

बु(एक गांव में कई बार आये। और एक आदमी उन्हे सुनना चाहता था, लेकिन कभी न कभी कोई बहाना खोज लेता। कभी उसकी पत्नी बीमार थी, कभी लड़के को सर्दी–जुकाम, कभी दुकान पर ज्यादा ग्राहक, कभी वह खुद ही अस्वस्थ, कभी थका मांदा, कभी कुछ, कभी कुछ। बु(कई बार आये गयेऋ तीस साल उसके गांव से कई बार गुजरे। और हमेशा उसने कोई बहाना खोज लिया। फिर जब बु(की मृत्यु का क्षण आया और खबर आई कि बु(आज जीवन छोड़ते

37

पी ले प्याला अमृत बरसे, सारे गम फिर मिटजाते है।
दुख के बादल छंट जाते है, नयनों में जब हरि छाते है।
फैला जंगल जप हो मंगल, उसकी मर्जी नाचे जग में।
कर्ता वह ही पड़ो चरण में, ना भूलो ना रोये नगमें।
जीवन उसका जीवन दाता, तज दे मैं यह करता दंगा।
हरि हरि जप यह पावन गंगा, न्हाये मन होता है चंगा।
छिपा बीज में वृक्ष यहाँ है, जल दे कोई तब ही बढ़ता।
अपने अपने लिये रास्ते, सारा जग ऐसे ही चलता।
जप ले हरि हरि दुख हरेगा, अंधियारे में दीप जलेगा।
ज्ञानी वह ही करले पूजा, नैया तेरी लिये चलेगा।
लेखा क्या रखना है जग में, सारा जीवन इक सुपना है।
जप ले हरि मन चैन मिलेगा, नयनों से बहती धारा है।

38

आंसू से भीगी है अंखियां, चाह प्यार पाऊँ मैं सैयां।
नयनन में मेरे बस जाओ, मिटे शिकायत ले चल नैया।
निर्बल के तुम ही तो साथी, बहे नयन भेजे हम पाती।
दास तुम्हारे अज्ञानी हम, सर्जक तुम ही अंखियां रोती।
जपले हरि मन चैन मिलेगा, सफर सहज में सभी कटेगा।
नाच नचावे बस क्या अपने, जप दुख सारे वही हरेगा।
आनी जानी इस दुनिया में, बरस रही अंखिया यह रिमझिम।
पकड़ न कर हो मोह विसर्जित, हरि चरणों में प्रीतिबढ़ा ले।
ढलती संध्या बरसे अमृत, पी इसको शाश्वत को जी ले।
जप मन जप मन जीवन दाता, सुरमन में सुख कभी न तजना।
लिये जा रहा वह ही केवट, झुका शीश मन जपते रहना।

है, तब वह भागा हुआ पहुँचा। उसने लोगो से कहा, मुझे मिलने दो। तो लोगों ने कहा, तीस साल से तेरे गांव से गुजरते थे, तू तो कभी दिखाई नहीं पड़ा। उसने कहा, मुझे फुर्सत नहीं मिली।

डेलीकार्नेगी ने अपने संस्मरणों में कहीं लिखा है कि वह एक विज्ञापन कम्पनी का काम करता था और एक धनपति के पास गया, और धनपति से उसने कहा कि आप कभी अपने सामान का, जो आप बेचते है और बनाते है, उसका कोई विज्ञापन नहीं करते है। आप बहुत पुराने ढंग से चल रहे हैं। दुनिया बदल गई है। अब बिना विज्ञापन के कोई खबर नहीं हो सकती है। उस धनपति ने कहा कि हमारा काम सौ वर्ष पुराना है, और हमें किसी विज्ञापन

39

जीवन दाता बालक तेरे, बहे नीर इनको लख लेना।
सुमरन तेरा कभी न छूटे, अपनी कृपा बनाये रखना।
हरि हरि जपें मनाये तुमको, चले जा रहे होश न हमको।
मझधारे में नैया डोले, पार करा दे नदिया मुझको।
सारे जग का तुही रचैया, झर झर मेरे नयन बरसते।
पीता रहूँ नाम का प्याला, मिले प्यार हरि विनती करते।
नीर बह रहा नयनो से है, पागल कुछ भी ना जानूँ हूँ।
मिलती रहे कृपा हरि तेरी, आस लिये यह मैं जीता हूँ।
आऊँ कैसे द्वार तुम्हारे, काँटे विछे हजार यहाँ है।
तम फैला कर दे प्रकाश तू, चाहत यही लिये जीते है।
नजर उठा कर जरा देख ले, कैसे जीये बिन हम तेरे।
सुपना मेरा मुँह ना फेरे, बस जाओ नयनों में मेरे।

40

तज दे मैं मनतज दे मैं मन, यह कुछ ना धन जपले हरि मन।
हरि की लीला हम कठपुतली, अंखियां बरसे जैसे सावन।
हरि जप ले मन को चैन मिले, जप संग तेरे वह सदा चले।
मन खुली आंख से देख जरा, विश्वास करो हिय कमल खिले।
आगे पीछे कुछ ना जाने, जप ले प्रकाश का दिया जले।
हरि हरि गा ले विश्वास जगे, नौका को तेरी लिये चले।
सब बीत रहा सुपना सा बन, आगे क्या हो जाने मोहन।
सब चुग्गा चोंच उसी की है, जप दास उसी का बन जा मन।
तज मैं सुख पावेगा जिवड़ा, धर ध्यान नचावे है छलिया।
जब डोर उसी के हाथों में, विनती कर ले देगा छैया।
हरि हरि जप वही सहारा है, न उस बिन कोई किनारा है।
बन लहर जपो सागर समर्थ, सारा गम फिर मिट जाता है।

की कोई जरूरत नहीं है। लोग जानते हैं और श्रेष्ठ चीज को पहचानते हैं, इसलिये क्षमा करें, हमारी कोई उत्सुकता विज्ञापन में नहीं है। तभी सांझ हो गयी और पहाड़ी के ऊपर बने चर्च की घंटिया बजने लगी। तो डेल कार्नेगी ने कहा उस धनपति से कि आप यह चर्च की घंटियां सुनते है? यह चर्च कितना पुराना है, उस धनपति ने कहा, कम से कम पांच सौ वर्ष पुराना है। तो डेली कर्निगी ने कहा, अभी तक यह घंटियां बजाता हैऋ तभी लोगों का पता चलता है कि चर्च है। यह घन्टियां बजाना बन्द कर दे, लोग भूल जायेंगे।

रिझाई जापान में एक फकीर हुआ। उसका गुरू मर गया। और जब गुरू मर गया तो रिंझाई की इतनी ख्याति थी जितनी गुरू की भी नही

41

सारे जग का वह ही स्वामी, प्रीति बढ़ा ले गा ले नगमें।
घट घट बसता अन्तर्यामी, कर्ता वह सब उसके बस में।
दे पतवार उसी के हाथों, डोले नैया मझधारे में।
बहते नयन जपो मन हरि को, कर विश्वास मिले सुख जिय में।
जप ले हरि मन जपता ही जा, तृष्णा का फैला है जंगल।
हरि हरि जप ले प्यारा वह ही, बटती मंदिरा इसको पीले।
सफल होय यह सारा जीवन, दन्श मिटे मन हरि को जपले।
सौंप स्वयं को हरि हाथों में, चलता जा मन वही चलाये।
कर स्वीकार उसे मन हरपल, ना दुख से फिर आंसू आये।
चले न अपनी खेल करे वह, नचा रहा लहरों को सागर।
समझे लहरें हिय में सागर, सहज बहे हो जाती सागर।

42

हरि भजन करो मन सुख पाओ, मैं छोड़ दास हरि बन जाओ।
वह नचा रहा हम नाच रहे, कर्ता बन कर दुख ना पाओ।
खिल जाये जीवन ज्ञान वही, ना पेट भर सके ज्ञान नहीं।
सुमरन बिन मिलता चैन नहीं, मन भटके देवे दिशा सही।
बन लहर यहाँ सागर वह ही, लहरे कितनी उठती गिरती।
कितना वजूद खेले कुछ पल, जप ले हरि यह अंखियां रोती।
हरि हरि जप ले मिलती छैया, जग में तपती मिलती गलियां।
साथी जाते जब छोड़ सभी, ना साथ छोड़ तेरा सैंया।
हरि रोम रोम में बसा हुआ, धर ध्यान उसी का तू चल ले।
हरि की लीला हरि में जी ले, बरसे अमृत उसको पी ले।
उठती गिरती लहरे बस क्या, जाने संग दिल होता हल्का।
ना छोड़ सुरति वह सदा संग, जपले हरि को जीवन उसका।

थी। गुरू की भी रिंझाई की वजह से थी कि वह रिंझाई का गुरू है। रिंझाई को लोग समझते थे कि वह निर्वाण को उपलब्ध हो गया है, परमज्ञान उसे हो गया,वह बु(हो गया। लाखों लोग इकट्ठे हुए। जो रिंझाई के बहुत निकट थे वे बड़े चिंतित हो गये, क्योंकि रिंझाई की आंखों से आंसू बह रहें थे। वह सीढ़ियों पर बैठा रो रहा था छोटे बच्चे की तरह। तो निकट के लोगों ने कहा, रिंझाई, यह तुम क्या कर रहे हो? तुम्हारी प्रतिष्ठा को बड़ा धक्का लगेगा। क्योंकि लोग यह सोच ही नहीं सकते कि तुम और रोवो। तुम तो परम ज्ञान को उपलब्ध हो गये हो। और तुमने तो हमें समझाया है कि आत्मा अमर है तो कैसी मौत। तो तुम किस लिये रो रहे हो? रिंझाई ने कहा कि रोने के लिये

43

किस तरह दिल को लगाये, कुछ कहो मेरे नियन्ता?
दर्द का दरिया उफनता, छिप गया क्यो तू न मिलता।
बैचेन मन सुनता न धुन, बाजती हरपल रिझाये।
जग की गलियों में घूमे, नयन यह आंसू बहाये।
सासें आती है जाती, बस तुम्हारा नाम गूंजे।
हरि रखो अपनी शरण में, चाह यह दिन रात पूजे।
डगमगाती नाव मेरी, बनो केवट पार कर दो।
बाग के हम फूल तेरे, खिल सकें वह शक्ति दे दो।
कुछ पल खिलती है खुशियां, पर बरसते नयन झर झर।
ले चलो मुझ को वहाँ पर, पी तेरी मदिरा मिटे डर।,
नाम हरि प्यारा तुम्हारा, जगत का तूही रचैया।
बढ़े हरपल प्रीति तेरी, खोज रहा तेरी छैंया।

44

मन बना रहा किससे चाहत, उस बिना नहीं मिलती राहत।
सुपने आंखों में तैर रहे, टूटें जब जब होता आहत।
हरि भजन बिना ना चैन कहीं, छूटे सब कूल न रोवे मन।
बहती जीवन की धारा में, तू सत्य देख हरि का जा बन।
आये है उसकी मर्जी से, जायेंगे अपनी ना चलती।
मन सुमर उसे सब उसका बल, बहती जाये तेरी किस्ती।
सब तरफ वही तो छाया है, फिर भी रोती यह काया हैं।
लहरे भूली संग में सागर, मैं को ले खेले माया है।
ले अपनी नियति सभी घूमे, बस कितना सत्य नहीं समझे।
अंधियारे मैं भी दे प्रकाश, जपले हरि को रस्ता सूझे।
मन करो समर्पण हरि आगे, सुख पाये जिय किस्ती बहती।
आंसू निकले जो आंखो से, लिख लिख भेजो हरि को पाती।

भी किसलिये का संवाल! क्या मैं किसी के लिये उत्तरदायी हूँ? क्या मैं रोने के लिये भी स्वतन्त्र नहीं हूँ? निश्चित ही आत्मा अमर है। मैं आत्मा के लिये रो भी नही रहा हूँ।मेरे गुरू का शरीर भी इतना प्यारा था कि मैं उसके लिये रो रहा हूँ। जो अब कभी भी नही होगा। और अगर मेरी प्रतिष्ठा को धक्का लगता है तो लगने दो। क्योंकि ऐसी प्रतिष्ठा का क्या मूल्य जो गुलामी बन जाये, कि मै रो ही न सकूं।

बु(को जहर दिया, भूल से दिया। किसी गरीब आदमी ने निमंत्रण दिया, भोजन कराया। लेकिन भोजन में विषाक्त सब्जी थी। बिहार में लोग कुकुरमुत्ते इकट्ठे कर लेते है, उनको सुखा लेते हैऋ फिर उसका

प्यारा है नाम जपो हरि को, पीले अमृत है बरस रहा।
आनी जानी इस दुनिया में, जप शाश्वत को वह सदा रहा।
ना लहर बड़ी कोई छोटी, जप सागर संग सदा रहना।
मैं छोड़ हरि का जा बन मन, लेखा फिर किसका क्या रखना।

45

जीवन नदिया बहती जाये, ना पता कहाँ जाये सैंया।
नयनों में मेरे बस जाओ, सब ताप मिटे मिलती छैयां।
तुमको भूले तेरा सम्बल, सुपने उठते गिरते हर पल।
तुझमे ही मेरी सुरति रहे, देखो नयनों से गिरता जल।
तूभी सुन्दर दुनिया सुन्दर, क्यो देख नहीं तुमको पाया।
बहते ही रहते नीर सदा, तुम कृपा करो शरणा आया।
कर सको माफ कर देना तुम, काबिल न तुम्हारे कभी हुआ।
पर प्यार तुम्हारा पाने को, दिल मचल रहा क्यों छिपा हुआ।
करूणा के सागर कहलाते, बहते आंसू देखो गिरते।
कितने जन्मों का प्यासा मैं, चरणों में तेरे हरि गिरते।
कर सकूं अर्चना पूरी मैं, हरि मुझ को तुम यह वर देना।
बन लहर बहूँ नदिया तेरी, हरि सदा रहे तुझमें नयना।

46

पकड़ हाथ हरि मुझे ले चलो, शरण तुम्हारी आंखे है नम।
जाऊँ कहाँ मैं तेरे बिना, कुछ ना दीखे पथ है दुर्गम।
अगम अगोचर पार न तेरा, ढूढ़ रहा पर मनुआ मेरा।
तुम बिन शान्ति कभी न मिलती, बना हुआ तृष्णा का घेरा।
जीवन दाता जीवन तेरा, दो दिन का यह रैन बसेरा।
सुपनों में भी तुम छा जाओ, दूर न होना तू है मेरा।
प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये, विरहाग्नि में रहूँ मैं जलती।
बनूं पतंगा तुमको पाऊँ, पथ में ना अटकूं है विनती।

गरीब आदमी भोजन करते है साल भर तक। कुकुरमुत्ते की सब्जी उसने बु(के लिये बनायी थीऋ बु(ने खायी तो जहर थी। लेकिन एक ही सब्जी थी, और उस आदमी ने वर्षों इन्तजार किया बु(का। और वह इतने आनन्द से बैठकर उन्हें खिला रहा था कि बु(को यह कहना ठीक न मालूम पड़ा कि सब्जी कड़वी है। उसे दुख होगा। वह इतना गरीब था कि दूसरी कोई सब्जी नहीं थी। और बु(भूखे घर से लौटे तो उसकी पीड़ा अनन्त हो जायेगी। इसलिये बु(चुपचाप उस कड़वी सब्जी को खाते रहे। वह तो उसे बाद में पता चला बु(के जाने के बाद जब चखी तो हैरान हो गया वह तो जहर थी। वह भागा हुआ आया। बु(को चिकित्सकों ने देखा,

जिसके दिल में हरि बस जाते, मिटती चाहत सब कुछ पाते।
नयन बहाये पावन गंगा, हरि चरणों को धोते रहते।
खेल खिलावे सुख दुख के तू, कुछ ना जाने रोवे अंखियां।
शरण तुम्हारी ताप हरो हरि, व्याकुल मनुआ दे दे छैया।

47

मन काहे ना हरि को खोजे, सुख जियरा यह पावे।
करो भजन हरि बहते नयना, पथ को वही सुझावे।
जनम मरण सब हाथ उसी के, वह ही नाच नचावे।
हरि की लीला हम कठपुतली, जपो शान्ति मन पावे।
पल पल रंग बदलती दुनिया, नयनन आंसू आवे।
घूम रहा सुख दुख का पहिया, वह ही खेल खिलावे।
लहरों का अपना वजूद क्या, मिट सागर को पावे?
जन्म मरण के कटते बन्धन, जप शाश्वत में जीवे।
छिपा हुआ अन्तस में वह ही, जपो उसी को पावे।
सारी दुनिया रैन बसेरा, झुक हरि चरणा पावें।
दे विवेक जप ले मन हरि को, नयनन आंसू आवे।
कौन यहाँ तू दास हरि बन, नैया पार लगावे।

48

गाओ हरि नाम प्यारा है, सुपना सुन्दर हो जाता है।
कांटो की इस नगरी में भी, बन फूल यहाँ खिल जाता है।
ढलती जाती है शाम यहाँ, कुछ ना अपना हरि थाती है।
पागल मन तू उसको जपले, स्वामी वह यादें प्यारी है।
हरि नाम जपो हरि नाम जपो, पी ले पावन नदिया का जल।
दुख के बादल छट जाते है, जो भी पकड़े उसका सम्बल।
बहती जीवन की धारा में, उठते गिरते रहते प्रतिपल।

उन्होने कहा विषाक्त भोजन का जहर खून में पहुँच गया है बचना बहुत मुश्किल है।

बु(ने जो पहला काम किया वह यह अपने भिक्षुओं को बुलाकर कहा कि बु(के जीवन में दो व्यक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते है। पहला वह व्यक्ति माँ है जो पहला भोजन देती है, दूध, और अन्तिम बु(को भोजन कराता है। उसका तुम सम्मान करना। उसका कोई कसूर नहीं है।

अमरीका के एक महानगर में एक होटल का मालिक अपने मित्र से रोज की शिकायतें कर रहा था कि धंधा बहुत खराब है, और धन्धा रोज नीचे गिरता जा रहा हैऋ होटल में अब उतने मेहमान नहीं आते। उसके मित्र ने कहा,

ना चैन मिले उस बिन जपले, इन नयनों से गिरता है जल।
ना कूल पकड़ कोई पाये, कितना पकड़ो छूटा जाये।
बन लहर नाचलें सागर में, मर्जी उसकी मन सुख पाये।
जपता जा जप ले संग तेरे, कुछ जाने ना हम खेल करे।
बहते आंसू हरि चरण चढ़ा, ले जाये वही काहे डरे।

49

बहता जीवन यह ही चाहे, दुख की छाया ना कभी मिले।
हरि भजन बिना ना सुख मिलता, ढलती संध्या जप चैन मिले।
हरि की लीला जग नाच रहा, छोड़ो मैं शाश्वत सदा रहा।
सब ज्ञान ध्यान मिल जाता है, बरसे अमृत बन दास रहा।
हरि हरि जप प्यारा नाम यही, खेले कुछ पल फिर कभी नहीं।
क्या वैर किसी से है रखना, जप ले समरथ है सदा वही।
अन्तस में हरि की प्रीति जगा, हरि हरि जप ले अन्तर्यामी।
बहते नयना मिलता पानी, सारे जग का वह ही स्वामी।
हरि हरि जप ले विश्वास करो, तपती गलियां मिलती छाया।
हरि कृपा बिना कुछ जोर नही, बहते नयना रोती काया।
हरि हरि जपले दे ज्ञान वही, जलता दीपक सब जगह वही।
हरि नयन लड़ा हरि प्रीति बढ़ा, कर उसे समर्पण यहाँ वही।
बहते आंसू हरि चरण चढ़ा, मन करता किससे यहाँ गिला?
बन कठपुली सब नाच रहे, प्यासे प्राणों को अमी मिला।
जपता जा चलता जा जग में, जैसा राखे रहना होगा।
कर्ता ना बन हरि का जा बन, दुख से वह पार लगायेगा।

50

खोज यहाँ क्या पागल मन है, कर स्वीकार मिला यह तन है।
देखो उठती लहरें जप ले, चंचल मन यह सांचा धन है।
हरि हरि जप ले शान्ति प्रदाता, नैया तेरी यह ले जाता।

लेकिन तुम क्या बात कर रहे हो? मैं तुम्हारे होटल पर रोज ही नो वेकेंसी की तख्ती लगी देखता हूँ कि जगह खाली नहीं है । उसने कहा, वह तख्ती छोड़ो एक तरफ आज से चार महीने पहले कम से कम एक सौ ग्राहकों को रोज वापिस लौटाता था, अब मुश्किल से पन्द्रह – बीस को लौटा रहा हूँ। धन्धा रोज गिरता है।

पिता के कहने पर शुकदेव जी सुमेरू पर्वत से उतरकर पृथ्वी पर आये और महाराजा जनक के द्वारा पालित विदेह पुरी में जा पहुँचे। वहाँ छड़ीपाल द्वारपालों ने महात्मा जनक को यह सूचना दी– राजन! राजद्वार पर व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी खड़े

बस कितना अपने जाने सब, सुख पावे जिय जो झुक जाता।
हरि हरि जपो नचावे वह ही, मर्जी उसकी कर्ता वह ही।
दो पल के मेहमान यहाँ हम, समझे ऐसे सब कुछ हम ही।
जप जप हरि की ज्योति जला ले, अंधियारे को दूर भगा ले।
सभी मिट रही यहाँ कहानी, जप ले हरि अमृत को पीले।
जप हरि पार करेगा नौका, शिकवों को ले काहे रोता।
दे पतवार उसी के हाथों, देखो नैया वह ही खेता।
लहर मिटे सागर हो जाये, जी हरि मर्जी मन सुख पाये।
बन जा मन तू दास उसी का, जप हरपल संग तेरे पाये।

51

मन तू ऐसा गीत सुना दे, विछुड़े पिव को मोहि मिला दे।
कर कर जतन यहाँ मैं हारा, पाऊँ वह संगीत बजा दे।
जनम जनम से दास हरी का, अंखियां रोवे पता न उसका।
कैसे दिल को मैं समझाऊँ, जलूं विरह में आंसू ढलका।
कहाँ छिपा वह काहे सोता, जीवन यह क्यों सांसे लेता।
गीतो को गा लय हो जाऊँ, इन नयनों से आसूं गिरता।
डगमग डगमग नैया डोले, उसका ही बस मुझे सहारा।
प्रियतम प्यारा प्रीति प्यारी, बहती है नयनों से धारा।
तुम बिन लागे ना जियरा हरि, जग का स्वामी चाहूँ सम्बल।
नयनों में बस जाओ मेरे, देख नयन से गिरता है जल।
सूनी अंखिया राह निहारे, ना तुम मुझ को और रूलाओ।
शरण तुम्हारी नाथ आ गया, नैया मेरी पार लगाओ।

52

तेरी राजी में रहें रजा, इतना बल हरि हमको देना।
बहते नयनों से आंसू है, इनको भी हरि तुम लख लेना।
स्वामी मेरे अज्ञानी मैं, जनम जनम का दास तेरा।

हैं। उन्होने शुकदेव जी की परीक्षा लेने के लिये द्वारपालों से अवहेलना पूर्वक कहा– शुकदेव जी आये है तो वहीं ठहरें। ऐसा कहकर राजा सात दिनों तक चुपचाप बैठे रहे– उनकी कोई खोज खबर नहीं ली। तत्पश्चात् राजा जनक ने शुकदेव जी को राज महल के आंगन में– बुलवाया। वहाँ जाने पर भी शुकदेव जी पूरे सात दिनों तक उसी प्रकर उपरत हो कर बैठे रहें इसके बाद जनक ने शुकदेव जी को अन्तः पुर मे ले जाने की आज्ञा दी। परन्तु वहाँ भी राजा ने सात दिनों तक उन्हें दर्शन नहीं दिया। वे चन्द्रमा के समान मुखवाले शुकदेव जी का अन्तःपुर में यौवन के मद से उन्मत्त कमनीय कान्तिवाली सुन्दरियों द्वारा भाँति भाँति के भोजनों तथा भोग सामग्रियों से लालन पालन कराते रहे। परन्तु जैसे मन्द गति से बहने

सबका पालक कर्ता तू ही, चाहूं हरपल में प्यार तेरा।
हरि लाज रखो इस मेले में, बहते आंसू करता पूजा।
अन्तर्यामी सब कुछ जानो, तुम सा न और कोई दूजा।
डगमग डगमग नैया करती, ना पता कहाँ पर जायेगी।
हरि सुरति रहे तुझ में हरपल, डर के यह पार लगायेगी।
हरि हरि हर पल ध्यान तेरा, मैं मिटा सकूँ दो ज्ञान तेरा।
पथरीली जग की राहो पर, न भूल सकूँ तू सदा मेरा।
हरि जपे मनाए हम तुमको, अपने से दूर नहीं करना।
तेरा ही यह गुणगान करें, जो बहें नीर मेरे नयना।

53

चरण पड़ो हरि के मन पागल, अपना कुछ ना जाता यह तन।
नाच नचाये कठपुतली हम, ध्यान डोर पर रख हरपल मन।
आनी जानी इस दुनिया में, किसको मतलब वही रखैया।
जप ले हरि मन सुख दाता वह, ताप हरे शीतल दे छैया।
जग से काहे प्रीति बढ़ावे, पल पल रंग बदलता जावे।
स्वारथ का मेला यह दुनिया, जप ले हरि जियरा सुख पावे।
जप जप हरि बन दास उसी का, जाना कहाँ सब खेल उसका।
चरणों में जो हुआ समर्पित, छूटे मैं जिय होवे हल्का।
सबका पालक सबका दाता, जप ले हरि तू काहे सोवे।
हरि की कृपा यहाँ जब होवे, सफल मनोरथ पूरे होवे।
बुि(प्रदाता ज्ञान वही दे, अपने सिर पर कुछ भी न ले।
हरि मर्जी आये जायेंगे, तप यह ही मर्जी को सह ले।
मिट जाता अंधियारा सारा, साथ सदा ना भूल उसे मन।
हरि हरि जप ले उसे पुकारो, नीर बहे ना फिर खारा मन।
सांस सांस में जप हरि को मन, अपना कुछ ना उसका जंगल।
प्यास मिटे प्यासा जिय भटके, बरस रहा पी ले अमृत जल।

वाली वायु दृढ़मूल अविचल वृक्ष को नहीं उखाड़ सकती, उसी प्रकार वे भोग तथा अनादर एवं उपेक्षा जनित दुख भी व्यास पुत्र के मन को अपनी ओर न खीच सके, उसमें विकार पैदा न कर सके। शुकदेव वहाँ पूर्ण चन्द्रमा के समान निर्विकार, भोग और अनादर में भी समान ;हर्ष–विषाद से रहितद्ध, स्वस्थ, मौन तथा प्रसन्नचित्त बने रहे।

इस प्रकार परीक्षा द्वारा शुकदेव जी के स्वभाव को जानकर राजा जनक ने उन्हे सादर अपने पास बुलाया और शुकदेव जी ने कहा– महाराज! मैं जानना चाहता हूँ यह संसार रूपी आडम्बर कैसे उत्पन्न हुआ? इसकी शान्ति और विनाश कैसे होता है?

राजा जनक ने शुकदेव जी को उस समय वह उनके महात्मा पिता व्यास जी के द्वारा बताई गयी थी। *बात बताई, जो*

54

जप ले हरि जपता ही जा मन, कौन यहाँ तू हरि का जा बन।
दे विवेक जो होता वह ही, स्वामी वह उसका ही यह तन।
हरि हरि जप हरि की ही लीला, खेल खिलाये कर ले क्रीड़ा।
दौड़ जगत में कितना ही मन, बिन हरि जपे न मिटती पीड़ा।
हरि हरि हरि हरि हरि हरि जपले, बरसे अमृत उसको पीले।
कूल पकड़ ना आये जग में, बहता जा मन हरि को जीले।
साथ सदा वह छोड़ सुरति ना, तेरा क्या सब कुछ ही उसका।
बहे नयन से आंसू जो भी, चरण चढ़ा हो जा तू उसका।
धूप छांव का खेल चल रहा, जपो हरि को काहे डर रहा।
अंधियारे में बनता दीपक, जप ले हरि को नीर बह रहा।
दो दिन का यह रैन बसेरा, टूटी जाती हैं सब कडियां।
जप ले हरि मन चैन मिलेगा, खिल जाती कांटो में कलियां।

55

कब लहर उठे कब लहर गिरे, कुछ ना जाने बन लहर बहें।
जप ले संग में तेरे सागर , जप चैन मिले यह नीर बहे।
हरि हरि जप अनजानी दुनिया, उपजे जो ज्ञान चले दुनिया।
कर्ता ना बन जपले हरि को, सुख से बीतेगी यह घड़ियां।
हरि हरि जप देवे ज्ञान वही, मर्जी उसकी ले चले कहीं।
बहते आंसू जप ले हरि को, बन दास मिटा मैं यहाँ नहीं।
जप ले हरि हरि उसकी दुनिया, वह नचा रहा हम को छलिया।
कठपुतली बन हम नाच करें, जप ले भर भर आती अंखियां।
जप ले अन्तस में भी वह ही, जप देखो जपता है वह ही।
कर्ता भर्ता हर्ता सब वह, जो नीर बहे धो हरि पैया।
शरणागत हो सुख पावे मन, बहती जाती खुद ही नैया।

पहले उनके महात्मा पिता व्यास जी के द्वारा बताई गयी थी। तब शुकदेव जी ने कहा– वक्ताओं में श्रेष्ठ महाराज! मैंने पहले विवेक से स्वयं ही यह बात जान ली थी। फिर जब पिता से इस विषय में पूछा, तब उन्होने भी मुझे यही बात बतलाई और आज आपने भी यही बात कही है। शास्त्रों में भी महावाक्यों का यही अर्थ दृष्टि गोचर होता है। वह इस प्रकार है– 'यह विनाशशील संसार अपने संकल्प से उत्पन्न हुआ है और संकल्प का अत्यान्तिक विनाश होने से नष्ट हो जाता है। अतः सर्वदा निस्सार है। यही शास्त्रों का निश्चय है।'

राजा जनक ने कहा– मुने! इस ब्रह्माण्ड में एक अखण्ड चिन्मय परम पुरुष परमात्मा के अतिरिक्त और कुछ भी नही है। अब आप और क्या सुनना चाहते है? ब्रह्मन जो प्राप्त करने योग्य वस्तु है,

56

बरसे अंखियां छिपो नहीं तुम, पार लगा दे मेरी नैया।
जग कर्ता जग का पालक तू, देखो बहती मेरी अंखियां।
आ जा आ जा तुझे पुकारे , देखे राह खड़े है द्वारे।
कृपा मिले खिल जाये जीवन, शरण तुम्हारी हम तो हारे।
दीनबन्धु सुख का तू दाता, देखो नीर नयन से आता।
अगम अगोचर पार न तेरा, खोजूँ कहाँ पता ना पाता।
घट घट वासी अन्तर्यामी, नीर बहाये मेरी अंखियां।
प्रीति तुम्हारी प्यारी लागे, आ जा खिल जायेगी बगिया।
जीवन दाता जीवन तेरा, ले चल मुझ को घना अंधेरा।
मुझ से रूठ नहीं तुम जाना, अज्ञानी हूँ मिले सहारा।
अंखिया बरसे रिमझिम रिमझिम, मिलने को यह नयना तरसे।
खड़ा द्वार पर करूँ प्रतीक्षा, इस आशा से मेघा बरसे।

57

मन ध्यान करो हरि का हरपल, जप ले अमृत है बरस रहा।
उपजे सुख जग से मिटे गिला, इस दुनिया में न कोई रहा।
जप ले जप ले जपता ही जा, हरि कृपा मिले तू ना घबरा।
पल दो पल का सब खेल यहाँ, उस घर जाना खिलता जियरा।
हरि की लीला हरि को भज ले, प्यासे प्राणों को मिलता जल।
मिट जाता तब सारा क्रन्दन, जानूं मन तू तो है चंचल।
हरि हरि गाओ हरि को पाओ, मिटता जाता सुपना दुनिया।
हरि प्रीति बढ़े हिय कमल खिले, तृष्णा छोड़ो रोवे अंखियां।
जपता जा जप ज्ञानी वह ही, उपजे विवेक होता वह ही।
पतवार सौंप हरि हाथों में, मर्जी उसकी कर्ता वह ही।
तज मैं को हरि पग में पड़ जा, हरि कृपा मिले सुख तब मिलता।
पीले मन तू हरि की मदिरा, लागे वह संग सदा रहता।

उसे पूर्णरूप से आपने पा लिया है। आपका चित्त पूर्णकाम हो गया है। आप दृश्य वस्तु ;बाह्य विषयद्ध की ओर दृष्टिपात नहीं करते हैं, अतः मुक्त हैं। अभी और कुछ पाना या जानना शेष रह गया, इस भ्रम को त्याग दीजिये है।

जापान के एक गांव में युवक सन्यासी रहता था। उस गांव में एक युवती गर्भवती हो गई, उसे बच्चा हुआ उसने सन्यासी का नाम ले दिया। सारा गांव इकट्ठा हो गया। उस लड़की के पिता ने उस एक दिन के बच्चे को सन्यासी के ऊपर ला कर रख दिया, और कहा कि सम्हालो, यह बच्चा तुम्हारा है। उस सन्यासी ने इतना ही पूछा, इज इट सो? क्या ऐसी बात है? और तब वह बच्चा रोने लगा और वह उस बच्चे को चुपाने

58

देखे क्या क्या जग में सुपने, चाहे क्या पागल हरि जप ले।
परिवर्तित सारी दुनिया है, पल पल में रंग यहाँ बदले।
सुख दुख ढलती फिरती छाया, जप ले उस बिन रोये काया।
दुख के बादल छंट जाते है, फंस तृष्णा में मन भरमाया।
हरि हरि जप सुन्दर गीत यही, अन्तिम पल तक है साथ यही।
जो दे विवेक वह ही होता, जप लागे संग में सदा वही।
हरि हरि जप पावन है गंगा, धोये मन को करती चंगा।
जप ताप हरे शीतल छाया, मन मैल हरे ना हो दंगा।
सारी दुनिया हरि में जीवे, बड़भागी जप अमृत पीवे।
उसका सुमरन ना छोड़ कभी, जप ले हरि तू ना अब सोवे।
जप ले हरि सारे भय मिटते, इन नयनों से आंसू गिरते।
मन करो समर्पण हरि आगे, नैया हरि उसकी ले चलते।

59

अपना ना कुछ सब कुछ हरि का, सेवक बन जा लागे ना डर।
कर ले जो देवे ज्ञान यहाँ,बन कठपुतली ना हटा नजर।
हरि की लीला हरि ही जाने, जप पी अमृत को दीवाने।
जप जप हरि को मैं मिटा यहाँ, उसकी दुनिया क्यों ना माने।
नाचो बन हरि की कठपुतली, उसके हाथों में ही सुतली।
जब डोर हाथ हरि हाथों में, काहे डरती अंखियां रो ली।
गाले हरि हरि प्यारा वह ही, अन्तिम पल तक साथी वह ही।
किससे मन प्रीति बढ़ावे तू, पकड़े जितना छूटे वह ही।
जपता जा हरि बन बंजारा, ना नीर बहेगा फिर खारा।
मन ध्यान करो हरि का हर पल, ले जाती उसकी है धारा।
दुख मिटते टूटेगा सुपना, हरि बिन कोई भी ना अपना।
बहते आंसू से पूजा कर, उसके दामन को छोड़ो ना।

समझाने में लगा कि उत्तेजित भीड़ उसके झोपड़े में आग लगा कर वापिस लौट गई।

सुबह सुबह यह घटना घटी। और बच्चा रोने लगा। उसका रोना बढ़ने लगा। वह भूखा है और उस बच्चे के लिये दूध चाहिये। वह सन्यासी भीख मांगने के लिये गया। उस गांव में भिक्षा मिलना मुश्किल हो गया। प्रतिष्ठा खो गई। द्वार उसके मुँह पर बन्द कर दिये गये। फिर उसने उस घर के दरवाजे पर भी जा कर भीख माँगी, जिसकी लड़की का यह बच्चा था। और उसने कहा कि मुझे मत दो, मैं भूखा रह सकता हू , लेकिन यह बच्चा मर जायेगा। उस बच्चे की माँ को होश आया। वह अपने पिता के चरणों में गिर पड़ी और और उसने कहा कि मैं झूठ बोली हूँऋ इस बच्चे के असली बाप को बचाने के लिये मैं निदोंष सन्यासी का नाम ले लिया। बाप

60

एक सहारा केवल तेरा, कैसे तुमको नाथ रिझाऊँ?
गिर गिर जाऊँ नीर बहाऊँ, कैसे नैया पार लगाऊँ?
तू ही तू मैं दास तुम्हारा, खोजूँ कहाँ न तुमको पाया।
लाज राखना इस मेले में, नाथ शरण मैं तेरी आया।
नीर बहायें मेरी अंखियां, मुझ से रूठ नहीं तू छलिया।
जनम जनम का साथ हमारा, घूम रहा अविरल यह पहिया।
तुम बिन मेरा मन्दिर सूना, दिल का रोवे कोना कोना।
छिपे कहाँ आ प्रीति बढ़ा ले, खिल खिल जाये जीवन सुपना।
करूणा के सागर कहलाते, मिले प्यार बस यह चाहूँ मैं।
बरस रही हैं अंखियां मेरी, ना भटका मुझ को जंगल में।
सुमरन छूटे कभी न तेरा, लागे साथ न दूरी रखना।
अपनी कृपा बनाये रखना, मेरे नयनों में तुम बसना।

61

जप ले करूणा का सागर है, लहरों का वह ही स्वामी है।
जप ले संग में तेरे सैया, मन की धुल जाती चादर है।
हरि जप हरि जप जपते रहना, ना साथ कभी उसका तजना।
दे अन्धकार में वह प्रकाश, मन सुमरन तुम करते रहना।
हरि जप हरि जप हरि की लीला, सागर ही करता है क्रीड़ा।
लहरो का कितना जोर यहाँ, समझे क्यों ना हरता पीड़ा।
बन लहर नाच ले सागर में, ले जाये जहाँ उसकी मर्जी।
चलती उसकी ही सदा यहाँ, छोड़ो मैं स्वीकारो मर्जी।
यादें ले कर भूली विसरी, मन भटक रहा इस जंगल में।
तृष्णा के चंगुल में फंस कर, ना चैन मिले रोये नगमें।
दो दिन का रैन बसेरा यह, जपले हरि सुख पावे जिवड़ा।

सन्यासी के पास आया और बच्चे को सन्यासी के हाथ से वापिस लेने लगा।सन्यासी ने पूछा, क्यों? उसने कहा, क्षमा करें, यह बच्चा आपका नहीं है। उस सन्यासी ने फिर उतने ही शब्द कहे, इज इट सो? क्या ऐसी बात है?

ऐसे व्यक्ति की अप्रतिष्ठा नहीं हो सकती। क्योंकिऐसे व्यक्ति को आप कुछ भी करे, जैसी भी स्थिति हो, वह उसे पूरी तरह स्वीकार करता है। उसकी स्वीकृति समग्र है।

महावीर के जीवन में उल्लेख है महावीर ने चाहा कि मैं सन्यास ले लूँ तो महावीर की माँ ने कहा, जब तक मैं जिन्दा हूँ तुम बात ही मत करना। महावीर ने बात ही बन्द कर दी। फिर माँ चल बसी। पिता भी चल बसे। तो मरघट से लौटते

दे ज्ञान वही हिय कमल खिले, मिटते दुख हरषे फिर जिवड़ा।
हरि हरि जप सबका स्वामी वह, जप दूर करे सारे दुख वह।
पतवार सौंप हरि हाथों में, नैया तेरी ले जाता वह।
मिट जाते जग से सब शिकवे, छंट जाता सब भ्रम का घेरा।
नैया खुद ही बहती जाये, पीता जो भी हरि की मदिरा।

62

कितना सोचा कितना पाया, समझे ना क्यों हरि की माया।
गिर गिर कर उठे बुने सुपने, चाहा हरि ने उतना पाया।
जप कठपुतली हम नाच रहे, सुख पाये जिय यदि ध्यान रहे।
कर्ता वह ही चलती उसकी, जप ले हरि को यह नयन बहे।
जप ले हरि यह दुनिया उसकी, जो देवे ज्ञान हरि मर्जी।
पड़ जा मन तू हरि चरणों में, स्वीकारो मन उसकी मर्जी।
आये जब पूछा क्या किसने, जायेंगे चले नहीं अपनी।
बन लहर नाचले सागर में, सागर संग सब उसकी चलनी।
सन्तोष करो सागर संग में, उसका हर पल ही ध्यान करो।
दुख पावेगा ना फिर जियरा, सब हरि हाथों स्वीकार करो।
जप ले हरि हरि प्रियतम तेरा, मिटते भ्रम जप हरि का घेरा।
हरि हुआ समर्पित मिटते भय, देवे जो वह ही बस तेरा।

63

मन मैल धुले जप ले हरि को, बहता नयनों से पानी है।
प्रियतम प्यारा जप प्रीति बढ़ा, बीती जाती जिंदगानी है।
बजते स्वर पर ना ध्यान करे, मन भटक रहा इस जंगल में।
जग कर्ता भर्ता हर्ता वह, ना सोवे गा हरि के नग में।
बरसे अंखियां जपले रसिया, अन्तिम पलतक साथी है वह।
जब अन्धकार में ना सूझे, देता प्रकाश दीपक बन वह।
हरि हरि जप ले जपता ही जा, बहते आंसू हरि चरण चढ़ा।

वक्त महावीर ने अपने बड़े भाई से कहा कि अब मैं सन्यास ले लूँ? बड़े भाई ने कहा कि तू पागल हैऋ इतनी बड़ी विपत्ति आ गई है कि माँ–बाप चल बसे, हम अनाथ हो गयेऋ तुम यह बात ही मत उठाना। महावीर फिर चुप हो गये। लेकिन दो वर्ष बाद घर के लोगो को लगा कि हम व्यर्थ ही रोक रहे है। महावीर घर में है और नहीं है। उठते है, बैठते हैं, चलते है, लेकिन ऐसे रहते है जैसे हवा का झोका आये और चला जाये। किसी को पता न चले। न किसी का विरोध करते है न किसी बात में अड़ंगा डालते है। जैसे उनका घर में होना न होना बराबर है। तो घर के लोगो ने महावीर से प्रार्थना की कि जब ऐसे ही घर में रहना हो कि जैसे तुम यहाँ हो ही नहीं तो फिर हम अकारण तुम्हें सन्यास से रोकने का पाप अपने ऊपर

हरि कृपा बिना ना फूल खिले, देता सुगन्ध मन प्यार बढ़ा।
हरि हरि जप सुन्दर गीत यही, इन प्राणों की है प्यास यही।
जीवन दाता जग का पालक, गा ले हरि को दे दिशा सही।
हरि हरि जप ले जपता ही जा, बहते आंसू मिटती पीड़ा।
जन्मों जन्मों का साथ सदा, जप सुख पावे जिय प्यार बढ़ा।

64

तुमसे मिलना कैसे होई, जलूँ विरह जाने ना कोई।
बरस रही नयनों से गंगा, दीखो ना क्यों जीवन होई।
बढ़े प्रीति चाहूँ दिन राती, कैसे भेजूँ लिख लिख पाती।
कहाँ छिप गये पता न जानूं, देखो मेरी अंखिया बहती।
नाम तुम्हारा प्यारा लागे, तृष्णा इधर उधर भटकावे।
दो दिन की इस जिंदगानी में, क्यो ना मुझ को धैर्य बंधावे?
दुर्गम पथ सुपने बहुतेरे, हरि बिन कृपा भक्ति ना पावे।
ढलती संध्या ना अब सोवे, जपले मन तू सांझ सुबेरे।
जग में प्रीति करे तू किससे, देखे क्यो ना रोते नगमें।
शाश्वत हरि जप चैन मिलेगा, सारी दुनिया उसके बस में।
कर्ता भर्ता हर्ता वह सब, कर विश्वास उसे मन तू जप।
मिल जायेगा तुझे किनारा, जिय सुख पावे कर ले यह तप।

65

ओम जपो मन ओम जपो मन, दिल की पीड़ा को यह हर ले।
अनजानी दुनिया क्या जाने, सुमरन इसका हरपल कर ले।
कर्ता भर्ता हर्ता सब वह, जीवन दाता उसको जप ले।
प्यासे प्राण पिला इसको जल, मन जप जप तू तप यह करले।
जप ले इसकी ही है लीला, मिट जाता सब मन का मैला।
बढ़ती जाये प्रीति यहाँ जब, मिटते भय मन पावे छैला।
शाश्वत है जप चैन मिलेगा, नैया तेरी लिये चलेगा।

नहीं लेंगे। तुम जाओ। महावीर उसी दिन घर से चले गये।

जीसस मरते क्षण में, आखिरी क्षण में एक शिकायत से भर गये कि हे परमात्मा, यह क्या दिखला रहा है? सूली पर हाथ में खीले ठोके जा रहे है और एक क्षण को उनके मुँह से निकल गया कि हे परमात्मा, यह क्या दिखला रहा है? यह हम सब मनुष्यों का प्रतीक है। शिकायत बड़ी गहरी है। जीसस जैसे व्यक्ति में भी शिकायत आती है। लेकिन जीसस ने होश संभाल लिया और दूसरा वचन उन्होने कहा, मुझे क्षमा कर, तेरी ही मर्जी पूरी हो, जैसे ही उन्होने कहा, तेरी मर्जी पूरी हो, जीसस खो गया और क्राइस्ट का जन्म हो गया। शिकायत का खो जाना ही मोक्ष में होना है।

नयन बहायें आंसू जब जब, केवट बन वह पार करेगा।
उसकी मर्जी से है आना, जायेंगेजब उसकी चलती।
खिला रहा कुछ पल हम खेलें, कर्ता बनकर ना कर गलती।
जपता जा मन ज्ञान वही दे, जब चाहे सब कुछ वह लेले।
पड़ो चरण में जपो सदा मन, लहर बना सागर में बह ले।

66

आये ना दिन बीते जायें, कैसे तुमको नाथ मनायें?
बहती अंखियों से धारा है, चाह यही चरणों को पाये।
जपे तुझे सुमरन हरपल हो, रोम रोम में बस तुम ही हो।
बढ़ती जाये प्रीति तुम्हारी, इन नयनों में बस तुम ही हो।
अज्ञानी मैं तू है दानी, इतनी भीख मुझे तू देना।
स्वीकारो मेरी पूजा को, देखो मेरे बहते नयना।
सारी दुनिया भूल भुलैया, खेल रहा तू ता ता थैया।
मुझ से रूठ कभी ना जाना, ताप हरे तू देता छैया।
बहती जाती जीवन नदिया, तुझ में ही रस मेरे रसिया।
प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये, वर दे दे बहती है अंखियां।
अगम अगोचर पार न तेरा, ढूंढ़ रहा पर मनुआ मेरा।
मस्त रहूँ पी तेरी मदिरा, गिला मिटे तब होय सुबेरा।

67

नयना बरसे तुमको तरसे, कहाँ छिप गये मेरे बालम।
अंखियां बरसे जिय ना लागे, प्यार तुम्हारा चाहूँ प्रियतम।
गिर गिर जाऊँ नयन बहाऊँ, तुमको खोजूं तुझे न पाऊँ।
जीवन यह क्यो सांसे लेता, बिन तेरे मैं क्यों रह पाऊँ?
अनजानी जग की यह गलियां, बहती रहती मेरी अंखियां।
आहत दिल है आंखे नम है, आजा अब तो मेरे रसिया।
टूटी वीणा कैसा जीना, तुम बिन मेरा मन्दिर सूना।

बेबीलोनियन सभ्यता के लोगों ने सोचा कि हम एक मीनार बनायें, एक टावर बतायें जो स्वर्ग तक जाये। और उन्होने बनाना शुरू कर दिया। देवता चिन्तित हो गये और एक मीटिंग बुलाई और कुछ निर्णय लिया। दूसरे दिन से टावर उठना बन्द हो गया। निर्णय यह था सांझ को सारे बेबीलोनिया के निवासी जब थक कर सो गये तो उन्होने प्रत्येक के मन में यह ख्याल दे दिया कि टावर मैं बना रहा हूँ। मेरी वजह से यह टावर स्वर्ग तक पहुँच रहा है। बस इतना काफी था। दूसरे दिन से उपद्रव शुरू हो गया। क्योकि हर आदमी दावा करने लगा कि टावर मैं बना रहा हूँ, हकदार मैं हूँ। कहते हैं, वह टावर तो वहां रूक ही गया, विवाद इतना बढ़ा कि हत्याये हो

आ जा फूल खिलें बगिया में, करूँ आरती बरसे नयना।
धड़कन पर अधिकार तुम्हारा, आंख मूंद ना बहती धारा।
प्रियतम तुझे मनाऊँ हरपल, तू ही तो मेरा संसारा।
बिछुड़े जब से रोती आंखे, प्रीति तुम्हारी प्यारी लागे।
नयनों में मेरे बस जाओ, ले चल जहाँ न टूटें धागे।

68

क्यों उदास किसकी आशा मन, संग में जब तेरे सांवरिया।
जप ले पथ मिल जाये तुझको, वह ताप हरे देगा छैया।
सबका स्वामी जपले उसको, वह ही कर्ता भर्ता हर्ता।
उसके आगे ना एक चले, जप ले वह ही है सुखदाता।
मन शीश झुका अन्तर्यामी, प्यासे को मिल जाता पानी।
लीला ना जान सके कोई, बहता इन नयनों से पानी।
जप ले हरि वह पीड़ा हरता, सारे जग का वह ही कर्ता।
नाच रहे कठपुतली उसकी, सुख पावे जो सेवक बनता।
हरि बिन चैन न मिलता जग में, बन बन टूट रहे है सुपने।
अंधियारे में जलता दीपक, उसका सुमरन करा है जिसने।
जपता जा हरि मिटा यहाँ मैं, नैया तेरी ले जायेगा।
आंसू से भीगी अंखियां है, कष्टों को दूर भगायेगा।

69

पागल मन प्रीति बढ़ा ले, उठते स्वर साज बजा ले।
परिवर्तित जग ना रहना, शाश्वत से जुड़ सुख पा ले।
दो दिन यह जिंदगानी, आंखों में आता पानी।
तृष्णा का जंगल फैला, जप ले वह ही है दानी।
हरि सुरति रहे नाचे मन, बन जा बंशी उसके स्वर।
नैया खुद बहती जाये, मिट जाते जग के सब डर।
जप ले हरि तुझे खिलावे, तेरा क्या तुझे नचावे।

गई और बेबीलोनियां की पूरी सभ्यता नष्ट हो गई।

यूनान में देल्फी का मंदिर है। और देल्फी के मंदिर की देवी वर्ष के कुछ विशेष दिनों पर घोषणाएँ करती थी। लोग पूछते थे, देवी से उत्तर आते थे। किसी ने भीड़ में यह भी पूछ लिया कि इस समय यूनान में सबसे ज्यादा ज्ञानी पुरूष कौन है? तो देवी ने कहा कि सुकरात।

लोग गये और उन्होने सुकरात से कहा। सुकरात ने कहा, कहीं कुछ भूल हो गई है । अगर तुम कुछ वर्षों पहले ऐसी खबर ले कर आये होते तो मैंने भी स्वीकृत दी होती। लेकिन अब नहीं दे सकता। अब मैं थोड़ा थोड़ा जानने लगा हूँ। मैं तुमसे कहता हूँ कि मुझसे बड़ा अज्ञानी कोई भी नहीं है। तुम जाओऋ

जप जग में वही सहारा, नयनों में पानी आवे।
जपता जा छोड़ न उसको, उस बिन कहना कह किसको।
देखेगा वह ही आंसू, बन दास ले चले तुझ को।
पागल मन बन परबाना, मिटता उसने ही जाना।
मिटता हरि प्रीति बढ़े जब, मिट सके न वह यह जाना।

70

बिछुड़े तुमसे बहते नयना, आयेगी याद तुझे जपना।
तुम साथ सदा हम लहर बने, सागर अन्तस सुमरन करना।
जग में तेरा ही रस रसिया, छिप गया खिलाता तू छलिया।
तुम बिन ना चैन मिले दिल को, आजा रोती देखो अंखियां।
प्रियतम प्यारा सबसे न्यारा, अंधियारे में चमके तारा।
तेरे ही एक इशारे पर, ब्रह्माण्ड नाचता है सारा।
जीवन तेरा जीवन दाता, कठपुतली हूँ क्यों घबराता?
दो ज्ञान डोर पर जब तू है, ना डरूँ नीर फिर क्यों आता?
कण कण परिकर्मा यहाँ करे, तुमको ना भूले नयन झरे।
अज्ञानी हम बालक तेरे, ले चल नौका हम विनय करे।
तेरी यादों में सफर कटे, सुखदायक तू ना जिया डरे।
बस जाओ मेरे नयनन में, बिन कृपा न कोई यहाँ तरे।

71

जप मन जप मन देख ना सुपन, मझधारे में नैया डोले।
उस बिन पीड़ हरे ना कोई, क्यों ना अपनी अंखियां खोले।
दुस्तर मारग जपले हरि को, लगे साथ में जप ले हरि को।
अंखियां रोती रहती उस बिन, सुख मिलता जप ले मन हरि को।
दुख हर्ता वह सुख का दाता, सबका ही वह भाग्य विधाता।
मिलती कृपा उसे जो भजता, जप नयनों से पानी आता।
पल दो पल की यह जिंदगानी, जप ले हरि कर ना नादानी।

देवी को कहो कि सुधार कर ले। घोषणा में कहीं कुछ भूल हो गई है।

वे वापिस गये। उन्होने देवी को कहा कि कुछ भूल हो गई है। क्योंकि सुकरात खुद इन्कार करता है। तो हम किसकी माने? तुम्हारी माने या उसकी माने। देवी ने कहा, इसी लिये तो उसे ज्ञानी कहा। क्योंकि उसे अपने अज्ञान का पता हो गया है।

मैने सुना है कि एक शिष्य ने अपने गुरू को आ कर कहा, कि बड़ा रस आया। समाधि लग गई। ध्यान कर रहा था गुरू के सामने। गुरू ने कहा, कैसी समाधि! क्योंकि अचानक तूने सिसकारा लिया और आंखे खोल दी। उसने कहा कि अब मैं आपको पूरी बात कह दूँ। आज ध्यान दाल–बाटी पर बनाने में लगाया। खूब लगा! बिल्कुल लीन हो

पी ले अमृत बरस रहा है, इन नयनों से आता पानी।
हरि जप हरि जप जप ले मनुआ, नाच नचावे रोवे अंखियां।
सब कुछ वह बन दास उसी का, खिल जायेगी दिलकी कलियां।
अनजाना पथ कुछ ना जाने, ले जायेगी उसकी धारा।
सुख पावे जिय वही सहारा, पी पुकार वह सृजन हारा।

72

कहने का अधिकार न मुझको, फिर भी अपनी पीड़ सुनाऊँ।
अन्तर्यामी सब कुछ जानो, बहते नयना तुझे दिखाऊँ।
जीवन तेरा स्वामी तू ही, देखो मेरी अंखियां रोई।
पार लगा दे मेरी नैया, तुम बिन कृपा न कुछ भी होई।
तुझे मनायें हम हरि हरपल, ढले संध्या जाये कहाँ कल।
तेरा केवल नाम सहारा, बहते आंसू मेरे अविरल।
कठपुतली मैं नाथ तुम्हारी, चाहे जैसे मुझे नचाले।
डोर ध्यान पर हो यह बल दे, बहते नयन इन्हें देख ले।
हरि की लीला करता क्रीड़ा, बस कुछ ना हरि हर लो पीड़ा।
दास तुम्हारा जनम जनम का, तुम बिन कौन संभाले जिवड़ा।
कैसे तुम को नाथ मनाऊँ, बहता जल बस इसे चढ़ाऊँ।
शरण तुम्हारी लाज राखना, तुझ बिन कृपा न पथ को पाऊँ।

73

चल चल के गिरे पहुचे न पर, बहते मेरे दोनो नयना।
सर्जक मेरे तुम ही तो हो, मिले जो चरण आये चैना।
जग कर्ता जग के पालक तुम, झरती अंखियों को देखो तुम।
निष्ठुर बन कर छिप गये कही, थक तुझे पुकारे आओ तुम।
नयनों में नीर थाल खाली, जाती ना नयनों की लाली।
हरि माफ मुझे तुम कर देना, फिर भी चल आता मैं माली
बजती सब ओर तेरी बंशी, किन सुपनों को ले मैं खोया।

गये। ऐसा कभी न लगा था। मगर जरा दाल में मिर्ची ज्यादा पड़ गई, और सिसकारा निकल गया। फिर लगाऊँगा जरा चूक हो गई। अपने ही डाले मिर्चों से जल जाते हो, फिर भी डाले चले जाते हो।

एक मनोवैज्ञानिक और चित्रकार अपने जीवन के अन्तिम दिनों में सबसे ज्यादा निम्न आदमी का चित्र बनाना चाहता था। उसने बनाया। एक कारागृह में एक आदमी ने सात हत्यायें की थी, जा कर उसका चित्र बनाया। जब चित्र बना रहा था तब उसे लगा यह चेहरा जाना पहचाना सा लगता है। अन्ततः उससे न रहा गया और उसने पूछा कि क्या मैने तुम्हें कभी देखा है? वह आदमी रोने लगा। और बोला बीस वर्ष पहले तुमने मेरा चित्र बनाया था तब चित्रकार को याद आया

बस जाओ मेरे नयनों में, चाहत मेरी तू क्यों सोया।
ले चल नाविक मुझ को अबतो, ना छोड़ मुझे मझधारे में।
अंखियां रोती यह दिल तड़फे, जग की अनजानी गलियों में।
झोली खाली ले द्वार खड़े, मिल जाये तेरा प्यार मुझे।
बन सकूं पतंगा बल दे दे, बन शमा गोद मिल सके मुझे।

74

पागल मन गा हरि के नगमें, देख रहा क्या जग में सुपने।
कूल हाथ न आये कोई, बन बन छूट रहे हैं अपने।
बहता जा बन लहर यहाँ पर, सागर संग सुमरन कर हरपल।
जाये ले कित मर्जी उसकी, जप नयनों से गिरता है जल।
शान्ति मिले जप ले मन हरि को, तज मैं को पा जाओ हरि को।
अपने बस क्या सब हरि मर्जी, बहे नयन सुमरन कर उसको।
ज्ञानी वह जप ज्ञान तुझे दे, नैया तेरी वही ले चले।
सारे जग का वह ही कर्ता, कर्ता ना बन जिया न जले।
नाच रहे कठपुतली उसकी, देखे क्यों ना संध्या ढलती।
उस घर जाना शाश्वत वह ही, जपले उसको अंखियां बहती।
जग के सुख दुख नहीं सतावे, जो हरि चरनन शीश झुकावे।
जनम मरण सब उसकी लीला, पी अमृत बरसे जो ध्यावे।

75

हरि भजो हरि नाम है प्यारा, बहती अंखियों से है धारा।
ताप हरे मिल जाती छैया, नाम उसी का जिसने सुमरा।
बीती जाती है जिंदगानी, बहता इन नयनों से पानी।
सुखदायक पीड़ा को हरता, जप ले उसको वह है दानी।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, डसती तृष्णा होय अंधेरा।
जपले मैल मिटेगा मन का, अंधियारे में दीखे तारा।
हरि बिन साथ न कोई जग में, देख यहाँ कितने ही सुपने।

बीस वर्ष पहले उसने एक चित्र बनाया था। तब वह इस तलाश में था कि दुनिया में जो श्रेष्ठतम और सरलतम भोले से भोला चेहरा हो, उसका चित्र बनाना है। और इसी आदमी का चित्र बीस साल पहले बनाया था। दोनो चित्र सबके भीतर है। तुम पर निर्भर है क्या उभारोगे? अगर विध्वस को चुना, मूढ़ता को चुना तो पछताते हुए मरोगे।

एक गरीब आदमी अपने खेत पर काम करके लौट रहा थाऋ उसने झाड़ी में रूपये की खनकार सुनी। उसने झांक कर देखा, एक सन्यासी सिक्के गिन रहा है। वह सुनता रहा और चुपचाप देखता रहा। सौ सिक्के सन्यासी ने साफे में बांधे, साफा लगाया। वह गरीब आदमी उसके पास आया,

अन्तिम पल तक साथ निभा दे, जप दुख मिटते टूटे सुपने।
उपजे ज्ञान करे वह ही तन, चरण पड़ों हरि का जा तू बन।
अन्तस सागर दूर ना लहर, पीड़ मिटेगी कर ले सुमरन।
जीवन उसका मर्जी उसकी, मैं की हरपल होली जलती।
बन जा सेवक तज दे मैं को, नैया देखो खुद ही बहती।

76

इस जीवन को खेल खिलावे, बरसे नयना तू नहीं आवे।
बस जाओ मेरे नयनों में, विनती यह हम तुमको ध्यावे।
जनम मरण का साथ हमारा, नैया का तू खेवन हारा।
कहाँ छिप गये बरसे अंखिया, चाहूँ हरि मैं सदा सहारा।
दो दिन जीना ना फिर रहना, मिटे न तृष्णा देखे सुपना।
पागल मन तू प्रीति बढ़ा ले, मोह यहाँ पर किससे करना।
बन बन टूट रहे है सुपने, किसको पकड़े छोड़े अपने।
जप मन लहर बनो सागर में, सुमरन कर मिटते है सुपने।
लहरे नाचें भूली सागर, कैसे मिटे यहाँ दिल का डर।
जप अन्तस में सागर दीखे, सब सागर मन करो ना फिकर।
करो भजन हरि पथ वह देगा, नैया तेरी लिये चलेगा।
नाम सहारा जग में केवल, जपले उसको पीड़ हरेगा।

77

काहे ना मन हरि को भजता, जप चिन्ता को वह ही हरता।
दुख हर्ता वह सुख का दाता, इन नयनों से पानी गिरता।
जपो हरि मन वह ही खिवैया, ताप हरे शीतल दे छैया।
जो भी हरि का सुमरन करता, दुख से ना फिर रोती अंखियां।
हरि हरि जपो शान्ति वह देगा, सारी पीड़ा वही हरेगा।
कर विश्वास उसी की लीला, ज्ञान उपजता वही करेगा।
मिट जाते भय अमृत पीले, सदा साथ मन उसको जप ले।
बन बन टूट रहे सुपने, सुखदाई शाश्वत को जप ले।

उसके पैर छूए और कहा, महाराज! सौभाग्य से दर्शन हो गये। घर चले, भोजन स्वीकार करे। सन्यासी ने कहा, बेटा ऐसे तो हम घर गृहस्थियों के घर भोजन स्वीकार करते नहीं, लेकिन जब तुमने इतने प्रेम से कहा है तो इन्कार भी नहीं कर सकते। चलते हैं उस गरीब आदमी ने कहा, आपकी बड़ी कृपा। भोजन भी दूंगा, एक नगद रूपया गरीब आदमी हूँ ज्यादा तो मेरे पास नहीं है–वह दक्षिणा भी दूँगा।

उसको घर ले आया। उसको भोजन करवाया। भोजन करवा कर उसने अपनी पत्नी को कहा कि वह रूपया, जो रखा है आले में, निकाल ला। वह वहाँ से चिल्लाने लगी रूपया कहाँ है? यहाँ तो कोई रूपया नहीं है। कोई चुरा ले गया। मुहल्ले के लोग इकट्ठे हो गये। तालाशी ली तो साफे में से

जनम मरण में सदा साथ है, नैया पार लगावे वह ही।
फंसता दुख में भूला उसको, पी पुकार सर्जक है वह ही।
शरणागत हो जपता जा मन, सुरति ना छोड़ो हिय बसाओ।
हरि हरि गाओ प्रीति बढ़ाओ, खिल जाये जीवन महकाओ।

78

जप मन नाम हरि गोविन्दा, काटेगा वह दुख का फन्दा।
राम कहो या श्याम कहो कुछ, जप हो जा मन उसका वन्दा।
जग की अनजानी गलियों में, उपजे ज्ञान वही कर पाये।
कठपुतली हम तो है उसकी, ध्यान डोर रख जिय सुख पाये।
वह अज्ञात छिपा पर सुन ले, सर्जक वह सुमरन मन कर ले।
सारी मूरति उसकी खेले, करो प्रणाम स्वयं को लख ले।
मर्जी उसकी चलता पहिया, जायेगा ना रूकती घड़ियां।
जपो नाम हरि का है प्यारा, ताप हरे शीतल दे छैंया।
नाम सहारा है इस जग में, बरसे अमृत उसको पीले।
जप जप हरि से प्रीति बढ़ा ले, घट घट बसता सम्बल लेले।
छोड़ो मैं जप ले हरि पागल, घूमें कुछ पल जाते बादल।
बनता है जो दास हरि का, बहता जाये लगे न काजल।

79

खोजता हूँ मैं स्वयं को, कौन हूँ जो आ गया मै?
दर्द को दिल में समेटे, चल रहा अनजान हूँ मैं।
करो भजन हरि हरि लीला, नाचो वह करता क्रीड़ा।
चैन आवे जपो हरि को, वही हरे सारी पीड़ा।
पी पुकार तेरा सजना, जप हरि को बरसे नयना।
शिशु पुकारे रूदन सुन कर, मां पिलावे दूध अंगना।
खिल यहाँ झड़ते रहेगे, कह बता किसको कहेगे?
ज्ञान जो दीन्हा हरि ने, तन दिया ले कर बहेगे।
जप हरि पावन है गंगा, मैल कटे मन हो चंगा।
दो दिनो का खेल सारा, छोड़ो तृष्णा कर न पंगा।

सौ रूपये निकले। उस गरीब आदमी से लोगो ने पूछा तुम्हारे पास कितने रूपये थे। उसने कहा पूरे सौ थे। गिने तो सौ ही निकले तो महाराज को धक्के दे कर बाहर निकाल दिया। चलते वक्त उस गरीब आदमी ने कहा, महाराज अब कब आयेगे?

तो उसने कहा, 'अब जब सौ रूपये फिर हो जायेंगे।

एक गांव में अदालत में एक मुकदमा आया। दो मित्र थे, सिर–फुटव्वल हो गई। जज ने पूछा कि झगड़े का कारण क्या? एक ने कहा कि झगड़े का कारण यह था इसने मेरे खेत में भैसें घुसा दी। खेत कहाँ है? जज ने पूछा। उस आदमी ने कंधे विचकाये। 'भैंसे कहाँ है?' वह दूसरा

चोंच मिली चुग्गा देगा, चाहे सब हर भी लेगा।
हरि कृपा बिन कुछ न होता, जप सहारा वह बनेगा।
नाच सागर में लहर बन, सुख दुखों में भूल ना मन।
साथ तेरे वह सदा है, देख अन्तस दास हरि बन।
लहरें जाने क्या दुनिया, खेल चले बीती सदिया।
जो पड़ा हरि के चरण में, ताप हरे मिलती छैंया।

80

मन सुमरन करता जा हर पल, नही भरोसा होगा क्या कल।
नाच नचाये प्रियतम हमको , ध्यान न छोड़ो यहाँ हम अबल।
जपले मन वह सुख का सागर, अंखियां झरती रहती झर झर।
जप ले मन हरि चैन मिलेगा, जायेगी भर रीती गागर।
प्यारा गीत जपो मन हरि को, जावे ले तेरी किस्ती को।
मर्जी उसकी से ही खेले, जपो सदा मन भूल न उसको।
नाच नचावे हमको कान्हा, मर्जी उसकी आना जाना।
दे पतवार उसी को अपनी, मैं मिटता मिट जाता रोना।
ज्ञानी वह ही ज्ञान तुझे दे, नैया तेरी वही ले चले।
सौंप स्वयं को हरि हाथो में, चलती दुनियां नहीं दिल जले।
कूल छूटते जाते सारे, अमृत बरस रहा है हरि जप।
सुख दुख का पहिया जाता रूक, पीले इसको मन कर ले तप।

81

किस किस की बातें करे यहाँ, कितने ही आये गये यहाँ।
हरि सुमरे बिन नाचैन मिले, कितना भटको दिल जले यहाँ।
स्वामी सबका है एक यहाँ, जप ले कितने ही नाम यहाँ।
चल चल कर थक गिर जाये जब, आशा की दीखे किरन वहाँ।
हरि हरि जप वही सहारा है, बहती नयनों से धारा है।
जब साथ छोड़ सब ही जाते, ना भूल साथ वह प्यारा है।
हरि हरि जप ले दुनिया उसकी, स्वामी वह उसकी सदा चली।

आदमी बोला– हम दोनों नदी के किनारे रेत पर बैठे थे। इस से मैंने कहा कि मैं भैंसे खरीद रहा हूँ। यह बोला मत खरीदो। मैने ईखं का खेत लगाने की सोची है। तुम भैंस खरीद लोगे, नाहक किसी दिन झंझट खड़ी हो जायेगी। घुस गई खेत में, क्या करोगे? मैं बर्दाश्त न कर सकूंगा। उस दूसरे आदमी ने कहा–मत लगाओ खेत। अब भैसों का क्या भरोसा भाई? भैंसे है, किसी दिन घुस भी जायेगी।

बात बढ़ गई। उसने कहा, तुमने भी खरीद ली भैसे! खेत तो लगेगा ईखं का। यह लग गया खेत। उसने अपने डंडे से रेत पर एक जगह लकीर खीचं दी। दूसरे ने अपने डंडे से लकीर खीच कर कहा कि लो घुसगई भैसे। फिर सिर–फुटव्वल हो गई। न कोई खेत है, न कोई भैंस है।

धर ध्यान डोर पर नचा रहा, नाचे हम तो हैं कठपुतली।
जग की अनजानी है गलियां, जप दूर नहीं तुझ से सैयां।
उपजे जो ज्ञान करे वह तन, देगा विवेक बहती अंखियां।
बहता पानी ना भुला हमें, बालक तेरे हम अज्ञानी।
तुम बिन ना कोई और सुने, शरणगत को रख ले दानी।
कुछ पल रहना ना यहाँ रहे, क्यों मिलने से मजबूर रहे।
ऐसा कसूर भी क्या मेरा, सुनने को बंशी तड़फ रहे।
अन्तर्यामी घट घट बसते, देखो मेरे नयना बहते।
स्वीकार करो मेरी पूजा, हरि प्यार मिले पैयां पड़ते।

82

ले चल मुझे भुलावा देकर, कट जाये रैना क्या सोचे?
अंखिया नीर गिराती मेरी, दास तेरा न अंखियां मीचे।
अबल नाथ मैं जग के मालिक, तपती गलियां चाहूँ छैया।
प्यार तुम्हारा चाहूँ हरपल, देखो बहती मेरी अंखियां।
दीनबन्धुकरूणा के सागर, पार लगा दे मेरी नैया।
डगमग डोले तुही खिवैया, शरणा तेरी पड़ता पैयां।
चलचल गिरूँ पुकारूँ तुमको, तुमबिन कहो कहूँ मैं किसको?
इस जीवन के तुम हो सर्जक, बहते आंसू देखो हमको।
नाम तुम्हारा प्यारा लागे, चाहूँ इसमें तू रंग डाले।
क्या चाहत ले भटक रहा मैं, तपती धरती तू जल डाले।
स्वीकारो मैं तेरा बालक, अंखियां भीगी करता पूजा।
मिट जाये सारा ही क्रन्दन, नयनों में मेरे तू बस जा।

83

तुमको पुकारूँ आ जा अब, ढलती जा रही शाम है।
ना रूठ तुम जाना कभी, विनती करे यह दास है।
मंजिल मेरी खोई किधर, ढूंढे खुशी जाये मिल।

जंगल की राह से एक जौहरी गुजरता था। देखा उसने राह में, एक कुम्हार अपने गधे के गले में एक बड़ा हीरा बांध कर चल रहा है। चकित हुआ, पूछा कुम्हार से, कितने पैसे लेगा इस पत्थर के? कुम्हार ने कहा, आठ आने मिल जाये तो बहुत। लेकिन जौहरी को लोभ पकडा। उसने कहा, चार आने में दे दे, पत्थर है, करेगा भी क्या? पर कुम्हार भी जिद बांध कर बैठ गया, छह आने से कम न हुआ तो जौहरी ने सोचा कि ठीक है, थोड़ी देर में अपने आप आ कर बेच जायेगा। वह थोड़ा आगे बढ़ गया। लेकिन कुम्हार वापिस न लौटा तो जौहरी लौटकर आयाऋ लेकिन तब तक बाजी चूक गई थी, किसी और ने खरीद लिया था। तो पूछा उसने कि कितने में बेचा? उस कुम्हार ने कि हजूर, एक

नजरें उठा कर देखता, तड़फे यहाँ कटते न पल।
कर्ता भर्ता हर्ता तुम, जायें कहाँ है ना पता।
देखो बहते हैं आंसू, जानो नहीं मेरी खता।
नाचे कठपुतली तेरी, डोर तुम्हारे हाथ में।
बहती नयनो से धारा, तुम राख लो निज शरण में।
मैं कहाँ जाऊँ जगत में, तू ही सहारा दीखता।
ज्ञान सब मिलता तुझी से, ले उसी को नाचता।
तू चलाता चल रहा हूँ, सांसो में तुही बह रहा।
ध्यान ना टूटे कभी भी, मैं अर्चना प्रभु कर रहा।

84

अपना प्यार मुझे तू दे दे, देख नयन से आंसू जारी।
ठोकर खा खा गिरता मग में, ना उलझा जग से मैं हारी।
जीवन दाता जीवन तेरा, कुछ भी ना इस जग में मेरा।
फंस तृष्णा में घूम रहे है, दीप जले तो होय सुबेरा।
दुर्गम पथ है ज्ञान तुही दे, चोंच दई चुग्गा भी तू दे।
लीला कोई जान न पाया, जो भी जपे उसे सुख तू दे।
मझधारे में डोल रही है, पार लगा दे मेरी नैया।
जनम जनम से दास तुम्हारा, देखो मेरी बहती अंखियां।
ध्यान रहे प्रभु हरपल तेरा, ले चल मुझे जहाँ पर डेरा।
नाचूं छम छम रंगू प्रीति में, बसो नयन में तू है मेरा।
गाऊँ गीत मिटे यह रैना, हरि तुम मेरे दिल में बसना।
सदा साथ तुम ज्ञान मिले जब, क्या जीवन फिर क्या है मरना।

85

किसको अपना दर्द दिखाये, जपले हरि मन फिर सुख पाये।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, उलझ उलझ क्यों जग में जाये।
हरि हरि जप हरि जीवन दाता, सबका ही वह भाग्य विधाता।

रूपया मिला पूरा। आठ आने में बेच देता, छै आने में बेच देता, बड़ा नुकसान हो जाता।

उस जौहरी की छाती पर सदमा लगा और बोला मूर्ख! तू बिल्कुल गधा है। लाखों का हीरा एक रूपये में बेच दिया?

उस कुम्हार ने कहा, हजूर मैं अगर गधा न होता तो लाखों के हीरे को गधे के गले में ही क्यों बांधता? लेकिन आपके लिये क्या कहे? आपको पता था कि लाखो का हीरा है और पत्थर की कीमत में भी लेने को राजी न हुए।

एक दिन एक लोमड़ी सुबह अपनी मांद से बाहर निकली। सुबह का उगता सूरज था, बड़ी लम्बी छाया बनी लोमड़ी की–दूर तक जाती थी। उसने सोचा आज तो बड़ी मुश्किल हुई। नाश्ते के लिये

अनजानी जग की गलियों में, गिरें याद तब वह ही आता।
जपले हरि ले जाये नैया, वही सुनेगा बहती अंखियां।
हरि की कठपुतली बन नाचो, ताप हरे देगा वह छैयां।
हरि हरि जप बस यही ठिकाना, जिसने जपा उसी ने जाना।
जप जप मिटे पतंगा बन कर, प्रीति सदा प्यारी यह जाना।
जप ले हरि सब उसकी लीला, नाच नचावे करता क्रीड़ा।
छिपी कहाँ पर डोर न जाने, प्रीति बढ़े हरषेगा जिवड़ा।
हरि शाश्वत में घूमे पहिया, सुख दुख आवे जावे दुनियां।
प्रीति बढ़ा हरि प्रियतम प्यारा, छिपा प्रीति में प्यारा सैयां।

86

यह शीश झुका तेरे सम्मुख, आंसू मेरे इन नयनों में।
कर माफ खता यदि है कोई, मुझको रख अपने चरणों में।
स्वामी तुम मेरे दास तेरा, जन्मों जन्मों से नाता है।
बहते आंसू को देख जरा, जियरा मेरा घबराता है।
जीवन दाता जीवन पालक, अज्ञानी पर तेरा बालक।
अन्धी गलियां कुछ ना जानूं, पहुँचे आंसू प्रभु यह तुम तक।
पी रटूं सदा ही रटूं पिया, तुम बिन न लागे मेरा जिया।
क्यों छोड़ मुझे मझधारे में, छिप खेल करो बहती अंखियां।
बहता जीवन बहता जाता, न पता तेरा कोई पाता।
तू बहा रहा है संग मेरे, तेरा सुमरन सुख दे जाता।
हरि अपनी कृपा सदा रखना, बहते मेरे दोनो नयना।
हरि प्रीति सदा बढ़ती जाये, मिट जाऊँ इसमें तू रहना।

87

सोचे तेरे क्या होता मन, लिये फिरे चिन्ता का दंगल।
जप ले हरि मिटती है चिन्ता, जप जीवन में होता मंगल।
जीवन उसका नाच नचाये, इन नयनों में आंसू आये।

कम से कम एक ऊंट की जरूरत पड़ेगी। इतनी बड़ी छाया! इतनी बड़ी मैं हूँ। ऊंट से कम में तो काम न चलेगा। वह ऊंट की तलाश में लग गई। दिन भर खोजती रही। भरी दुपहरी में जब सूरज सिर पर आ गया, अभी भी भूखी थी। ऊंट तो मिला न था, मिल भी जाता तो करती क्या? उसने लौट कर फिर छाया देखी, छाया सिकुड़ कर बिल्कुल पैरों के पास आ गई थी। उसने कहा अब तो चीटी भी मिल जाये तो भी काम चल जायेगा।

लोग कहते है बु(कहते है कुछ कहा नहीं जा सकता। फिर बु(बोलते क्यों है? नानक कहते है उसका बखान नहीं हो सकता और बखान किये चले जा रहे है। वेद

जप ले उसको मिटती पीड़ा, वह ही नैया पार लगाये।
घूम रहा सुख दुख का पहिया, नयन बसा ले प्यारा छलिया।
कर्ता भर्ता हर्ता वह ही, मिटते गम दिल में हो रसिया।
जप हरि जप हरि वही चलावे, सकल ज्ञान उससे ही आवे।
बन जा मन तू दास उसी का, नैया वह ही लेकर जावे।
जप ले हरि उसकी ही लीला, कठपुतली बन कर ले क्रीड़ा।
बस कितना मन जान यहाँ पर, देख सत्य मिटती है पीड़ा।
दूध पिलावे सुने रूदन माँ, शिशु जाने क्या कित से आवे?
पड़ जा मन हरि के चरणो में, दुख हरेगा जो भी ध्यावे।

88

हरि ओम जपो हरि ओम जपो, मिटती पीड़ा हरि ओम जपो।
बिखरा कितना है दर्द यहाँ, उसके बिन चैन न ओम जपो।
जपता ही जा पावन गंगा, मल धोये मन होता चंगा।
अंधियारी रातों का साथी, तृष्णा ना करती फिर पंगा।
हरि ओम जपो उसकी लीला, बरसे अमृत उसको पीना।
दो दिन का रैन बसेरा यह, मिटते भय शाश्वत में जीना।
हरि हरि जप ले रोती अंखियां, जप ले प्यारा है वह छलिया।
छूटे जाते सब साथ यहाँ, पल पल परिवर्तित यह दुनिया।
बहते आंसू बस उसे दिखा, किसको मतलब इस दुनिया में।
हरिप्रीति बढ़े हियकमल खिले, बिनप्रीति नहीं कुछ भी जग में।
सर्जक तेरा पालक वह ही , हरि कृपा बिना कुछ ना होई।
पड़ जा मन हरि के चरणो में, स्वामी वह करे वही होई।

89

वह न आवे दुख जिय पावे, कैसे यह रूदन मिटे?
जप ले उसका नाम सहारा, सुख हरि जपे मिटे।
मर्जी उसकी सुने ना सुने, दास उसी का बन जा।
थक हारे को मिलती छैया, अमृत बरसे पी जा।

उसका वर्णन करते है पुराण उसका पाठ करते है विद्वान उसका वर्णन और बखान करते है। उसका वर्णन भी ध्यान की एक विधि है। उसकी चर्चा में खो जाने का उपाय है। उसकी चर्चा ही इतनी आनन्द पूर्ण है। रामकृष्ण के सामने कोई परमात्मा का नाम ले देता, वही वे खड़े हो जाते। आँख बन्द हो जाती और आंसुओं की धार लग जाती। उसका भाव ही जब परिपूर्ण हो जाता है तो उसका नाम समाधि है। भाव एक तरंग है डुबकी समाधि है।

एक आदमी मर रहा था तो उसने अपने बेटों को अपने पास बुलाया और

जीवन उसका कौन यहाँ तू, बहे दर्द का दरिया।
जपो नाम हरि चैन मिलेगा, आवे भर भर अंखियां।
सुमरो मन रसधारा बहती, जप ले अंखियां रोती।
प्यासे प्राण पिला जल इसको, देखो संध्या ढलती।
बहता जा ले नाम उसी का, यह नदिया है उसकी।
कुछ पल के मेहमा बने हम, कौन जानता कल की?
जपो नाम हरि जायेगा ले, जप ले नाम सहारा।
दुख का दरिया पार करावे, जप जीवन आधारा।

90

राम राम कह राम बचावे, नैया पार लगावे।
बिखरे कांटे इस जग में है, जप ले वही हटावे।
नाम राम का दन्श मिटावे, राम राम मन जप ले।
सुमर इसे मन शान्ति मिलेगी, अमृत है यह पीले।
टूटी वीणा खोये सब स्वर, किसे पुकारे जग में।
मौन यहाँ नभ छिपा हुआ रब, जप ले वह अन्तम में।
राम जपो मन उसका ही तन, ले जाये केवट बन।
सत्य देख तू कितना जाने, मिले चैन कर सुमरन।
जपो राम ना उलझ यहाँ पर, बन्शी बन उसके स्वर।
जप उसको दुख वही हटाता, झरती अंखियां झर झर।
कुछ पल खेले नैया उसकी, जप ले अंखियां रोती।
राम जपो मन सुखदाता वह, नैया खुद ही बहती।

91

एक सहारा और बता क्या, किसको अपनी पीड़ सुनाएँ।
नाच रहे कठपुतली उसकी, इन नयनों में आंसू आंये।
दुनिया की है रीति निराली, जप हरि ना तू छोड़ डगर को।
बेड़ा पार करेगा वह ही, चैन न उस बिन जप ले हरि को।
जीवन उसका कुछ न अपना, समझे ना मन देखे सुपना।

कहा कि मरते आदमी की इच्छा पूरी करो। तुम्हारा बाप– मैं मर रहा हूँ। छोटी सी इच्छा है, वचन दे दो। बड़े बेटे तो जानते थे कि आदमी खतरनाक है। बाप हो तो क्या? यह जरूर कोई उपद्रव करवा जायेगा। तो वे चुप रहे सिर झुकाये। छोटे बेटे को कुछ ज्यादा अन्दाज न था बाप काऋ दूर पढ़ता था विश्वविद्यालय में वह पास आ गया। उसने कहा कि आप जो कहें। बाप ने उसके कान में कहा कि बस एक इच्छा रह गई है कि जब मैं मर जाऊँ तो मेरी लाश के टुकड़े करके पड़ोसियों के घर में डाल देना और पुलिस में रिपोर्ट लिखवा देना कि जिन्दा–जिन्दा तो इन लोगों ने हमारे बाप को सताया ही, मरकर भी उसके लाश के टुकड़े कर दिये। उसने अपने बेटे से कहा कि मेरी आत्मा स्वर्ग की तरफ जाती

हरि चरणों में शीश झुका मन, नहीं भूल वह सदा है अपना।
दुख के बादल छट जाते है, जब जब हम हरि को जपते है।
नैया सदा हवाले उसके, घ्यान धरो जब हम बहते है।
नाच नचावे नाच रहे हैं, ना जाने कब टूटे घेरा।
प्रीति हरी में बढ़ जाये जब, पता चले ना होय सुबेरा।
बनो दास हरी वही रखैया, पार करेगा तेरी नैया।
और ठिकाना बता कहाँ है, जपता जा वह तेरा सैंया।
नाव भंवर में आशा वह ही, उपजे ज्ञान करे तन वह ही।
नयन बसे जब हरि की मूरति, मिटते दुख सब जग में वह ही।
चलते सभी इशारे उसके, ना मैं क्यों निद्रा से जागी।
कर स्वीकार उसी की मर्जी, प्रीति बढ़ा नित अंखियां भीगी।

92

कहाँ कहाँ ले जायेगा तू, छिपी कहाँ है मेरी मंजिल?
अपना प्यार सदा तुम देना, इन अंखियों से गिरता है जल।
अगम अगोचर पार न तेरा, ढूंढ़ रहा पागल मन मेरा।
बना मदारी हमें नचावे, टूटे ना आशा का घेरा।
अपनी कृपा बनाये रखना, इस जीवन की आशा तू ही।
अविवेकी मैं बुि(हीन हूँ, मेरा सर्जक पर है तू ही।
तुमको छोड़ कहाँ पर जाऊँ, नही किनारा दीखे कोई।
इन आंखो से गिरता है जल, प्यार मिले करता सो होई।
करे आरती हरपल तेरी, दिल में इतनी प्रीति जगा दे।
इन गलियों में भटक न जाऊँ, छवि नयनो में नाथ बसा दे।
खड़े द्वार पर झोली खाली, बहते नीर देखले माली।
सारा है ब्रह्माण्ड तुम्हारा, मिटा नयन की बढ़ती लाली।

93

राम नाम जप बहती अंखियां, जप ले वही शाति का द्वारा।
उस बिन पार लगे ना नैया, नयनों से जल बहता खारा।
अनजाना जग छिपा हुआ रब, फिर भी उसका नाम सहारा।

हुई बड़ी प्रसन्न होगी यह देख कर कि पड़ोसी थाने की तरफ बंध चले जा रहे है।

लोग अपनी दुश्मनियां, अपनी घृणाएँ, अपने क्रोध वसीयत में दे जाते है।

अालडुअस हक्सले अमरीका का बड़ा विचारशील व्यक्ति था। केलीफोर्निया में उसने अपने सारे जीवन का एक बड़ा संग्राहलय बनाया था। दूर दूर से बड़ी कीमती पुस्तकों को लाया, सुंदर मूर्तियां, प्राचीन पुरातत्त्व की चीजें शिलालेख ऋ अपने सारे जीवन की संपत्ति उसने उसी में लगाई थी। चालीस साल की मेहनत थी उस आदमी की। और कहते है, एक अनूठा संग्रह था उसके पास। और अचानक एक दिन उसमें आग लग गई। और इसी पुरातत्त्व की

गम का जो अम्बार लगा है, जप ले दूर करे अंधियारा।
छोड़े सब दुनिया है जंगल, जपो राम को होता मंगल।
सबका ही वह भाग्य विधाता, जप ले उसको हो ना बोझिल।
मर्जी उसकी आये जग में, क्यों ना रामनाम पहचानें
बहती उसमें रस की धारा, पीपी कितने हुए दिवाने।
राम जपो मन राम जपो मन, जीवन का बस चैन यही है।
आनी जानी इस दुनिया में, उस बिन कोई ठौर नहीं है।
प्यास बुझे ना उस बिन दिल की, नाच रहे कठपुतली उसकी।
डोर ध्यान पर कर ले सुमरन, चलती उसकी दुनिया उसकी।

94

ले जाता नैया केबट बन, राम जपे ना क्यों मन पागल।
राम नाम को जिसने गाया, दुख सारे हो जाते ओझल।
रामराम जप जिय सुख पावे, स्वामी संग में क्यों घबरावे।
जीना मरना उसकी मर्जी, झुको चरण में उसको पावे।
कठपुतली बन नाच यहाँ ले, तज मैं ध्यान डोर पर कर ले।
वही नचावे उसकी लीला, जब चाहे वह डोर खींच ले।
राम जपो मन राम जपो मन, ज्योति जला ले उसकी तू मन।
उस बिन कोई नहीं सहारा, अन्तिम पल तक साथ यही धन।
कुछ पल दीखे बहती धारा, जीवन बना भोर का तारा।
कितना पकड़ो हाथ न आये, जपो राम मिल जाये द्वारा।
राम राम जप कर्ता वह ही, मिटा यहाँ मैं तू कुछ नाहीं।
बहे नीर कर उसे समर्पण, सुख बस यही और कुछ नाहीं।

95

दर्द ले कर चल रहे हम, ना पता जाये कहाँ हम।
दास बन जा मन हरि का, जाता ले मिटते सब गम।
बह उसी का नाम लेकर, वह नचाये नाचते है।

खोज में लगा, धीरे धीरे इन्ही सत्यों की खोज में लगा हुआ, उसके जीवन में एक क्रान्ति भी घट गई। उसे हम आधुनिक जगत का एक)षि भी कह सकते है। उस दिन उसने प्रमाण दिया। उसकी पत्नी ने समझा कि वह पागल हो जायेगा क्योंकि सारा जीवन मिट्टी में गया। आग इतनी भयंकर थी कि कोई उपाय न रहा बचाने को कुछ भी। खुद की लिखी किताबें खुद की हस्त लिखित पांडुलिपियां, वे सब जल गई।

वह खड़ा मकान को जलते देख रहा था। पत्नी घबराईॠ क्योंकि न तो कुछ बोल रहा था, न परेशान दीख रहा था। सोचा कि क्या पागल हो गया? रोले, चीख ले, तो हल्का तो हो जाये। और आल्डुअस हक्सले ने कहा

मन सुमर ना भूल उसको, साथ में सागर सदा है।
हरि खिलावे खेल ले मन, लहर नाचे संग सागर।
बन के बन्शी जीले हरि की, जान उसके हैं सभी स्वर।
नाम हरि का ही सहारा, जाती ले उसकी धारा।
हरि जपो जपते रहो मन, जप उसी का नाम प्यारा।
वह छिपा अज्ञात दुख क्या, मन करो स्वीकार उसको।
शीश चरणों में झुका दे, उसकी मर्जी देखे सबको।
दास बन जा मन हरि का, जाने नहीं जाये किधर।
बीतेगी काली रैना, मिटते दुख रहता न डर।

96

टूट न जाये तुमसे धागे, लाज राखना हरि तुम मेरी।
जीवन का सौन्दर्य तुही है, नयन बसे हरि मूरति तेरी।
इस जीवन के तुम ही मालिक, दे दे प्यार रो रही अंखियां।
डोल रही डगमग सागर में, पार लगा दे मेरी नैया।
सुनो ना सुनो दास तुम्हारे, देखो झरती मेरी अंखियां।
पी पी प्यासे प्राण पुकारे, छिप न आ जा कृष्ण कन्हैया।
आग लगी यह दिल में कैसी, ढूढ़ता मिल जाये किनारा।
चलचल कर मैं हार गया हूँ, कृपा करो मिलजाये द्वारा।
टूटी वीणा में उठते स्वर, तेरी कृपा हरि हो जाये।
दास तुम्हारा जनम जनम का, बाट निहारे कब तू आये।
एक सहारा केवल तेरा, छिपो नहीं अब अंखियां खोलो।
बीत न जाये यह भी संध्या, द्वार खड़ा हूँ पट को खोलो।

97

कौन यहाँ पीते हम गम को, देखो नीर गिरे है झर झर।
कैसे तुमको नाथ मनाऊँ, अज्ञानी मैं तो जगदीश्वर।
झुके जहाँ भी तेरा द्वारा, तुमको भूला मैं तो हारा।

कि मुझे सिर्फ ऐसा लगा कि एक बोझ हल्का हुआ। और जल जाने के बाद जब दूसरे दिन मैने अपने मकान को देखा तो मुझे ऐसा लगा, जैसे एक सफाई हो गईॠ स्नान कर लिया हो।

जैसे ही तुम भीतर जाओगे बाहर की घटनाओं का कोई मूल्य नहीं रह जाता। जैसे सांप अपनी केंचुल को छोड़ कर सरक जाता है।

इंग्लैंड का सम्राट अपने एक वजीर को राजदूत बना कर फ्रांस भेजना चाहता था। वजीर का नाम मूर था। लेकिन वह डरा हुआ था। क्योंकि वह फ्रांस का जो सम्राट था, थोड़ा झक्की किस्म का था। और तनाव की अवस्था थी इंग्लैड और फ्रांस में। तो मूर ने कहा कि आप मुझे भेज तो रहे हैं लेकिन वह आदमी ऐसा

लहर संग सागर ना देखे, मन सुमरन कर मिलता द्वारा।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, तृष्णा तज मिल जाये छलिया।
पीले अमृत बरस रहा है, दुख मिटते जप ले वह रसिया।
लाया वह ले जायेगा वह, कुछ ना अपना क्या करना गम।
बन हरि बन्शी नाचो छम छम, ज्ञानी वह दे ज्ञान करें हम।
कर्ता भर्ता हर्ता वह सब, कर स्वीकार उसी की मर्जी।
चरणों में सिर उसके रख दे, वही सुनेगा तेरी अर्जी।
प्रीति पियासी धरती सारी, आती भर भर जग में अंखियां।
प्रीति तुझी में बढ़ती जाये, शरण राख ले पड़ता पैया।

98

पार करा दे मुझ को नदिया, मेरे केवट रोवे अंखियां।
सकल सृष्टि के स्वामी हो तुम, प्यार हमें दो पड़ता पैया।
जीवन दाता बालक तेरे, अज्ञानी है फिर भी तेरे।
दे दो ज्ञान जलेगा दीपक, अंधियारा चहुँ दिश से घेरे।
बहती जीवन की धारा में, साथ दूर तुम क्यों लगते हो?
सुमरन तेरा करूँ सदा मैं, ना मैं शाश्वत तो तुम ही हो।
खोज रहे हैं प्रीति यहाँ सब, अपनी प्रीति मुझे तुम दे दो।
मिट जाऊँ पतंगा सा बन कर, अपने रंग में मुझ को रंग दो।
हरि कृपा तुम्हारी जब बरसे, मुरझाई कलियां भी हरषे।
खिल जाती सूखी बगिया भी, दो प्यार हमें नयना बरसे।
तुम सुनो नाथ विनती मेरी, तुम बिना कहाँ जाऊँ जग में।
पग पग पर ठोकर खाता हूँ, दो जगह मुझे निज चरणों में।

99

जीना न यहाँ है मुश्किल, आसान बनेगी मन्जिल।
जपले मन यहाँ हरी को, नयनों से गिरता है जल।
वह पार करेगा नैया , जप ले वह ही है मन्जिल।

पागल है कि किसी भी दिन, भरे दरबार में गर्दन उतार ले सकता है मेरी। तो इंग्लैडं के सम्राट ने कहा, तू बिल्कुल फिक्र मत कर। अगर तेरी गर्दन काटी गई तो जितने फ्रांसीसी इंग्लैडं में हैं, सबकी गर्दन उसी दिन काट डाली जायेगी । तू बिल्कुल फिक्र मत कर। उसने कहा, वह मैं समझा कि आप यह करोगे। लेकिन उनमें से कोई गर्दन मेंरे सिर पर बैठेगी न । मैं तो गया। तुम मेरी गर्दन के लिये हजार फ्रांसीसियों की गर्दन काट दोगे माना, लेकिन उनमें से कोई भी मुझे जिन्दा न कर पायेगी।

नादिरशाह हिन्दुस्तान आया। उसने दिल्ली पर कब्जा कर लिया। उसने हाथी कभी नहीं देखा था। पहली दफा देखा, बैठने की इच्छा हुई

खिल जायेगा यह जीवन, मिल जायेगा फिर साहिल।
जप नाम हरि है सहारा, हरि हरि जप ले रे पागल।
दुख ना मिटते है उस बिन, छट जाते गम के बादल।
मर्जी उसकी है आया, विश्वास उसी पर कर ले।
क्या हाथ बता है तेरे, खो जायें कुछ पल खेले?
जपता जा मन तू हरि को, खोई मिल जाये मन्जिल।
उपजेगा ज्ञान हृदय में, कर्ता न बनो जलता दिल।
शाश्वत में प्रीति बढ़ा खिल, ढलता ही जाता है दिन।
पीले बरसे है अमृत, जपता ही जा हरि को मन।

100

पूछे आंसू कहाँ गयो रे, जल रहे जलना ही सिखा दे।
बहे नयन से आँसू मेरे, शिकवे मेरे सभी मिटा दे।
अज्ञानी बालक मैं तेरी, मर्जी से इस जग में आया।
कुछ ना जानूं रोते नयना, कृपा करो मैं शरणा आया।
डगमग डगमग डोले नैया, तुम बिन कोई नही खिवैया।
चहुँ दिश तेरे गीत गूंजते, लाज राखना पड़ता पैयां।
नाथ ईश तुम कठपुतली मैं, बहते है आंसू नयनों से।
इन्हे देख ले मुंह न फेरो, दूर नहीं होना नयनो से।
जनम जनम से दास तुम्हारा, देखो भर भर आवे अंखियां।
प्रीति तुम्हारी बढ़ती जाये, मिटूं पतंगा बन ओ रसिया।
नयनों में आंसू ना कुछ भी, माफ खता मेरी कर देना।
मर्जी तेरी जहाँ ले चलो, जुड़े रहे तुझ से यह नयना।

101

मैं ना हूँ तुम मैं ना हूँ तुम, किरपा तेरी चाहे हरपल।
कठपुतली तेरी नाच रहे, अंखियों से गिरता रहता जल।
ले चले तुही दे ज्ञान तुही, तुमको सुमरे कट जाये पल।

तो उसे हाथी पर बैठाया गया। जब वह हाथी पर बैठा तो उसने झांककर देखा, आगे महावत अकुंश लिये बैठा है। तो उसने कहा, तू यहाँ क्या कर रहा है? तो उस महावत ने कहा, महानुभाव! यह हाथी है इसको चलाने के लिये फीलवान की जरूरत होती है। उसने कहा, लगाम मुझे दे और तू नीचे उतर। वह तो घोड़े का आदी था, उसने कभी हाथी देखा नहीं था। महावत हंसने लगा और कहा कि इसकी कोई लगाम नही होती और हम फीलवान ही इसे चला सकते है।

तो कहते है, नादिरशाह छलांग लगा कर नीचे उतर गया। उसने कहा, जिसकी लगाम मेरे हाथ में न हो, उसपर बैठना खतरे से खाली नहीं। मैं ऐसी चीज का मालिक होना ही नही चाहता जिसकी लगाम मेरे हाथ में न हो।

हरि प्रीति बढ़े तेरी हर पल, तेरी ही जीवन में हलचल।
मैं करूँ अर्चना तू बोले, मुझमें ही तू मुख को खोले।
ना जान सका कोई माया, जो सुमरे तुमको जिय खोले।
ले चले जहाँ मन्जिल वह ही, पर देख सदा मैं हूँ तेरी।
ना रूठ कभी मुझ से जाना, तुम नयन बसो तेरी चेरी।
चरणों में गिर होवे पावन, गिरते आंसू खोजे वह पल।
हरि प्यार तुम्हारा पाने को, दिल तड़फ रहा मन है चंचल।
सुपने बन बन कर मिटे यहाँ, गिरता रहता नयनों से जल।
मैं गिरूँ थाम हरि तुम लेना, मेरा ना कुछ सब तेरा बल।

102

जप देख उसे जो देख रहा, सुख से बीतेगा यह सुपना।
जप ले हरि हरि बीते रैना, बरसे अमृत उसको पीना।
सुपने देखे होते झूठे, लगते सच है इस जीवन में।
सुपन जैसे आये जाये, सुख दुख का खेल छिपा इसमें।
जप ले हरि शान्ति प्रदाता वह, जुड़ता हरि से टूटे सुपने।
ले जाता है वह ही नैया, मिट जाते भय जाना जिसने।
मन जप ले हरि हरि खेल करे, बस कुछ न तेरे काहे डरे।
बहता जा उसकी ही नदिया, सुमरन कर ले वह संग फिरे।
जप ले हरि हरि सुपना दुनिया, सुख पावे जिय बीते घड़ियां।
कठपुतली हम तो उसकी है, उस हाथ डोर जप ले रसिया।
कर्ता भर्ता हर्ता वह ही, कुछ पल खेले शाश्वत वह ही।
जप प्रीति बढ़े जुड़ता नाता, सुख प्रीति बढ़े जाने वह ही।

103

पी तुझे पुकारूँ छिप ना, दे मुझे जगह चरणों में।
जियरा मेरा यह रोवे, खोजूँ कैसे इस बन में।
मैं अबल शक्ति के दाता, मेरे तुम भाग्य विधाता।

एक मुसलमान फकीर बायजीद अपने शिष्यों को लेकर एक रास्ते से गुजरता था और एक आदमी एक गाय को घसीटे लिये जा रहा था। बयाजीद ने अपने शिष्यों को कहा, रूको, घेर लो इस आदमी को। एक पाठ सीखने जैसा है। और बायजीद ने अपने शिष्यों से पूछा, मुझे बताओ, यह आदमी गाय को बांधे हुए है कि गाय ने आदमी को बांधा हुआ है? उन शिष्यो ने कहा साफ है कि आदमी गाय को बांधे हुए है। आदमी मालिक है, गाय गुलाम है।

तो बायजीद ने कहा एक सवाल और। अगर हम लगाम बीच से काट दें तो गाय आदमी के पीछे जायेगी कि आदमी गाय के पीछे जायेगा? उन्होने कहा, आदमी गाय के पीछे जायेगा। तो फिर मालिक कौन?

आंसू गिरते नयनों से, बस चाह प्यार मैं पाता।
जो दिया ज्ञान वह कीन्हा, सुपनों में मेरे आ जा।
जो सूख रही है बगिया, वर्षा कर उसे खिला जा।
आसूं से आंख भरी जो, यहाँ मिटा सके न कोई।
जब कृपा तुम्हारी होती, सब ताप हरे सुख होई।
बन्शी तेरी स्वर गा ले, जियरा मेरा यह नाचे।
मैं जनम जनम की दासी, आ जा अब तू क्या सोचे?
अपना तू प्यार मुझे दे, इन नयनों से गिरता जल।
कर ले स्वीकार समर्पण, कुछ न मेरा तेरा बल।

104

यहाँ प्रीति किसी से न करनी, सब लिये फिरे अपनी करनी।
जिससे भी निभे निभा ले तू, जग में मर्जी हरि की चलनी।
दो दिन का रैन बसेरा यह, पल पल में बहती हैं अंखियां।
मन जपो नाम को सुख पाओ, ले जायेगा वह ही नैया।
हरि हरि जप चैन मिले दिल को, ढलती संध्या जपले हरि को।
पी ले अमृत है बरस रहा, सुख से बीते पल जी इसको।
हरि हरि जप शान्ति प्रदाता वह, ले ले मन एक सहारा वह।
नौका ना जाने कहाँ लगे, जप उसको जीवन दाता वह।
जप ले मन देगा ज्ञान वही, जपले फैला सब ओर वही।
उसको भूले अंखियां रोवे, जप प्राणों की है प्यास वही।
चरणों में सिर अपना रख दो, हरि हरि जप लो हरि को जी लो।
ले जायेगी उसकी धारा, मिट जाते भय हरि को जप लो।

105

गम अनेको कर भजन हरि, उसके बिना ना चैन है।
ले जा रहा नौका वही, मन मान क्यों बैचेन है?
रूप धर कर वह अनेकों, खेलता इस जगत में है।
करो सुमरन पीड़ हरता, वह तो कभी ना दूर है।

जिसके मालिक तुम बनते हो वह भी तुम्हारा मालिक बन जाता है।

सूफी फकीर हुआ हसनऋ जब वह मरने लगा, किसी ने उससे पूछा, तुम्हार गुरू कौन था? उसने कहा, फेहरिस्त बड़ी लम्बी है। सांसे बहुत कम बची है। अगर मै अपने सारे गुरूओं की बात करूँ तो मुझे उतनी ही बड़ी जिन्दगी चाहिये, जितनी बड़ी मैं जिन्दगी में जीया। क्योकि क्षण क्षण उनसे मुलकात हुई, जगह जगह वे मिले।

फिर भी उस आदमी ने जिद की कि पहले सद्गुरू का नाम बता दो। सिर्फ जिससे पहली झलक मिली। उसने कहा, मैं एक गांव से गुजरता था और तब मैं बड़ा अकड़ा हुआ था क्योंकि मैंने फलसफा पढ़ा

उसकी कठपुतली हम तो, नाचे वह तो नचा रहा।
जपो हरि को देखता सब, कर ले विनय जल बह रहा।
जप ले हरि जपता ही जा, मैं को हटा कर चले जा।
कर्ता वह रचना रच दी, चरणों में मन पड़ ही जा।
कुछ न अपना जा रहा तन, मिटते भय शाश्वत वही।
जपो हरि नाचो लहर बन, ले जा रहा हमको वही।
आये जग कितना जाने, बस ना कुछ दुख क्यों माने?
दुख के बादल जाये छट, जो जपे हरि दास मानें।

106

खोजूं कहाँ मनाऊँ कैसे, मिले जो बिछुड़ा मीत।
बहती है अंखियों से धारा, खोया कहाँ संगीत?
सदियां बीती जानू कुछ ना, जानूं न उसकी रीति।
दिल की पीड़ा ना मिटती है, तोड़ ना मुझसे प्रीति।
प्राण पुकारे आ जा छैला, चल चल हम तो हारे।
बस जाओ मेरे नयनों में, कृपा होय तो तारे।
स्वामी मेरे जीवन के तुम, मर्जी तुही चलाये।
बहते आंसू मूंद आंख ना, शरण तेरी आये।
पार लगा दे मेरी नैया, डोल रही सागर में।
बहता इन आंखों से पानी, तू आशा जीवन में।
नाम सहारा लिये चल रहा, पता न कित खो जाऊँ।
प्यार भरी ना नजर चुराना, विनती तुझे मनाऊँ।

107

जी रहे हम पी रहे गम, जगत यह कैसा बनाया?
बहता नयनों से पानी, दास तेरा शरण आया।
जाने न जाये कहाँ हम, ज्ञान तू दे दे सदा संग।
लहर तेरी नीर नयना, असंग लागे जब कि है संग।

था, दर्शनशास्त्र पढ़ा था, शास्त्र कंठस्थ कर लिये थे, तर्क सीख लिये थेॠ बड़ी अकड़ थी। एक छोटे से बच्चे को मैंने मस्जिद की तरफ जाते देखाॠ एक हाथ में दीया लिये हुए था। मैंने उससे पूछा कि सुन, दीया तूने ही जलाया? उसने कहा, मैंने ही जलाया।

तो मैंने उससे पूछा तू मुझे यह बता एक दार्शनिक प्रश्न पूछा–कि जब तूने ही यह दीया जलाया तो तुझे पता होगा कि ज्योति कहाँ से आई? कहीं से तो आई होगी। उस बच्चे ने कहा, ठहरो। उसे एक फूक मार कर दीया बुझा दिया और उसने कहा, ज्योति गई। तुम बता सकते हो कहाँ गई? तुम्हारे सामने ही गई है।

हसन ने कहा मेरी अकड़ टूट गई। झुक कर मैंने उसके पैर छू लिये। एक छोटे बच्चे न मेरा सारा दर्शनशास्त्र कूड़ा–करकट

मन भजन कर सब उसी का, जाता ले बन जा उसका।
कुछ पलो का खेल सारा, जप मिलेगा चैन मन का।
जपो हरि वह ही सहारा, बहती आंखों से धारा।
बनो बन्शी स्वर उसी के, जिन्दगी है भोर तारा।
चल जगत में हरि जपो मन, कुछ न अपना हरि बस में।
देखे वह बहते नयना, चैन आवे राख दिल में।
जप हरि पावन है गंगा, बहता नयनो से है जल।
हरि जपो जपते रहो मन, जाये छट दुख के बादल।

108

बैचेनी में कटते ना पल, दास उसी का मन जा तू बन।
मर्जी उसकी खेल रहा है, जान उसी का है यह जीवन।
जप ले हरि वह शान्ति प्रदाता, संग सदा वह क्यो घबराता।
उसकी दुनिया वह ही कर्ता, बन बन्शी मन चैना आता।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, उस बिन सुख ना जप ले छलिया।
डगमग डोले इस सागर में, पार लगावेगा वह नैया।
अंधियारी रातों में साथी, बिना तेल जलती है बाती।
जप ले हरि जपता ही जा मन, आंसू से लिख भेजो पाती।
गा हरि हरि सब बिछुड़े मेला, आया यहाँ जाये अकेला।
कमल खिले हिय प्रीति बढ़ा हरि, प्रियतम प्यारा पा ले छैला।
जप उसको उस बिन सुख नाहीं, पड़ हरि चरण ले चले वह ही।
जपता जा दे ज्ञान वही मन, जप मिट जा सुख सागर वह ही।

109

किसको मतलब यहाँ किसी से, जप हरि कष्ट मिटे सब मन के।
ले जायेगा तेरी नैया, तृष्णा तज मन काहे भटके।
जप अन्तस में देख स्वयं को, नीर बहाती रहती अंखियां।
उस बिन चैन मिले ना दिल को, जप प्यारा है वह ही छलिया।

में डाल दिया, आंख खोल दी। एक छोटे बच्चे को भी मैं सिखाने की चेष्टा कर रहा था, जो मुझे ही नहीं पता था। मेरे गुरू होने की चेष्टा उसने तोड़ दी और गुरू हो गया।

एक सूफी फकीर एक गांव में गया। लोगों ने उसका अपमान करने के लिये जूतों की माला बना कर पहना दी। वह बड़ा प्रसन्न हुआ, उसने माला को बड़े आनन्द से संभाल लिया। लोग बड़े हैरान हुए क्योंकि वे आशा कर रहे थे कि वह नाराज होगा, गाली देगा, झगड़ा खड़ा करेगा। इच्छा ही यह थी झगड़ा खड़ा हो जाये। बड़े झुक झुक कर नमस्कार किया, जैसे कि फूलों की माला हो, गुलाब पहनाए हो। आखिर एक आदमी से न रहा गया। उसने पूछा, मामला क्या है? तुम्हे होश

जपले हरि मन यही सहारा, जप सुख से ले जाये धारा।
पल पल पलटें रंग यहाँ पर, बहती है नयनों से धारा।
उस बिन और सुने ना कोई, जपता जा रखबाला वह ही।
चोंच दई चुग्गा दे वह ही, सत्य देख जग कर्ता वह ही।
हरि हरि जपो वह ही है अमृत, नहीं बहेगा आंसू खारा।
जप हरि बहती जाये नौका, ले ले उसका नाम सहारा।
हरि हरि जप हरि हृदय बसा ले, यहाँ मिट रही सभी कहानी।
कूल पकड़ ना आये कोई, छोटी सी है यह जिन्दगानी।
बहे नीर ना कोई देखे, लिये फिरे निज सभी कहानी।
जप हरि दीप जलाले दिल में, दुख से नहीं बहेगा पानी।
मर्जी उसकी डोर उसी की, जैसा चाहे नाच नचाये।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, दास बनेगा जिय सुख पाये।

110

कितनी पीड़ भरी गीतों में, बहती अंखियां रोये नगमें।
दास तुम्हारा राख शरण में, बाट निहारूँ बस जा दिल में।
मेरे स्वामी भूल न हमको, तपे राह दे छैयां हमको।
तुम बिन बोलो किसे पुकारे, बीच भंवर में ले चल हमको।
तुझे मनाये सुमरन तेरा, ना ज्ञानी मैं बालक तेरा।
तेरी ओर निहारे हरपल, लाज राखना जीवन तेरा।
जीवन दाता भाग्य विधाता, इन नयनों से पानी आता।
पार लगा दे मेरी नैया, जपूं तुझे मैं तुमको ध्याता।
मैं ना हरि तू ही है शाश्वत, मैं तो बना भोर का तारा।
जपूं तुझे सुख पावे जियरा, रोम रोम में बस मैं हारा।
प्यास प्रीति की घूमे दुनिया, बढ़े प्रीति ना नजर चुराओ।
तुझमें प्रीति बढ़े हरि हरपल, मेरे नयनों में बस जाओ।

है? यह जूतों की माला है। उसने कहा, माला है यही क्या कम है? जूतों की फिक्र तुम करो, हम माला की फिक्र कर रहें है। और चमारों का गांव हैं, करोगे भी क्या तुम? फूल तुम लाओगे कहाँ से? यह कोई मालियों की बस्ती तो है नहीं, चमारों की बस्ती है। पहचान गये हम कि चमारो की बस्ती है। मगर धन्यभाग कि तुम माला तो लाये! इसे संभाल कर रखूंगा। फूलों की तो बहुत मालाएँ देखी।

यह अनूठी है। तुमने अपने संबंध में सब कुछ कह दिया।

बु(एक जंगल से गुजरते थेऋ पतझड़ के दिन थे, सूखे पत्तों से सारा बन प्रांत भरा था, हवायें उन सूखे पत्तों को जगह जगह से उड़ाये फिरती थी। आनन्द ने पूछा, भगवान

111

अर्चना तेरी करे हम, जानते ना हो कहाँ तुम।
दास को अपना बना लो, सब जाये मिट मेरे गम।
जगत की अनजान गलियां, बहती हैं मेरी अंखियां।
हरि कृपा रखना सदा तुम, ताप हरो देते छैया।
ले चलो देकर भुलावा, वह हमें मन्जूर सारा।
पर न दिल से दूर होना, देखो तुम बहती धारा।
हरि जपे तुमको मनाएँ, तेरे बिन कैसे जीये।
जी नहीं लगता हमारा, चाह तेरा प्यार पाये।
तुम ही स्वामी हो जग के, नमन को स्वीकार कर लो।
मैं अबल तेरा सभी बल, सभी तम को ईश हर लो।
मैं भटकता ज्ञान दे दे, तेरी दुनिया है नहिं कम।
तुम बिना जाये कहाँ हम, नीर से पूजा करे हम।

112

देख हमें लो अंखियां भीगे, जाऊँ कहाँ न रस्ता दीखे।
दास तुम्हारा जनम जनम का , कैसे पूजूं जो तू दीखे।
अज्ञानी मैं बालक तेरा, अपना प्यार मुझे तुम देना।
दर्शन को यह प्यासी अंखियां, छिपो नहीं अब बहते नयना।
प्रीति प्यासी सारी दुनिया, न डरे पतंगा जले शमा पर।
बढ़े प्रीति तुझ में यह विनती, मिटूं इसी में रहे तू अमर।
देदे मन्दिर का तू कोना, बीतेगी सारी जिंदगानी।
बना भिखारी जग में डोलूं, तुझसे बड़ा न कोई दानी।
जीवन तेरा तू है मालिक, मुझ से रूठ नहीं तुम जाना।
अनजानी जग की गलियाँ, देखो मेरे बहते नयना।
ज्ञानी तू दे ज्ञान सभी को, नैया सबकी तू ही खेता।
तेरी मधुशाला में आकर, बड़ भागी मदिरा को पीता।

एक बात पूछना है। आप जो जानते थे क्या सभी मुझसे कह दिया? बु(ने अपनी मुट्ठी में सूखे पत्ते भर लियें और कहा, जो मैंने तुमसे कहा है, वह इस मुट्ठी में बन्द पत्तों के समान है जो नहीं कहा, वह इन सारे सूखे पत्तें की भांति है, जिनसे पूरी पृथ्वी भरी पड़ी है।

रामकृष्ण ने बहुत दिनों तक भक्ति की साधना की। परन्तु अद्वैत का अनुभव नहीं हुआ। रामकृष्ण बड़े पीड़ित थे। जहाँ तक द्वंद है– मै हूँ, तू है, वहाँ तक संसार है। फिर उन्हें एक सन्यासी मिल गया अद्वैत का साधक, सि(। तोता पुरी उस सन्यासी का नाम था। राम कृष्ण ने पूछा मैं क्या करूँ, अब कैसे मैं इस द्वंद के पार जाऊँ, तो तोता पुरी ने कहा, बहुत कठिन नहीं है। एक तलवार

113

तेरी कृपा मिले जब, दुख पाये न जियरा।
सुख से कटे सफर यह, बहे नयन से धारा।
)षि मुनि तुझे मनाएँ, इस जग के तुम माली।
प्यार तुम्हारा चाहें, तुम बिन लगे न लाली।
जीवन तेरा मालिक, कठपुतली हम तेरी।
न रूठ मुझसे जाना, राह कठिन है मेरी।
हरि ज्ञान है तुम्हारा, नैया सबकी खेता।
अज्ञानी कुछ न जानूं, दुख हरो नीर बहता।
बना लहर तू सागर, रीति फिरे ले गागर।
अन्तस में छिप नचाये, बहे नयन यह झर झर।
आंसू की लो पाती, लगे संग हो सदा तुम।
बसो मेरे नयनमें, सुमरे तुझे सदा हम।

114

तुम बिन ज्ञान कहाँ से उपजे, खोजूं तुमको नाथ मनाऊँ।
बढ़े प्रीति वर ऐसा दे दे, तेरे चरणों को मैं पाऊँ।
सुख दुख की बहती धारा में, नीर यहाँ गिरते हरपल है।
दिल में जिसके तुम बस जाते, सभी टूट जाने फिर भ्रम है।
इस जीवन के मालिक तुम ही, मेरे तुम ही भाग्य विधाता।
करूँ अर्चना सदा तुम्हारी, नही भूलना आंसू आता।
कहाँ जाऊँ न जानूं मन्जिल, घूम रहा अनजानी गलियां।
बिन हरि कृपा नहीं दुख मिटते, शरण राख मैं पड़ता पैयां।
ले ले नाम पुकारा जिसने, कष्ट हरे प्रभु तारा तुमने।
सारे जग के तुम ही कर्ता, मिले ज्ञान जब टूटे सुपने।
जनम जनम का दास तुम्हारा, जगह मुझे चरणों में तू दे।
नैया मेरी डगमग डोले, केवट बन कर पार लगा दे।

उठा कर मां के दो टुकड़े कर दो। रामकृष्ण ने कहा तलवार कहाँ से लाऊँगा? तोता पुरी हंसने लगे।उसने कहा जब मां को ले आये कहाँ से लाये? कल्पना का ही जाल है। बड़ी मधुर है कल्पना, बड़ी प्रीतिकर है, पर तुमने ही सोचा, माना, रिझाया, बुलाया, आसन किया, कल्पना को सजाया हजार रंगों में, वही कल्पना आज साकार हो गई है। तुमने ही उसमें प्राण डाले है। तुमने ही अपनी ज्योति उसमे डाली है। तुमने ही उसे ईंधन दिया अब ऐसे ही एक तलवार भी बना लो और काट दो।

रामकृष्ण आंख बन्द करते और कंप जाते। उन्होने कहा मेरी सहायता करो। बडे भाव से यह मन्दिर बनाया है। तोतापुरी ने कहा मै तेरी सहायता करूँगा। वह एक कांच का टुकड़ा उठा लाये और उसने

115

शक्ति मुझे दे बन बन्शी मैं, स्वर तेरे ही गाता जाऊँ।
दूर कभी ना दिल से होना, नयनो के मैं नीर चढ़ाऊँ।
बस जाओ मेरे नयनों में, दिल की सारी पीड़ मिटा दे।
नदिया तेरी बहता जाऊँ, अपना प्यार मुझे हरि तू दे।
फूल तुम्हारी बगिया के हम, नही रूठ जाना माली तुम।
तुझे पुकारूँ देख हमे ले, बहती आंखे मिटता ना गम।
जीवन दाता तूही पालक, छतिया फिर क्यों करती धक धक।
दास तेरा राखो शरण में, सुख पावे जिय तेरा बालक।
ले चल मुझ को पार करा दे, गहरी नदिया मुझे डरावे।
तेरा ही बस मुझे सहारा, मेरी अंखियां भर भर आवें।
बहे नीर मैं करूँ अर्चना, विधि ना जानूं अज्ञानी मैं।
झुका शीश चरणो में तेरे, मिले प्यार चाहत नयनों में।

116

ले चल मुझे भुलावा दे कर, मर्जी तेरी नदिया तीरे।
तेरी आंखों में मैं झाकूं, मुझे प्यार दे धीरे धीरे।
जनम मरण मैं कुछ ना जानूं, सुध बुध खो मै तुमको पा लूं।
बढ़ती रहे प्रीति बस तुझ में, इन नयनों में तुझे बसा लूं।
मेरी सांसो मे तू बस जा, बीते जीवन कुछ ना अपना।
गा कर तेरे ही गीतो को, बीतेगा जीवन यह सुपना।
गिरते नीर बुलावे तुमको, जाने नहीं छिपे हो तुम तो।
जल बिन जैसे मछली तड़फे, व्याकुल हम आ जाओ अब तो।
बीती जाती सभी कहानी, छोटी सी है यह जिंदगानी।
गाऊँ स्वर तेरे बन बन्शी, जियरा हरषे बहता पानी।
ढले शाम ले जाये हमको, तुझे पुकारूँ आ जा अब तो।
नैया जाने कहाँ लगेगी, बहते नीर देख ले अब तो।

कहा कि जब तेरे भीतर मां की प्रतिमा बनेगी तो मैं तेरे माथे पर कांच से काट दूंगा। जब मैं काटू और तुझे पीड़ा हो, खून की धार बहने लगे, तब तू भी एक हिम्मत करके भीतर की मां को उठाकर तलवार से काट दो। रामकृष्ण ने भी हिम्मत की जैसे ही उसने लकीर काटी उन्होने तलवार उठाकर भीतर कल्पना को खंडित कर दिया। कल्पना के खंडित होते ही कैवल्य हो गया।

एक नदी के किनारे एक नाव पड़ी थी। और चार कछुए छलांग लगा कर उसमें बैठ गये। हवा तेज थी, उनके धक्के से नाव चल पड़ी, वे बड़े प्रसन्न हुए। लेकिन दार्शनिक सवाल उठ आया कि नाव कौन चला रहा है? हम तो नही चला रहे। एक कछुए ने कहा, नदी

117

दो पल की मिल जाये खुशियां, कितना तड़फे कितना रोये?
हरि भजन बिना ना चैन मिले, मर्जी तेरी कैसे जीये।
उसका जीवन बरसे अंखियां, छिप छिप कर खेल करे छंलिया।
कठपुतली हम तो हरि की हैं, डोरी पर ध्यान पड़ो पैंया।
जप ले मन वही सहारा है, अन्तिम पल तक आधारा है।
जैसा राखे मर्जी उसकी, बहती नयनों से धारा है।
हरि जप हरि जप दे ज्ञान वही, उपजे हिय होता यहाँ वही।
पड़ जा मन हरि के चरणो में, स्वामी वह ही ले चले कही।
पल पल परिवर्तित जग सारा, सुख दुख का यहाँ पड़ा साया।
हरि भजन करो शाश्वत जी लो, ना दुख में रोयेगी काया।
बनो दास हरि सुख पावे जिय, तज दे मैं यह अंखियां रोई।
हरि जप हरि जप कर्ता वह ही, उस बिन ना और सुने कोई।

118

हरि जप हरि जप ज्ञानी वह ही , जो ज्ञान जगे होता वह ही।
कर्ता ना बन हरि का जा बन, नैया को ले जाये वह ही।
जो भी रचना रच दी हरि ने, स्वीकार उसे करना होगा।
कर याद उसे दुख दूर करे, चरणों में तो झुकना होगा।
पूजो उसको जिय सुख पाता, प्यारा उससे बढ़ कही नहीं।
खोजे प्रियतम बरसे अंखियां, प्राणों की भी है प्यास वही।
बस में क्या सच क्यों ना देखे, दे दोष किसे अपने लेखे।
मर्जी उसकी जप उसे सदा, उस बिन न और कोई देखे।
जन्मों जन्मों से दास प्रभु, आंसू से लिख भेजो पाती।
अपने मन्दिर का दे कोना, यह संध्या भी ढलती जाती।
अनजानी जग की है गलियां, बरसे हरपल है यह अंखियां।
मन नाम सहारा तू ले ले, वह पार लगावेगा नैया।

चला रही है। दूसरे ने कहा पागल हुए हो? यह हवा है, नदी नही, जो नाव को चला रही है।

बड़ा विवाद बन गया। तीसरे ने कहा, यह सब भ्रम है– वह और भी बड़ा दार्शनिक रहा होगा–यह सब भ्रम है, न नाव चला रही है, न नदी चला रही हैऋ न कोई चल रहा, न कहीं कोई जा रहा, यह सब सपना है, हम नींद में देख रहे है।

चौथा लेकिन चुप रहा। उन तीनों ने चौथे की तरफ देखा और कहा, तुम कुछ बोलते क्यों नहीं? लेकिन चौथा फिर भी चुप रहाऋ उसने कहा मुझे कुछ भी पता नहीं। उसकी यह बात सुनकर वे जो तीनों आपस में लड़ रहे थे, सब साथी हो गये। और उस चौथे को उन्होने धक्का दे कर नदी में गिरा दिया कि बड़ा समझदार बना बैठा

119

जप ले हरि बरसे है अंखियां, जप ले वह प्यारा है छलिया।
चलचल गिरें याद वह आये, जप हर पल दुख हरता रसिया।
चले तमाशा दो दिन का है, कर्ता बन कर क्यों रोता है?
सारे जग का मालिक वह ही, आंख मूंद कर क्यों सोता है?
आये पूछा नहीं किसी ने, जाना जब हो रूके न कोई ।
ढूंढ़ रहे दो पल की खुशियां, सुखनन्दन जप ले सुख होई।
कठपुतली बन नाच प्यार से, ध्यान डोर पररख पागल मन।
जब तक मर्जी नाच नचाये, झुक जा दास उसी का जा बन।
जप हरि मन होता है पावन, सोच–सोच होता क्यों पागल।
शरण हुआ जो भी मन हरि के, ताप हरे तपता यह जंगल।
जप अन्तस में चैन छिपा है, मर्जी सागर वही हुआ है।
जाने लहर साथ में सागर, मिट जाती तब सभी गिला है।

120

किसे सुनाये कौन सुनेगा, सुपने सबके यह मन चंचल।
करो भजन हरि जिय सुख पाये, इन नयनों से गिरता है जल।
बहती आंख यहाँ कितनी है, कभी नहीं हो सकती गिनती।
मिटा यहाँ मैं पड़ो हरि चरण , देता ज्ञान वही कर विनती।
जो कभी साथ थे गये कहाँ, परिवर्तन जग की रीति यहाँ।
जीवन धारा बहती जाती, ना पकड़ कूल सच देख यहाँ।
बहता जा जपता जा हरि को, अन्तस में साथ सदा तेरे।
उसको भूले अंखियां रोवे, सुमरन कर उसका वह घेरे।
दो दिन रैन बसेरा है यह, प्यासे प्राणों को अमी पिला।
जप पी ले उसकी मदिरा को, मिट जाते जग के सभी गिला।
जपता जा हरि चैना आये, मन दास उसी का जा तू बन।
ध्यान डोर पर बन कठपुतली, नाचो जानो उसका ही तन।

है। उस बेचारे ने इतना ही कहा था कि मुझे कुछ पता नहीं, कौन चला रहा है। किसको पता है? एक कवि से पूछो – जिसने गीत रचा है – पूछो कैसे बनाया? कहेगा, पता नहीं। एक भाव उठा पता नहीं कहाँ से आया? क्यो आया? न आता तो भी कोई उपाय न था। जिन्हे पता है, वे शायद कहें पता नहीऋ और जिन्हें पता नही है, वे निश्चित उत्तर देंगे। इस भाँति वे अपने अज्ञान को ढांक सकेंगे।

तीन उचक्के एक दुकान पर गये। भीड़ लगी थी, मिठाई की दुकान थी। उस बाजार में सबसे जाहिर और प्रसि(दुकान थी। वे भीड़ में तीनों खड़े हो गये। फिर एक ने कहा कि अब बड़ी देर हो गई रूपया दिये, न मिठाई

121

तुमको मिलने जियरा भटके, मैं किसे कहूँ दिल के बयना।
तू प्रीति तोड़छिप गया कहाँ, निर्मोही बहते यह नयना।
जग की अनजानी गलियों में, मैं भटक रहा कुछ ना सूझे।
अपना तू प्यार मुझे दे दे, प्यासा यह दिल क्यो ना बूझे।
झर झर मेरे बहते नयना, अच्छा लगता इसमे बहना।
बहता जाऊँ मिट जाऊँ मैं, स्वीकार करो मेरा कहना।
तेरी बगिया के फूल बने, अंखियों में तूने नीर भरे।
अपनी तुम कृपा सदा रखना, चल चलकर हम तो यहाँ गिरे।
जीवन दाता जीवन तेरा, कुछ भी तो ना प्रभुजी मेरा।
तू नचा रहा मैं नाच रहा, मै दूर करो तम ने घेरा।
जैसी तूने रचना रच दी, बालक तेरा अज्ञानी मैं।
बहते आंसू स्वीकार करो, विधि और नही कुछ जानूं मैं।

122

जपले रे मन प्यारा छैला, उस बिन रोती रहती अंखियां।
बीतेगी यह काली रैना, जप समझाऊँ पड़जा पैयां।
सकल सृष्टि का मालिक वह ही, याद करे उसको सुख होई।
जीवन दाता जीवन उसका, तेरा क्या बस अंखियां रोई।
जपता जा वह शान्ति निकेतन, मिटते भय पकड़े जब दामन।
कठपुतली हम तो उसकी है, छोड़ो मैं हरि दास बनो मन।
मर्जी उसकी से हम जीते, देता सांस वही हम लेते।
उपजे जो भी ज्ञान करे हम, परिवर्तित सब क्या इठलाते।
जप ले हरि वह शान्ति प्रदाता, जो भी जपता सुख को पाता।
नाम सहारा जो भी लेता, देखे सुपना सब ढल जाता।
कुछ पल खेला जप पा सुख को, कर्ता छूटे रोय न अंखियां।
सारे जग का वही रचैया, लिये जा रहा वह ही नैया।

आती है, न बाकी पैसे वापिस लौट रहे है। उस दुकानदार ने आंख उठाई, उसने कहा, कैसा रूपया! झगड़ा–झांसा शुरू हो गया। वह आदमी कह रहा था कि मैने आठ आने की मिठाई मांगी, आठ आने वापिस चाहिये। न मिठाई मिली है, न आठ आने वापिस मिले है। उसने कुछ रूपया वगैरह दिया नही था। दूसरे उचक्के ने कहा, नहीं यह हो नहीं सकता, क्योंकि यह दुकादर बड़ा ईमानदार आदमी है। ऐसा कभी हुआ ही नही, तू गलती में हैं

बड़ा झगड़ा झांसा मच गया। जब यह सब चल रहा था, तब दूसरे उचक्के ने कहा कि मियां लाला! कहीं इस झंझट में मेरा रूपया मत भूल जाना। अब सेठ जरा मुश्किल में पड़ा कि अगर वह कहे कि तूने भी रूपया

123

बहते आंसू स्वामी तू ही, इस जीवन की धड़कन तू ही।
और न पोछे आंसू कोई, अंधिकारे में दीपक तू ही।
लाज राखना इस मेले में, खो ना जाऊँ फंस तृष्णा में।
मेरे जीवन दास तुम्हारा, राख मुझको अपनी शरण में।
सुखसागर हो कृपा करो तुम, पूछे गिरते नीर कहाँ हो?
खो न जाऊँ नाथ अबल मैं, भीख दया की दो दाता हो।
नयनों से गिरता है पानी, नचा रहा जाती जिन्दगानी।
जान सके ना बना मदारी, सुपना सी सब हुई कहानी।
उठें गीत हरि हरपल तेरे, जीवनदाता तुम जीवन हो।
शाश्वत तुम सब ओर तुही है, क्यो भूला तुम छिपे हुए हो।
दास तुम्हारा जनम जनम का, मिले प्यार चाहे यह जीवन।
मिट जाता तब सारा क्रन्दन, बसते नयनों में रघुनन्दन।

124

पीड़ मिटे ना तुम ना आये, किसको अपना दर्द दिखाऊँ?
घूम रहा मैं यहाँ अकेला, अंखियों से मैं नीर बहाऊँ।
अपना प्यार मुझे तू दे दे, अपने चरणों में तू रख ले।
जीवनदाता जीवन तेरा, बसो नयन इस सुख को जी ले।
लिये सहारा चलता तेरा, बन जा दीपक मेरे पथ में।
अज्ञानी मैं कुछ ना जानूं, घूम रहा अंधी गलियों में।
प्रीति बढ़ा दे ऐसी प्रियतम, पाऊँ गोद पतंगा बनकर।
तुम बिन मेरा जिय ना लागे, देखो नयना झरते झर झर।
तुम बिन कृपा न होवे कुछ भी, इन सुपनो का सृष्टा तू ही।
दीप जले मिटता अंधियारा, ज्ञान जगे मैं ना सब तू ही।
बन बन्शी स्वर तेरे गाऊँ, बहे नीर तुझ चरण चढ़ाऊँ।
बल इतना मुझ को दे देना, नयनों में मैं तुझे बसाऊँ।

नहीं दिया, तो यह सारी भीड़ ही मेरे खिलाफ हो जायेगी, कि तुम्ही एक सेठिया संरफ सारी दुनिया चोर बेईमान! और यह आदमी तो बड़ा भला आदमी है, यह तो कह ही रहा है कि सेठ बड़ा भला आदमी है, ईमानदार हैऋ यह कभी ऐसा कर ही नहीं सकता है।

इसके पहले कि वह कुछ बोले, तीसरा उचक्का बोला कि यह तो ठीक है, इनका तो रूपये रूपये का मामला है, मेरा पाँच का नोट है। उस सेठ ने सोचा कि अब जल्दी ही हाँ कह देना ठीक है, नही तो यह पूरी भीड़ खड़ी है, कोई कुछ भी कहने लगे, कोई सौ का ही नोट बताने लगे। उसने कहा, भई बिल्कुल ठीक हैऋ तुम तीनों ले लो। मुझसे भूल हो गई है।

125

दिन आता है दिन जाता है, देखूं संदेश क्या लाता है?
कितने ही बीते जनम यहाँ, चाहत ले ले यह जीता है।
चलता ही रहता चक्र यहाँ, लिखता नित नई कहानी है।
सुख दुख का पहिया घूम रहा, बहता आखों से पानी है।
क्या इंतजार लीला हरि की, धारा हरि की इसमें बह ले।
जाये ले जैसे हरि मर्जी, विश्वास उसी पर कर जी ले।
बस में अपने क्या कठपुतली, उपजे जो ज्ञान वही होता।
थोड़ा सा जीवन मिला यहाँ, हरि भूल यहाँ पर तू रोता।
जाना जिसने हरि नाम लिया, ले जावे नैया कर्ता वह।
हरि जप हरि को ही नयन बसा, दुख मिटते है दुख हर्ता वह।
बहते आंसू हरि चरण चरण चढ़ा, इनसे लिख लिख भेजो पाती।
हरि ध्यान निरन्तर बना रहे, दीपक जलता फिर बिन बाती।

126

छिप गये बीच मझधार छोड़, फिर भी आशा ले जीते है।
नयनो से बरस रहे आंसू, दिन रात इसे हम पीते है।
जैसा राखे मर्जी तेरी, पर अपना प्यार सदा देना।
तुझमें ही मेरी सुरति रहे, ना कभी हटे तुमसे नयना।
अज्ञानी पर बालक तेरा, तुझ कृपा बिना ना चल पाऊँ।
पूजा की थाली भी खाली, फिर भी चलता मैं शर्माऊ।
बहते आंसू स्वीकार करो, इतनी सी बस मेरी पूजा।
जग में न इनका मोल कोई, पर तुम सा और नहीं दूजा।
अंखियां मेरी फिर क्यों रोई, जीवनदाता पालक तू ही।
तपती गलियां दे दे छैयां, दुख दूर करो कर्ता तू ही।
कठपुतली हम तो तेरी है, तू नचा रहा नाचे है हम।
मुरझाई बगिया खिल जाये, तू देख हमें ले आंखे नम।

एक बड़ी प्रसि(ईसाई महिला हुई– थैरेसा। गरीब भिखारिन थी। और एक दिन उसने अपने गांव में घोषणा की कि मैं जीसस के लिये एक बड़ा चर्च एक बड़ा मंदिर बनाना चाहती हूँ । लोगो ने पूछा, तेरे पास सम्पत्ति कितनी है! तो उसने दो पैसे अपनी जेब से बताए कि मेरे पास दो पैसे हैं लोग और भी हँसे। उन्होने कहा कि तू पागल हो गई है। दो पैसों में कहीं चर्च बना है? उसने कहा वह तो मुझे भी मालूम है। लेकिन मै अकेली नही हूँ॥ परमात्मा भी मेरे साथ है। जिस जगह उसने खड़े हो कर यह बात कही थी वहाँ आज दुनिया का सबसे सुन्दर चर्च है।

127

मर्जी हरि की सब चले यहाँ, जो होना है वह ही होना।
जप जग के दन्श सतावे ना, हरि दास यहाँ बनकर रहना।
कर्ता भर्ता हर्ता वह ही, कुछ पल खेलें कुछ बस नाही।
हरि जप देवेगा ज्ञान वही, ना भुला कभी अन्तस वह ही।
नैया को पार लगावेगा, बहता जा हरि की धारा में।
सुपना सा सब बीता जाता, दुख से ना रोयेंगे नगमे।
हरि जप विश्वास करो उसपर, न उससे बढ़कर कोई नहीं।
दुख के बादल फट जाते है, आता है हमको याद वही।
सब ओर गूंजती उसकी धुन, हरि जप कट जायेगी रैना।
सुख सागर मन ना कर मैला, बरसे अमृत उसको पीना।
सिर रख मन हरि के चरणों में, उलझे क्यों पल सुख से बीते।
हरि नाम जपो पत्थर तिरते, अज्ञानी भी ज्ञानी होते।

128

जैसा राखे हरि की मर्जी, मन मांग प्यार अंखियां बरसी।
सुख पावे मन जप हरि का बन, बरसे अमृत काहे तरसी।
जप ले हरि तेरे संग सदा, उसको भूला तू हुआ जुदा।
कठपुतली हम तो है उसकी, हरि हाथ डोर जप उसे सदा।
उस बिन न और कोई देखे, जाने ना कर्मों के लेखे।
हरि मांग कृपा बन जा बन्शी, उठते स्वर उसके ही देखे।
आये जग में हम कौन यहाँ, नाचे कुछ पल फिर नहीं यहाँ।
बहती अंखियां क्यों ना देखे, जप ले सुख सागर हरि जहाँ।
झुक जा तू मन हरि के आगे, सब टूट रहे जग में धागे।
ना कूल पकड़ आवे कोई, बहता जा जप क्यों ना जागे।
जप प्रीति बढ़ा प्यासी दुनिया, इसको तरसे रोवे अंखियां।

एक बड़ा वनस्पति शास्त्री एक पहाड़ की कंदरा में खिलने वाले फूलों का अध्यन करना चाहता था। वह बड़ी गहरी खाई खड्ड में थे। कोई उपाय न देख कर उसने अपने छोटे बटे की कमर में रस्सी बांधीऔर उसे खड्ड में लटकाया। उससे कहा कि तू कुछ फूल उखाड़ लाना। वह बड़ी खुशी से लटका। उसने तो खेल समझा। और जब बाप लटका रहा हो तो बेटे को क्या फिकर! वह तो बड़ा आनंदित हुआ। उसने तो नीचे जा कर फूल भी इकट्ठे कर लियेॠ लेकिन बाप के हाथ पैर कंप रहे थे। भेजा तो है बेटे को, लेकिन वह खतरनाक काम है। लौटेगा जिन्दा? उसने ऊपर से चिल्लाकर पूछा, कोई तकलीफ तो नहीं है? कोई घबड़ाहट तो नहीं हो रही है तुझे? उसने कहा

शाश्वत से जाये जुड़नाता, मिटते भय सब उससे आता।
हरि हरि गा प्यारा गीत यही, कितना भटको मन ठौर यही।
दो दिन का रैन बसेरा यह, जपो चैन मिले जाये कहीं।
दी चोंच वही चुग्गा देगा, दीपक बन पथ दर्शायेगा।
जप दिल की पीड़ मिटायेगा, नैया तेरी ले जायेगा।

129

हरि ध्यान निरन्तर बना रहे, छवि नयनो मे जब बस जाती।
जग के फिर दन्श सताये ना, दीपक जलता फिर बिन बाती।
स्वीकार करो उसकी मर्जी, बस कुछ भी नहीं यहाँ तेरा।
उपजे जो ज्ञान वही होता, ना भूल यहाँ क्षण भर डेरा।
जपता जा मन रोवे अंखिया, मिल जायेगा प्यारा सैयां।
जिसने भी उसका नाम लिया, मिल जाती है उसको छैया।
प्यासे है प्राण पिला ले जल, अंखियां बरसे जैसे सावन।
सुमरन उसका ही करता जा, दुख दूर करे खिलता जीवन।
किसने जाना उसका उद्‌गम, बह ले इसमें मिटती पीड़ा।
ले जायेगा तेरी नैया, हरि हरि जप ले हरि की क्रीड़ा।
बह नचा रहा हम नाच रहे, कठपुतली हम तो हैं उसकी।
मैं मिटा यहाँ जपो हरि जहाँ, बनो दास हरि चलती उसकी।

130

जायेगे कहाँ न पता हमें, बहता अंखियों से पानी है।
अपना यह दर्द कहें किससे, सुन ले तू अन्तर्यामी है।
गिर गिर उठे चाहत को लिये, मंजिल न मिली भटके जग में।
दे ज्ञान मुझे मिल जाये घर, देखो रोते मेरे नग में।
तेरी लीला तू ही जाने, दे प्यार मुझे ओ दीवाने।
थक करचरणों में प्रभु आया, सुन लो विनती क्यों ना माने।

घबड़ाहट कैसी! जब रस्सी मेरे बाप के हाथ में है, तो घबड़ाहट कैसी?

एक कहानी है न्यूयार्क के सबसे बड़े चर्च में प्रधान पुरोहित अपने प्रवचन की तैयारी कर रहा है कि उसके शागिर्द ने दौड़ कर उससे कहा कि सनुो, क्या कर रहे हो? कौन आया है, पीछे तो देखो! देखा तो जीसस! वेदी के सामने खड़े है! प्रधान पुरोहित भी घबराया। ऐसा कभी हुआ न था। शगिर्द ने पूछा कि क्या करूँ, कुछ आज्ञा? तो बड़े पुरोहित ने कहा एक काम कर, कि वह जो दान की पेटी है, उस पर बैठ जा । यह आदमी पता नही किस तरह का है, लगता है कि पेटी न ले भागे।

एक यहूदी लोक कथा है। एक फकीर

दे दे मन्दिर का कोना तू, धक धक करता मेरा जियरा।
तेरी बन्शी बन गाऊँ स्वर, बन जाऊँ मैं सेवक तेरा।
जीवन दाता कर माफ खता, नाजानूं खता पुरानी है।
डगमग करती इस नौका को, तू पार लगा दे स्वामी है।
मैं अबल कोई विधि न जानूं, बहते आंसू स्वीकार करो।
जीवन की तपस मिटे सारी, करूणाकर अपनी कृपा करो।

131

कितना तड़फे कितना रोये, ना दर्द मिटा कैसे जीयें?
दो प्यार मुझे खिल जाये दिल, प्यासा हूँ जल दे आस लिये।
जाने ना कुछ तू भी है चुप, अंधियारा मुझे डराता है।
बन जा केवट इस नौका का, तू ही सब खेल रचाता है।
जीवन दाता जीवन तेरा, कठपुतली सदा तुम्हारी हूँ।
नयनों से अपने दूर न कर, देखो कैसे मैं रोती हूँ?
करूणा सागर तुम कहलाते, आंसू से हम को नहलाते।
ना रूठ कभी मुझ से जाना, चरणों में तेरे हम पड़ते।
दो दिन का रैन बसेरा यह, अंखियों से गिरता रहता जल।
स्वीकार करो मेरी पूजा, बल तेरा मुझ में कुछ ना बल।
सुमरन तेरा हरि सदा रहे, तुझ में ही बढ़ती प्रीति रहे।
पाऊँ मैं प्रीति पतंगा बन, ना मिटने का गम कभी रहे।

132

हरि अपनी कृपा सदा रखना, देखो मेरे बहते नयना।
मैं दास तुम्हारा जन्मों का, अपने मन्दिर का दे कोना।
मुरझाये दिल का फूल खिले, तुम प्रीति बूंद को बरसाओ।
सुमरन तेरा मैं सदा करूँ, नयनों में मेरे बस जाओ।
अज्ञानी मैं बालक तेरा, ना इसको भूल कभी जाना।

किसी बंजारे की सेवा से बहुत प्रसन्न हो गया। और उस बंजारे को एक गधा भेंट किया। बंजारा बड़ा प्रसन्न था गधे के साथ। अब उसे पैदल यात्रा न करनी पड़ती। समान भी अपने कंधे पर न ढोना पड़ता और गधा बड़ा स्वामी भक्त था।

लेकिन एक यात्रा पर गधा अचानक बीमार पड़ा और मर गया। दुख में उसने उसकी कब्र बनाई, और उस कब्र के पास बैठकर रो रहा था कि एक राहगीर गुजरा। उस राहगीर ने सोचा कि जरूर किसी महान आत्मा की मृत्यु हो गई तो वह भी झुका कब्र के पास। इसके पहले कि बंजारा कुछ कहे उसने कुछ रूपये कब्र पर चढ़ाये। बंजारे को हंसी भी आई। लेकिन तब उस भले आदमी की श्र(ा को तोड़ना भी ठीक मालूम न पड़ा।

पूजा की खाली थाली में, क्या दूँ कुछ भी ना है अपना।
दो नीर गिरे करते पूजा, देखो इनको ना मैं दूजा।
मर्जी तेरी हम घूम रहे, दे प्यार हमें दिल में बस जा।
तेरी बगिया में यहाँ खिले, तू ही तो है मेरा माली।
पा प्यार तुम्हारा खिलते हैं, तुम बिन ना लगती है लाली।
चल चल हारा सब जगह छिपा, ऐसी मदिरा तू मुझे पिला।
पा प्रीति पतंगा बन जाऊँ, ना कोई मुझको रहे गिला।

133

कल का सूरज क्या खबर दे, जप ले मन तू प्रीति कर ले।
जप उसे मिट जायेगे गम, न और कोई ताप हर ले।
जप ले मन सबका सहारा, भूल उसको काहे हारा।
आये जगत उसकी मर्जी, जायें जब न और चारा।
जपो हरि प्यारा है छलिया, प्रीति बढ़ती खिलती कलियां।
जायेगी नौका कहाँ पर, जाने ना कुछ वह रखैया।
जपो हरि उसकी ही दुनिया, खेले कुछ पल बहे अंखियां।
छूट रहे सारे सहारे, गिर चरण ले जाये नैया।
स्वर उसी के बन जा बन्शी, नाच ले कठपुतली उसकी।
मर्जी उसकी वह नचावे, छोड़ कर मैं हो जा उसकी।
डोरी पर मन ध्यान कर ले, हाथों तेरे क्या सुमर ले।
वह ही देखेगा बहे जल, और नहीं कोई समझ ले।

134

ना चले तेरे इशारे, स्वर मिला ले वही तारे।
जाती ले उसकी धारा, सब मिटे भय जो पुकारे।
हरि जपो पावन है गंगा, मैल कटते मन हो चंगा।
नाम हरि का ही सहारा, मन करेगा फिर ना दंगा।
बहे जा तू लहर बन कर, ना पता जाये कहाँ पर।

और फिर उसे यह भी समझ में आया कि यह तो बड़ा उपयोगी व्यवसाय हो गया।

फिर वह उसी कब्र के पास बैठकर रोता, यही उसका धंधा हो गया। लोग आते, गांव गांव खबर फैल गई कि किसी महान आत्मा की मृत्यु हो गई, और गधे की कब्र किसी पहुँचे हुए फकीर की समाधि बन गई। ऐसे वर्ष बीते, वह बंजारा बहुत धनी हो गया।

एक दिन जिस सूफी साधू ने उसे यह गधा भेंट किया था वह भी यात्रा पर था और वह भी उस गांव के करीब से गुजरा। उसे भी लोगों ने कहा, एक महान आत्मा की कब्र है यहाँ, दर्शन किये बिना मत चले जाना। वह गया। देखा वहाँ उसने इस वंजारे को बैठा, तो उसने कहा, अरे! किसकी कब्र हैयह? और तू यहाँ बैठा क्यों रो रहा है? उस बंजारे ने कहा,

मर्जी हरि जग में आया, न चले वश जाये उस घर।
हरि जपो जपते रहो मन, ना कभी बैचेन हो मन।
प्रीति कर ले बरसे अमृत, जप उसे सांचा वही धन।
सुख से जाये बीत यह पल, जप उसे उसकी कहानी।
कुछ पलों की जिन्दगानी, बह रहा नयनों से पानी।
जी रहे अज्ञान में हम, ज्ञान की बाती जलाये।
मन सुमर वह ही ठिकाना, उस बिना ना चैन आये।

135

दिल क्यों न भजन में लगता है, देखे क्यो ना सब मिटता है?
आनी जानी इस दुनिया में, जप चैन उसी से मिलता है।
जैसी रचना रच दी हरि ने, क्या इसके पार हुआ कोई ?
स्वीकार करो हरि की मर्जी, उपजे जो ज्ञान वही होई।
हरि हरि जपले जग परिवर्तित, क्यों सोच सोच होता चिंतित।
सब छोड़ रहे तन ना अपना, किसको करना है फिर निंदित।
हरि हरि जप ले जाये नौका, मैं छोड़ नहीं कोई दूजा।
सुख दुख की आंख मिचौनी में, बहते आंसू करले पूजा।
यहाँ आदि अन्त कुछ न जाने, तू देख स्वयं ना पहचाने।
बहती धारा में तू जा मिल, पी ले अमृत जप दीवाने।
कठपुतली बस तेरा कितना, पथ मिलता है तो चलता है।
जप प्रीति बढ़ा हरि चैन मिले, संग अन्तिम पल तक रहता है।

136

चल वहाँ ऐसी जगह पर, गीत हरि के बज रहे हो।
सौंप दे पतवार हरि को, तू नहिं बस हरि के स्वर हो।
जप मिटा दे तू स्वयं को, देखे वह जिसकी दुनिया।
वह नचाता नाच ले तू, बस न अपना छले छलिया।
नाचता सागर यहाँ है, जोर न लहरों का कुछ मन।

अब आपसे क्या छिपाना, जो गधा आपने दिया था उसकी कब्र है। जीते जी भी उसने बड़ा साथ दिया, मर कर भी और ज्यादा साथ दे रहा है। सुनते ही फकीर खिलखिला कर हँसने लगा। उस बंजारे ने पूछा, आप हँसे क्यों? फकीर ने कहा, तुझे पता है, जिस गांव में मैं रहता हूँ वहाँ भी पहुँचे हुए महात्मा की कब्र हैं उसी से तो मेरा काम चलता हैं वह किस महात्मा की कब्र है, तुझे मालूम है? उसने कहा मुझे कैसे मालूम, आप बतायें। उसने कहा, वह इसी गधे की माँ की कब्र है।

एक सम्राट अपने बेटे से नाराज हो गया तो उसे निकाल दिया राज्य के बाहर। मजदूरी कर न सकता था। कोई कला कौशल आता न था तो वह

दास तू बन जा उसी का, जो नचावे गम मिटे मन।
जप उसे वह ही सहारा, और ना कोई किनारा।
हरि चरण में शीश रख दे , जाती ले उसकी धारा।
जपो दिल का चैन है वह, मन तड़फता ठौर है वह।
जब डराये रैन काली, जपो उसको दीप है वह।
प्रीति जो हरि से बढ़ाये, सुमन हिया खिलता जाये।
स्वप्न सा सारा जहाँ है, जप सुखद पल गुजर जाये।

137

ध्यान हरपल हो तुम्हारा, बन सकूं तेरा दुलारा।
बहता नयनों से पानी, जाती ले तेरी धारा।
जी रहा अज्ञान में मैं, ज्ञान की बाती जला दो।
तम यहाँ फैला घना है, कर कृपा पथ को दिखा दो।
छोड़ कर मझधार में तुम, छिप गये आवे न चैना।
देख लो बहते नयन है, दूर न अपने से करना।
रूठ ना जाना कभी तुम, तुझ कृपा बिन चल न पाये।
नाथ हम तुमको मनायें, नयन बहते हैं बुलायें।
दास मैं तो हूँ तुम्हारा, प्यार दो न मुँह को फेरो।
जाये मिट जो ताप घेरे, नयन में तुम बसो मेरे।
चरणों की रज दे अपनी, देख न थी मेरी गलती।
जिन्दगी की शाम ढलती, प्यार चाहूँ करूँ विनती।

138

स्वप्न सी सारी कहानी, बहता आंखों से पानी।
सुख दुखों का खेल दुनिया, मैं मिटा जप हरि कहानी।
जो बनाया बन गये हम, चलते पर उसका ही दम।
नाव जाये किस जगह पर, जाने ना आंखें है नम।
शूल सह ले मन भजन कर, जो उपजता ज्ञान कर ले।

राजपुत्र भीख मांगने किसी दूर की राजधानी में गया। उसका पिता बूढ़ा हुआ। पछताने लगा बाप। अब मौत करीब आती है, अब कौन मालिक होगा इस साम्राज्य का? बुरा भला जैसा था, उसने अपने बजीर भेजे कि उसे खोज लाओ। जिस दिन वजीर उस गांव में पहुँचे, जहाँ वह भीख मांग रहा था, एक टूटे से ठीकरे में एक छोटे से होटल के सामने। राजमहल से आया रथ रूका, वजीर उतरा और उसके पैरों पर गिर गया, और कहा कि आप चले, पिता ने याद किया है। अभी उस भिक्षापात्र में जो कुछ थोड़े से पैसे पड़े थे– एक एक पैसे को मांग रहा था, उसने भिक्षापात्र उसी समय नीचे गिरा दिया। उसकी आवाज बदल गई। उसने कहा कि जाओ, मेरे लिये ठीक वस्त्रों का

बस कितना खेला तेरे, लख विवशता उसे जप ले।
हरि जपो वह ही किनारा, जाती ले उसकी धारा।
जप बरसता पी ले अमृत, जान ले मन शान्ति द्वारा।
कुछ पलों का है बसेरा, टूटता न दुख का घेरा।
हरि जपो वह ही सहारा, बनो लहर उसकी धारा।
जपो हरि हरि जपो हरि हरि, हरि रचना रच दी तेरी।
दास बन हो जा समर्पित, पाये सुख करो न देरी।

139

टूटे फूटे शब्द लिखूं मैं, पीड़ा अपनी किसे कहूँ मैं?
तुम ना देखो जियरा रोवे, गिरते आंसू चरण चहूँ मैं।
जग के स्वामी अन्तर्यामी,)षि मुनि सब करते हैं पूजा।
गिर गिर चल कर फिर भी आऊँ, और न कोई तुम सा दूजा।
ले चल पार करा दे नदिया, पार छिपा क्यों छिप कर छलिया।
धुन तेरी सुन कर नाचूं मैं, दन्श मिटे सब पड़ता पैंया।
लहरें भागी जाती देखूं, आवे हाथ न जिय दुख पावे।
जीवन तेरा कठपुतली मैं, इतनी बात समझ न आवे।
जप हरि हरि मन ज्ञान वही दे, कर्ता ना तू सत्य समझ ले।
मर्जी उसकी खेल रहा है, बस ना अपना जब जाये ले।
हरि हरि जप प्यारा है छलिया, बरस रही हैं देखो अंखियां।
ताप हरे सेवक हरि बन जा, मिल जायेगी उसकी छैयां।

140

मेरे मांझी भूल मुझे ना, बहता इन नयनों से पानी।
पथ में बैठा बाट निहारूँ, बीत न जाये यह जिंदगानी।
बरसे अंखिया सुन लो मेरी, तुम रीझो वह गीत सुनाऊँ।
लाली लागे ना तेरे बिन, तुम बिन कहो कहाँ मैं जाऊँ?
मुरझाई बगिया खिल जाये, जिसके जीवन में तू आये।

इंतजाम करो। और जब वह बैठ गया रथ पर, तो उसके आंखो की चमक .... एक क्षण में सारा भिखमंगापन खो गया।

एक दिन मुल्ला की पत्नी ने मुल्ला से कहा, अब बहुत हो गया, अब तुम खोजो, लड़की के लिये लड़का खोजना है। अब इस साल खाली नही जाना चाहिये। मुल्ला ने कहा कि क्या करूँ, खोजता हूँ, लेकिन गधों के अतिरिक्त कोई मिलता नहीं! तो पत्नी के मुंह से सच्ची बात निकल गई। उसे कहा, अगर ऐसे ही मेरे पिता भी सोचते रहते तो मैं अनव्याही ही रह जाती।

एक अंधा अपने मित्र के घर से विदा हो रहा था। मित्र ने कहा, अमावस की रात है रास्ते

दास तुम्हारा जनम जनम का, नाथ शरण में तेरी आये।
कठपुतली तेरी नाचूं मैं, अपनी कृपा बनाये रखना।
बहते इन नयनों से आंसू, अपना प्यार सदा तुम देना।
पिव पिव रटूं तुही है प्यारा, तेरा ही बस नाम सहारा।
कर्ता भर्ता हर्ता तू सब, नयन बहाते देखो धारा।
बहता जाऊँ लहर बना मैं, तेरी धारा नहीं किनारा?
बस जाओ मेरे नयनों में, सभी ओर तू मैं क्यों हारा?

141

कितने है मजबूर यहाँ हम, इन नयनों में आंसू आये।
करो भजन मन हरि सुखदाता, वही ज्ञान की ज्योति जलाये।
सुपना सा सब बीता जाता, जप उसको वह भाग्य विधाता।
जैसी रचना रच दी उसने, कर्ता बन तू क्यों दुख पाता।
जप उसको भय दूर करेगा, नैया तेरी पार करेगा।
जप ले छिपा इसी में अमृत, जप ले सारे ताप हरेगा।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, जप ले छिपा हुआ वह छलिया।
वह सुखदाता कष्ट मिटाता, और न कोई पड़ जा पैयां।
जप ले कट जाये यह रैना, इस जग से क्या शिकवा करना।
घूमें सब अपनी गाथा ले, चंचल मन ना माने कहना।
दुर्दिन के बादल जाते छट, जपले मन वह शान्ति प्रदाता।
मिटता तम जप दीप जले जब, केवट बन वह पार लगाता।

142

सुख दुख का है खेल जगत में, जब तक इस जग में रहना है।
हरि का नाम जपो वह सांचा, अन्तिम पल तक संग रहना है।
जप ले पीड़ मिटेगी दिल की, देखो संध्या ढलती जाती।
लग जाये लौ जब हरि में मन, बिन दीपक बाती फिर जलती।
जपो नाम हरि बन ना पागल, सारी दुनिया है यह जंगल।

में कोई दुर्घटना न हो जाये तुम हाथ में यह कंदील लिये जाओ। उस अंधे ने कहा, मुझे क्या फर्क पड़ता है, कंदील हाथ में हो या न हो! अंधेरा अंधेरा है। मैं अंधा हूँ कंदील क्या करेगी?

लेकिन उस मित्र ने तर्क किया कि कंदील की रोशनी तुम्हारे हाथ में रहे गी तो दूसरा तुमसे टकरा न सकेगा। यह तर्क अंधे को भी जंचा, वह कंदील ले कर गया। कोई दस–पाँच कदम ही गया था कि कोई उससे आ टकराया उसे कहा, क्या मामला है? क्या तुम भी अंधे हो? हाथ में कंदील है मेरे, दिखायी नही पड़ती? उस दूसरे आदमी ने कहा कि महानुभाव, आपकी कंदील बुझी हुई है।

विधि ने जो भी लिखी कहानी, स्वीकारो वह बनो न चंचल।
तू है लहर नचाता सागर, ले जाये सब उसकी मर्जी।
जप ले उपजे ज्ञान यहाँ जो, अपना ना कुछ उसकी मर्जी।
कट जाये रैना मन जप ले, पी ले अमृत बरस रहा है।
दो दिन की जिंदगानी है यह, फंस तृष्णा में तड़फ रहा है।
चलती रहे सदा यह दुनिया, जप ले प्यारा है वह छलिया।
मिट जायेगी सभी कहानी, पर ना दुख से रोये अंखिया।

143

क्या खोया क्या पाया हमने, कुछ ना जानूं आंसू आया।
हरि कृपा बिना न खिले कमल, प्रभु दास तुम्हारा दे छाया।
तेरा ही एक सहारा है, गिरते आंसू देखे पथ को।
बल तेरा सब निर्बल हम तो, छिप गया छोड़ तू क्यों हमको?
गिर गिर कर चल उठ लेता हूँ, सुपने नयनों में पाता हूँ।
तेरा होगा दीदार कभी, अरमान लिये यह जीता हूँ।
जीवन की इस पगडण्डी पर, चलता मैं कृपा सदा रखना।
जन्मों जन्मों से भटक रहा, दे अपने मन्दिर का कोना।
जल बिन तड़फे जैसे मछली, ऐसा जीवन भी क्या जीवन?
तुम बिन यह सांसे आती क्यों, बस जाओ नयनों में मोहन।
बीती जाती जीवन घडियां, कैसे खोजूं तुमको सैयां?
हरि प्यार तुम्हारा मिल जाये, सुख से यह पार लगे नैया।

144

जलता रहता यह दिल, ना दिल लगा सके हम।
ऐसा तो न किया जो, छिपे हो आंख है नम।
किसे कहेंगे अपना, जब संग छोड़ा उसने।
जग प्रीति ना करे मन, कितने टूटे सुपने।
कैसे तुझे मनायें, नहीं जानते विधि वह।

बड़ी प्रसि(कथा है कि शिव और पार्वती एक पूर्णिमा की रात विहार पर निकले। स्वभावतः शिव नंदी पर बैठे थे पार्वती साथ साथ चल रही थी। राह से दो आदमी आये और उन्होने कहा, यह देखो, मुस्टंड खुद तो चढ़ा बैठा है बैल पर और स्त्री को नीचे चला रहा है। यह कैसा शिष्टाचार! तो शिव ने पार्वती से कहा, देख मैं नीचे आ जाता हूँ तू ऊपर बैठ जा। शिव नीचे चलने लगे पार्वती नंदी पर बैठ गई। फिर कुछ लोग मिले, उन्होने कहा, देखो, यह औरत पति को नीचे चलवा रही है, खुद चढ़ कर बैठी है। यह कैसा पति, और यह कैसी पत्नी, यह कैसा प्रेम! शिव ने कहा, अब क्या करें? चलो हम दोनों ही बैठ जायें। तो वे दोनो ही नंदी

बहे नयन से आंसू, क्यों देखता नहीं वह।
नयन में प्यार मेरा, न तुमने उसे देखा।
कैसे लगे यहाँ दिल, किस्मत का यह लेखा।
ले दर्द फिर रहे है, कब हो खतम कहानी।
ना भूल हम सके है, न छूटती नादानी।
जायेगे मिट नहिं दुख, सदा रहा मैं प्यासा।
इक बार देख लो तुम, मिट जाये यह आसा।

145

सुपना सी जिंदगी यह, कितने सुपने लेते।
मिटता न दर्द दिल का, नयन से नीर गिरते।
आये जायेगे दुख, जप ले उसे मिले सुख।
सारे भय वह हरता, जप ले न मोड़ तू मुख।
ढल जायेगी संध्या, किसे यहाँ है कहना।
बनता बिगड़ता खेला, जप ले हरि वह चैना।
दो दिन की जिंदगी यह, पड़ जा हरि के द्वारे।
सुखदाता जप हरि को, वह ताप हरे सारे।
उसके समझ इशारे, दे ज्ञान वही कर ले।
छंटते दुख के बादल, उसका सभी समझ ले।
मन ध्यान कर उसी का, ले जाता वह नौका।
पी ले बरसता अमृत, न खो मिला है मौका।

146

कैसी नियति हमारी, न हो सके तेरे हम।
आंसू लिये नयन में, चल रहे पर नही दम।
संध्या न बीत जाये, कैसे तुझे पुकारे।
देखो नयन उठा कर, द्वार खड़ा तुम्हारे।
जो भी रचना रच दी, चले ही जा रहा हूँ।

पर सवार हो गये। कुछ लोग मिले, उन्होने कहा, इन मूर्खो को देखो, नंदी को मार डालेंगे। दोनो के दोनो चढ़े है। यह कोई ढंग हुआ। आखिर पशुओं पर भी कुछ दया होनी चाहिये। तो शिव ने कहा, अब तो एक ही उपाय है। वे दोनो उतर गये और उन्होंने कहा, अब नंदी को हम अपने कंधो पर उठा ले। नंदी को बांध कर डडों में कधों पर रख कर चले। बड़ा मुश्किल था। फिर कुछ लोग मिल गये। उन्होने कहा, ये पागल देखो, अच्छा भला नंदी, उस पर बैठ कर यात्रा कर सकते थे, पर उसको कंधे पर लाद कर चल रहे है। तो शिव और पार्वती दोनो खड़े हो गये और उन्होने कहा, अब हम क्या करे? जो जो कहा लोगों ने हमने किया। अब तो कुछ करने को बचा नहीं। नंदी भी घबरा गया लटका लटका।

दिल की चुभन न मिटती, अश्रु से सीचंता हूँ।
कठपुतली तुम्हारी, न मुझसे रूठ जाना।
बह रहे नयन देखो, अपनी किरपा रखना।
कैसे तुझे मनाऊँ, नही जानता विधि को।
अश्रु तुम्हें दिखाकर, देता हूँ दुख तुमको।
तेरा मुझे सहारा, जा रही लिये धारा।
बसो मेरे नयन में, चाहूँ बनूं दुलारा।

147

चलने को चला चल न पाया, क्यों पड़ा हाय दुख का साया।
हरि तेरी कृपा बिन कुछ न हो, जी भर रातों में मैं रोया।
जीवन दाता जीवन पालक, अपना तुम प्यार सदा देना।
तुम बिन ना हम चल पायेंगे, देखो मेरे बहते नयना।
डरता रहता मेरा जियरा, ले चल यह पार करा नदिया।
बस नाम सहारा तेरा है, मुंह फेर न रोती है अंखियां।
छिपे कहाँ तुझे खोजूँ कहाँ, कण कण में वास तुम्हारा है।
बिन बाती जलता दीप यहाँ, जब तेरा मिले सहारा है।
सुपना दुनिया सुपने में भी, यह मन इतना चंचल है क्यों?
मृगतृष्णा में फंस रोता है, जाना हरि घर हरि भूला क्यों?
हरि हरि जप मन कर्ता न बन, दे ज्ञान वही अपना न तन।
चलती उसकी वैसे जी ले, सुख पाये दास उसी का बन।

148

जाये लहर कहाँ पर, न ज्ञान बस है बहना।
ऐसा यहाँ सफर यह, बह संग हरि सुमरना।
सुख दुख का है खेला, मिले ज्ञान हरि मर्जी।
अपने न हाथ में कुछ, ले जाये हरि मर्जी।

उसने जोर से लातें फड़फडायी, वह नदी के नीचे। पुल पर से जा रहे नदी में गिर गया।

एक भिखमंगा एक गांव की सड़क पर नियमित रूप से भीख मांगता था। तगड़ा भिखमंगा था। भिखमंगो की भी अपनी अपनी सीमा होती है। उसकी सीमा रेखा में कोई दूसरा भिखमंगा नही आ सकता था। उनका भी साम्राज्य होता है– भिखमंगो का भी! लेकिन एक दिन किसी ने देखा वह भिखमंगा किसी दूसरी सड़क पर भीख मांग रहा है। तो उसने पूछा अरे! वह पुरानी जगह छोड़ दी? क्योंकि वह पुराना मुहल्लां तो धनपतियों का मुहल्ला था और ज्यादा भीख मिलने की सम्भावना थी। उसने कहा, छोड़ नही दी, मेरी लड़की का विवाह हो गया,

जप संग प्यारा छलिया, बीते सुख से घड़ियां।
उसकी सब है माया, पड़ो उसी के पैंया।
दुख को हरे सभी वह, मन मैल धुले सारा।
जग प्रीति ना करे मन, बहे न आंसू खारा।
लहर उठाता सागर, नाचे उसमें लहरें।
जोड़ो इससे नाता, जीवन राहे संवरे।
जपो नहीं हो पागल, लहर बना तू बह ले।
दुख मिटते हो मंगल, जप प्रीति हरि बढ़ा ले।

149

बालक हम तुम्हारे, क्यों दे रहा सजा है।
आ गये हम यहाँ पर, जायेगे न पता है।
न रूठ मुझसे जाना, तुम बिना कुछ न अपना।
विनती मेरी सुन लो, दे हमें प्यार अपना।
इतनी विशाल दुनिया, क्यों छलता है छलिया।
जाऊँ कहाँ बता दे, रोती मेरी अंखियां।
तुम बिन न ठौर कोई, ना भूल आँख रोई।
बसो नयन में मेरे, सब ओर तू न कोई।
ना बिन कृपा मिलन हो, कण कण में तू रमा है।
नयन गिराते मोती, खोंजे कहाँ छिपा है।
स्वीकार करो पूजा, दास हरी तुम्हारे।
न और कुछ है आंसू, खड़ा मैं देख द्वारे।

150

बीतेगी कैसे रातें, तुझे हम बुलावे सैंया।
लगता नहीं मेरा दिल, आ जाओ प्यारे रसिया।
नयनों में मेरे आंसू, यह सांसे तुझे पुकारे।

उसको दहेज में दे दी, उसके पति को।

एक सम्राट ने राह पर एक भिखारी को देखा। दूर है गांव। सम्राट को दया आ गई और भिखारी को कहा। तू भी आ, रथ में बैठ जा । वह भिखारी बैठ तो गया, लेकिन अपनी पोटली जो सिर पर रखे था, सिर पर ही रखे रहा। सम्राट ने कहा पोटली नीचे रख दे, अब इसको सिर पर क्यों रखे है? उसने कहा कि नहीं मालिक, इतना ही क्या कम है कि आपने मुझे बैठने दियाऋ अब पोटली का बोझ भी आपके रथ पर रखूं! नहीं, नही, ऐसा मैं कैसे कर सकता हूँ! लेकिन तुम रथ पर बैठे हो, पोटली सिर पर रखे हो, बोझ तो रथ पर ही है, चाहे सिर पर रखो या नीचे रख दो!

मुझसे ना मुख को मोड़ो, तुम देखो हम तो हारे।
देखूं मैं पथ तुम्हारा, कितनी ही सदियां बीती।
आये ना मेरे बालम, बतला मैं काहे जीती।
सब खुशियां मुझ से रूठी, मेरी यह रोती काया।
आ जाओ मेरे प्रियतम, पड़ती मैं तेरे पैंया।
डरता है दिल ना जानूं, मैं कैसे पुकारूं तुमको।
माने जो मेरा सैयां, वही विधि बता दो हमको।
कब से संजोये आशा, नयनों से बहता पानी।
निर्मोही अब तो आ जा, चाहूँ प्यार मैं दिवानी।

151

टूटी वीणा उठा रहा स्वर, आंसू गिरते मेरे झर झर।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, कुछ ना जानूं शीश झुका पर।
अंधियारी रातों में बोलो, कहाँ टिकाऊँ मैं अपना दिल।
करूणा सागर तुम कहलाते, स्वीकारो अंखियों का यह जल।
दुर्गम पथ न कोई किनारा, केवल तेरा नाम सहारा।
अपना प्यार सदा तुम देना, स्वामी हो ब्रह्माण्ड तुम्हारा।
कृपा मिले तो खुशियां आये, वरना यह जीवन मुरझाये।
दास तुम्हारा जनम जनम का, इन नयनों में आंसू आये।
प्रीति बढ़े टूटे भ्रम सारे, बहता जाऊँ नदिया तेरी।
नयनों में मेरे बस जाओ, सुरति रहे तुझमे हरि मेरी।
शरण तुम्हारी बहता पानी, घट घट बसते अन्तर्यामी।
पार लगा दे मेरी नैया, मैं हूँ सेवक तुम हो स्वामी।

152

हरि नाम जपूं बरसे अंखियां, दीदार मिले हम तो तरसे।
मजबूर हुए ऐसे कैसे, जीवन न गुजर जाये ऐसे।
नयनों के नीर पुकारें है, तुम बिन न और कोई द्वारा।

झेन फकीर लिंची से किसी ने पूछा कि तुम्हारी साधना क्या है? उसने कहा– जब भूख लगती है तो खाना खा लेता, जब प्यास लगती पानी पी लेता, जब नीदं आती तब सो जाता। पूछने वाले ने कहा–लेकिन यह तो सभी साधारण लोग करते है! तो लिंची ने कहा– मैं कौन असाधारण हूँ? मैं साधारणों में भी साधारण हूँ। उस आदमी ने पूछा– फिर फायदा क्या है? लिंची ने कहा–फायदा बहुत है, संतुष्ट हूँ। और क्या फायदा?

बु(मर रहे हैं, आखिरी घड़ी आ गई, उनके बोधिसत्त्व उन्हे घेरे हुए है, उनके परम शिष्य उन्हें घेरे हुए हैं, आनन्द रोने लगता है, बु(आँख खोलते है, पूछते हैं– क्यो रोता है? तो आनन्द कहता है– आप चले, अब हमारा क्या

इस मेले में तुम लाज रखो, दुनिया तेरी मैं तो हारा।
प्रभु खड़े द्वार तू उठा नजर, जाये न कहीं यह संध्या ढल।
आशा तुम पर ही टिकी सभी, देखो नयनों से गिरता जल।
आ जा खिल जायेगी बगिया, मेरा सर्जक न भूल मुझे।
नयनों में मेरे बस जाओ, कर रही याद हर सांस तुझे।
खोजे हम खोज नहीं पाये, इस दुनिया में आये जाये।
तेरी लीला ना जान सके, बरसे अंखियां रूक ना पायें।
जलता ही रहूँ बन शमा यहाँ, पर प्रीति पतंगा सी पाये।
चाहूँ तेरा हरि प्यार बढ़े, इन नयनों में आंसू आये।

153

एक बार देखो, विनती यह करते।
जायेंगे खो हम, चलते ही चलते।
बहे दर्द दरिया, नहीं प्यार देखा।
जाने ना हम क्या, किस्मत का लेखा।
तुम पर ही आशा, करता मैं सारी।
मुझे प्यार देदे, शरण मैं तुम्हारी।
ढलती है संध्या, मिटा ताप घेरे।
उठा ले नजर अब, पड़े द्वार तेरे।
कोई ना तुम बिन, सहारा हमें है।
नयनों में आंसू, पुकारे तुझे है।
स्वामी हो जग के, झुका शीश मेरा।
तुम बिन ना द्वारा, मैं दास तुम्हारा।

154

जप ले हरि को बन ना पागल, धुल जायेगा मन का काजल।
सत्य देख ले यहाँ जगत का, जप ले छंटते दुख के बादल।
उसे याद कर अंखियां रोई, कर्ता भर्ता हर्ता वह ही।

होगा? तब बु(ने कहा– 'अप्प दीपो भव,' अपने दीये बनो। मेरे साथ जहाँ तक आ सकते थे, आ गये।

एक शिष्य गुरू के पास पहुँचा। उसने पूछा कि मुझे स्वीकार करेंगे? मैं दीक्षित होने आया हूँ। गुरू ने कहा– पात्रता है? पूछा उस युवा ने: क्या करना होगा? गुरू ने कहा: जो मैं कहूँगा, वही करना होगा। लकड़ी काटना, आश्रम के जानवरों का चरा आना, बुहारी लगाना, भोजन पकाना– सारे काम करने होंगे। उस युवक ने कहा: यह तो जाने दीजिये, यह मुझे जचंता नहीं। गुरू होने में क्या करना पड़ता है? तो उस गुरू ने कहा: गुरू होने में कुछ नहीं। जैसे मैं यहाँ बैठा हूँ बैठ जाओ और आज्ञा देते रहो। तो उसने कहा: फिर ऐसा

जप ले मन हरि प्रीति बढ़ा ले, लिये जा रहा नैया वह ही।
ज्ञान उपजता वह सब उसका, तन अपना ना वह भी उसका।
किस पर पागल गर्व करे मन, मिट जाये दुख हो जा हरि का।
जैसी रचना रच दी हरि ने, बतला दे क्या बस में अपने।
नाचें लहरे कुछ पल खेला, कितने बन बन टूटे सुपने।
सुख दुख का सब खेल यहाँ है, दे विवेक जपो हरि जहाँ है।
नियति खिलाती खेला हमको, कल की किसको खबर यहाँ है।
दे पतवार हरि को अपनी, लिये जा रहा तेरी किस्ती।
कर्ता ना बन झुक चरणो में, बन कर दास करो मन विनती।

155

कितनी करूँ प्रतीक्षा तेरी, आये ना तुम मुझ से मिलने।
निर्मोही बन कर क्या लेगा, अंखियां बरसे टूटे सुपने।
कब से बैठी राह निहारूँ, आयेगा वह मुझसे मिलने।
दुखड़ा यह अब सहा न जाता, मझधारे में छोड़ा तुमने।
आ जा छैला प्रीति बढ़ा ले, अंखियां बरसे नयन लड़ा ले।
जनम जनम की दासी तेरी, तड़फ रही मेरी सुधि ले ले।
सांसे क्यों आती तेरे बिन, लगता नहीं यहाँ मेरा दिल।
अंखियां बरसे मेरी रिमझिम, प्यार मुझे दे खिल जाये दिल।
उठा नजर तू मेरा स्वामी, तुम बिन किसे पुकारूँ बोलो?
मुझे डराये रात अंधेरी, ले बाहों में अंखियां खोलो।
सुखद होय यह जीवन सुपना, मेरे इन नयनों में बसना।
सदा करूँगी पूजा तेरी, अपने दिल से जुदा न करना।

156

हरि हरि जप ले सुखदाई मन, खिलती बगिया मुरझाई मन।
जिसने हरि का नाम जपा है, खिलते फूल बरसता सावन।
जप ले हरि सब उसकी लीला, मिट जायेगी सारी पीड़ा।

करिये, मुझे गुरू ही बना लीजिये। यह जँचता है।

जापान में एक सम्राट सद्गुरू की तलाश में था, बूढ़ा हो गया था। जितने जितने बड़े बड़े नाम थे सब साधुओ के पास गया, महात्माओं के पास गया, ले किन कहीं उसका मन न भरा। उसने अपने बूढ़े बजीर से कहा कि मैं क्या करूँ मेरा मन नही भरता। उस बजीर ने कहा– तुम्हे मिलेगा भी नहीं, क्योकि तुम विशिष्ट की तलाश में हो। जो परम ज्ञानी है, वह सामान्य हो जाता है। यह तुम्हारे सामने जो द्वार पर खड़ा हुआ बूढ़ा है, यही है। इससे मैं तीस साल से सतसंग कर रहा हूँ। और इससे जो मैने पाया है, उसकी तुम्हारे तथाकथित महात्माओं को खबर भी नहीं है। अक्सर ऐसा है कभी तुम्हारे घर में

बरस रहा अमृत को पी ले, संग ले उसको कर ले क्रीड़ा।
देख यहाँ कितने ही सुपने, सुख दुख का खेला है जग में।
ना कर्ता तू कर्ता वह ही, ताप हरे जपता जा मग में।
हरि हरि जप प्यारा है छैला, धोवे मैल न कर मन मैला।
हरि की शरणाई हो जा मन, मिट जाये भय उस का खेला।
प्रीति बढ़ा ले प्यारा छलिया, जप ले अंखिया बरसे झर झर।
जीवन उसका करूणा सागर, देगा वह भर तेरी गागर।
शीश झुका बनो दास हरि के, सुनले अनहद रोवे अंखियां।
पार लगावे तेरी नैया, बन जायेगा वही खिवैया।

157

खोज क्या है चाह क्या है, जल रहा सारा जहाँ है।
बहते नयनों से आंसू, कह रहे दिल की व्यथा है।
मन भजन कर प्रीति कर ले, जाये ले तेरी नैया।
दीखे न कोई किनारा, जपो हरि वह ही खिवैया।
पाप क्या है पुण्य क्या है, धर्म क्या अधर्म क्या है?
सब प्रभु तेरा ही खेला, तम मिटा छिप क्यों गया है?
नाथ मैं तेरी शरण में, बीत जायेगी उमरिया।
मैं अबल हूँ नीर बहते, प्यार की चाह दे छैया।
याद कर जो नीर बहते, चाह बहे जाऊँ सारा।
कह सकूं कुछ भी नहीं मैं, बहता जाऊँ हरि धारा।
नयन में हरि बसो मेरे, जाये मिट सारे सुपने।
तेरी लीला तू जाने, विनय जाये बन दिवाने।

158

हरि कृपा हो दीप जलता, शूल भी है फूल बनता।
मैं शरण में हूँ तुम्हारी, प्यार दो यह नयन बहता।
तू नचाता बन मदारी, नाचूं कठपुतली तेरी।

हो सकता है परम ज्ञानी और तुम बाहर खोजो। तुम्हारे पड़ोस में हो तुम बाहर खोजो। ज्ञान कोई विशिष्ट घटना नहीं है जिस दिन अपनी सामान्यता, सहजता को पहचान लिया उसी दिन घट जाता है।

अस्सी साल की उम्र में लाओत्सू देश का त्याग करके हिमालय की तरफ चला अन्तिम समाधि के लिये! कहते हैं मार्ग में चीन को छोड़ते वक्त चीन की सीमा पर द्वारपालों ने रोक लिया और कहा– ऐसे नही जाने देंगे। जो तुमने जाना है लिख दो, तो बाहर जाने देंगे। सम्राट की खबर हमें आई है कि लाओत्सू भाग न जाए। इस मजबूरी में उन पहरेदारों के तंबू में बैठ कर तीन दिन तक लाओत्सू ने ताओ–तेह–किंग नाम की किताब लिखी। अद्‌भुत

देख ले नजरें उठा कर, नयन से हैं अश्रु जारी।
डोर जब है हाथ तेरे, डरता क्यों करता हूँ गम।
हरि बसो नयन में मेरे, लागे संग मिट जाये गम।
तू सर्जक तूही दाता, भाग्य मेरे का विधाता।
क्यों हुआ बैचेन इतना, ज्ञान दो प्रभु नीर आता।
याद करें भीगी अंखियां, छिप गये क्यों छोड़ मुझको?
दास मैं तो हूँ तुम्हारा, पास में हरि राख मुझको।
अर्चना मेरी अधूरी, ज्ञान न मैं करना पूरी।
शीश चरणों में झुका है, प्यार देगा आस पूरी।

159

आंसू से भीगी अंखियां है, छिप गया कहाँ तू छलिया है।
निर्बल का बल बनता तू ही, प्रियतम प्यारा तू रसिया है।
अंधियारे में दीखे कुछ ना, कर दो प्रकाश जिय घबराबे।
दास तुम्हारा जनम जनम का, देखो नयना आंसू आवे।
करूणा के तुम तो हो सागर, मेरी पार लगा दे नैया।
डगमग सागर में डोल रही, तुमको खोजें मेरी अखियां।
निर्बल मैं अंखियां रोती है, कह छोड़ कहाँ जाऊँ तुमको?
कर सके समर्पण पूरा हम, इतना तो बल दे दे हमको।
निर्मोही कुछ तो अब कह दे, मेरी यादों में तू छाया।
तुम बिन जियरा ना अब लागे, मैं शरण तुम्हारी हरि आया।
जीवन तेरा मालिक तू ही, तू देख हमें हम द्वार खड़े।
बेचैन हुआ दिल डोल रहा, दे प्यार हमें हम पांव पड़े।

160

ना हम होगे निर्मोही सुन, सजती ही रहती मधुशाला।
क्यों बना हुआ है बेगाना, ढ़लती ही रहती यह हाला।
कितने ही आये चले गये, नित फूल खिलाती मधुशाला।

किताब है। पहला ही सूत्र लिखा है– जो कहा जा सकता है, वह सत्य नहीं। मजबूरी में कहना पड़ रहा है। सत्य तो सदा अनकहा रह जाता है।

एक मुसलमान सम्राट कभी कभी एक सूफी फकीर को बुलाया करता था। एक दिन फकीर ने कहा कि कुरान कहती है फकीर कभी सम्राट के घर न जाये। जब जाये तो सम्राट ही फकीर के घर जाये। राग तो लग गया था सम्राट को इस फकीर का। तो वह एक दिन पहुँचा फकीर के झोपड़े पर। फकीर खेत में काम करने गया था। उसकी पत्नी ने कहा, आप बैठ जाये यही मेंड पर, मैं बुला लाती हूँ।

सम्राट ने कहा मैं टहलूंगा तू जा कर बुला ला। पत्नी को लगा शायद

सर्जक तू छिपा कहाँ बैठा, जिय ना लगता आ जा लाला?
बस अपना क्या सब कुछ तेरा, कर माफ खता जो की हमने।
दे प्यार हमें रोये नग में, तेरे ही नयनों में सुपने।
बस जाओ मेरे नयनों में, मै तुझे छिपा लू पलकों में।
सूनी बगिया जायेगी खिल, मुझको रखले निज चरणो में।
अज्ञानी मैं कुछ ना जानूं,)षि मुनि ज्ञानी करते पूजा।
मैं करूँ प्रतीक्षा नयन नीर, दे प्यार नहीं तुझ सा दूजा।
स्वीकारो मेरे आंसू को, न कुछ है और तुम्हे जो दूँ।
तू पार करा मुझको नदिया, मेरे केवट बस मैं दुख दूँ।

161

प्यार दे यह चाह हमको, बीत जाये रैन काली।
फूल तेरे बाग के हम, फेर न मुंह मेरे माली।
न गुनाह कोई हमारा, क्यों छिपा तू फिर रहा है?
देखले नजरें उठाकर, व्यथित दिल यह रो रहा है।
नाचे कठपुतली तेरी, चाहे जब डोरी खीचें।
बहती नयनों से गंगा, यह विनय ना आंख मीचे।
डोलती मझधार नैया, जिन्दगी की शाम ढलती।
आये हमको मनाने, इन्तजा में राह तकती।
सूख ना जाये नयन से, नीर क्यों दिल डर रहा है।
चाह सब इसमें डुबो कर, मैं बहूँ दिल कह रहा है।
याद को तेरी लिये हम, धार में बहते रहेंगे।
नयन में तुम बसो मेरे, बहेंगे ना कुछ कहेंगे।

162

जाने न सुपने हजारों, कब हो क्या किसने देखा?
मन भजन कर चैन आवे, हरि लिखा अपना लेखा।
प्राण प्यासे जल पिलाले, और ना कोई ठिकाना।

मेड़ पर कुछ विछा नही है तो भाग झोपड़े में से दरी उठा लाई और बिछा दी मेड़ पर। सम्राट ने जगह जगह फटी जरा जीर्ण दरी देखी और टहलता ही रहा। उसने सोचा कि शायद मेड़ पर बैठना सम्राट के योग्य नहीं। तो उसने कहा झोपड़े में चले वहाँ बैठ जाये। लेकिन वहाँ की खाट भी सम्राट को नही जंची। और झोपड़े से बाहर आकर बोला मै टहलूंगा, तू फिक्र मतकर। तू जा कर फकीर को बुला ला। पत्नी गई। राह में उसने फकीर से–अपने पति से कहा– सम्राट कुछ अजीव सा है! मैने बहुत कहा मेड़ पर बैठ जाओ, नही बैठा। दरी बिछाई। नहीं बैठा। भीतर ले गई, खाट पर बैठने को कहा, नही बैठा। यह बात क्या है? बैठता क्यों नहीं? फकीर हंसने लगा। उसने

छूट जाते कूल सारे, साथ में जप ना भुलाना।
जपे जा वह ही सुनेगा, और ना कोई सुनेगा।
सारे जग का वह स्वामी, धैर्य धर ले तू खिलेगा।
नाच ले बन कर लहर तू, सभी तरफ सागर छाया।
सब मिटे भय छवि बसे जब, जप हरि सब उसकी माया।
जप हरि ले जाये किस्ती, ज्ञानी वह उसकी चलती।
उसी के हम तो खिलौने, जप उसको अंखियां रोती।
मन भजन कर जपो हरि को, यह उसी का ही जहाँ है।
क्या कहना क्या है सुनना, जप सुखद उसका जहाँ है।

163

प्रीति लगा ले तू हरि से मन, काहे को इस जग से उलझे।
स्वारथ की सारी दुनिया है, दुख माने क्यों ना तू समझे।
बरसे अमृत घट के भीतर, प्रीति बढ़ा पी तड़फे जियरा।
जिसने उसका नाम जपा है, मिट जाता है दुख फिर सारा।
प्रीति यहाँ सब जग में चाहे, बिन हरि कृपा नही वह पावे।
प्रीति बढ़ा हरि सबका स्वामी, जप उसको दुख सब मिट जावे।
सुपने बन बन कर हैं मिटते, पकड़े उनको नयना रोते।
बहले मन हरि की गंगा में, साथ सदा वह संग में रहते।
उसकी मर्जी आना जाना, सोचे क्या सब जग है सुपना।
दे पतवार उसी को अपनी, बीतेगी यह सुख से रैना।
जप सुपना बन जाता सुन्दर, क्यों घुटता तू अन्दर अन्दर।
प्रीति बढ़ा हरि वह सुखदाई, बनो लहर सागर है अन्दर।

164

हरि ओम जपो हरि ओम जपो, दुख दूर करे मन उसे जपो।
हरि नाम सहारा इस जग में, बरसे अंखियां हरि ओम जपो।
ले जायेगा नैया तेरी, लागेगा संग बन जा चेरी।

कहा, पागल! सम्राट बैठ कैसे सकता है। यही तो मनुष्य के सारे जीव की कथा है। यह मन कहीं नहीं बैठता जब तक परमात्मा न मिले । और परमात्मा मिल जाता है तो ऐसा बैठ जाता है हिलता ही नहीं, सब कम्पन खो जाते है।

लाओत्सु ने कहा है: मुझे कोई हरा नहीं सकता, क्योंकि मैं हारा ही हुआ हूँ। लाओत्सु कभी किसी सभा में जाता, बैठक में जाता, तो वहाँ बैठता जहाँ लोग जूते उतारते है।। लोग उसे बुलाते भी कि आप भीतर आ जायें, यहाँ आ जायें। वह कहता कि नहीं, यहाँ मैं भला, क्योंकि यहाँ से मुझे हटाया न जा सकेगा। यह आखिरी जगह है। यहाँ शान्ति से बैठ सकूंगा। यह उसका पूरा जीवन दर्शन है। इस आदमी को

आगे पीछे तू क्या जाने, बनती सुपनों की है ढेरी।
हरि ओम जपो हरि ओम जपो, मन मैल धुले हरि ओम जपो।
छंटता मैला दे ज्ञान वही, बन दास उसी का ओम जपो।
आये जग में जायेंगे कल, न पता कोई मन रट ले रब।
बीतेगी सुख से यह घड़ियां, लागेगा दूर नही है रब।
जीवन उसका सर्जक वह ही, क्या गर्व करे सब कुछ वह ही।
तू बना खिलौना नाच रहा, ना छोड़ ध्यान संग में वह ही।
जप पागल बीतेगी रैना, हरि को जप ले बरसे नयना।
विधि के हाथो मजबूर यहाँ, सुमरन कर आयेगा चैना।

165

नयनों में मचल रहे आंसू, कहते ना गलती मेरी है।
इस जीवन के तुम स्वामी हो, कठपुतली हम तो तेरी है।
सर्जक तू सारी दुनिया का, तू बना मदारी नचा रहा।
मुरझाई मेरी बगिया आ, ना छिप तड़फा क्यो हमें रहा।
मझधारे डोल रही नैया, तुम बिन न कोई खिवैया है।
तेरा ही नाम सहारा है, इस जीवन का आधारा है।
आंसू की गंगा बहती है, मन प्रीति बढ़ा सुख पायेगा।
अपना क्या जाता है यह तन, जप हरि सुपना खिल जायेगा।
सुख दुख का चलता खेल यहाँ, दुख मिटें जपे जो उसे यहाँ।
दीपक बन कर देता प्रकाश, मैं छोड़ जपो मन उसे यहाँ।
खिल जायेगी दिल की कलियां, बरसे अमृत उसको पीले।
करूणा सागर वह कहलाता, मन सुमर उसे जग में जीले।
ना कूल हाथ आवे कोई, बहता जा संग हरि के जी ले।
वह सृष्टि नियन्ता जपो उसे, कर उसे समर्पण मन जीले।
बन लहर देख सागर अन्दर, प्यारा छलिया उसको जप ले।
प्यासे हैं प्राण पिला पानी, जप प्रीति बढ़ा जल को पी ले।

कैसे अपमानित करोगे? जिस आदमी ने सम्मान नहीं मांगा, वह अपमान की संभावना से मुक्त हो गया।

सम्राट अकबर एक फकीर से मिलने जाया करता था। एक दिन सम्राट ने फकीर से कहा, आप जब भी आते हैं मेरे पास कुछ रूपयों की मांग करते है और मैं जब भी आता हूँ तो परमात्मा की बातें करता हूँ। यह कैसी फकीरी आपकी? आपसे ज्यादा धार्मिक मैं हूँ। फकीर हँसने लगा। उसे कहा कि यह तो सीधा साफ है, तुम्हारे पास धन है, इसलिये तुमसे धन मांगता हूँ। मेरे पास परमात्मा है, इसलिये तुम परमात्मा मांगते हो। जिसके पास जो नहीं है, वही आदमी मांगता है।

166

सब ही बहलाते मन अपना, सारा जग है बस इक सुपना।
प्यासी दुनिया सब प्रीति चहे, हिय प्रीति बसे रट ले सजना।
जप ले हरि भाग्य विधाता है, खेले वह हमें नचाता है।
कितना लहरों का जोर यहाँ, सागर हरपल भरमाता है।
जप प्रीति बढ़ा ले शाश्वत से, जग से उलझे तू काहे मन।
अंखियो से गिरता रहता जल, छिनता जाता है यह भी तन।
सुमरन कर देगा वह प्रकाश, न भूलो सब कुछ उसके हाथ।
कठपुतली बन न नजर हटा, देखेगा हरपल सदा साथ।
वह सृष्टि नियन्ता स्वामी है, कर्ता बन काहे रोता है।
जप ले वह प्यारा छलिया है, दुख मिटते चैना आता है।
अपना क्या सब उसका खेला, जपता जा मैल धुले मन का।
अन्तस से जुड़ सागर सब ही, जप कृपा मिले हो जा हरि का।

167

मन प्रीति बसे हिय में जप ले, बहते रहते दोनो नयना।
ले जायेगा नैया वह ही, तू ध्यान उसी का मन करना।
सुपने बन बन कर मिटते है, अंखियों से आंसू बहते है।
जपता जा छंटता अंधियारा, वह पास सदा ही रहते हैं।
चल रहा खेल प्यारा रसिया, जप ले मन को ना कर मैला।
पी को पुकार सर्जक वह ही, सब ओर वही तो है फैला।
अंखियो के आंसू जब बहते, जप राहत को हरि से लेते।
न ठौर कोई उस बिन जग में, जप सांस उसी से हम लेते।
मझधारे में डोले नैया, जीवन उसका आये जग में।
दुख दूर करे हिय सुमन खिले,जप लागे संग रहता दिल में।
जो जपे चैन मिल जाता है, सबका वह भाग्य विधाता है।
दो दिन का रैन बसेरा यह, खिल पिव में फिर मिल जाता है।

बु(को किन्ही ने गालियाँ दी और बु(खड़े सुनते रहे। और जब वे गाली देचुके तोबु(ने कहा: अब मैं जाऊँ? अब मुझे दूसरे गांव जाना है। उन्होने कहा, हमने तुम्हे गालियाँ दी है क्या समझ में नही आती? बु(ने कहा, समझ में तो आती है, लेकिन तुम जरा देर करके आये। अगर तुम इनका उत्तर चाहते थे तो दस साल पहले आना था तब मेरा अहंकार जीता जागता था। अब तुम एक मरे हुए आदमी को गाली दे रहे हो। ऐसे लोग है, जो दी गई गाली नहीं लेते। और ऐसे लोग है जो नही दी गई गाली को ले लेते है।

एक भिखमंगा एक द्वार पर भीख मांग रहा था। सेठ ने झांक कर

168

नहीं कुछ बोल नहीं कुछ तोल, बहता जीवन यह अनमोल।
वह सम्भाले तेरी नैया, मन नहीं भूलो हरि हरि बोल।
बहता जा यह नदिया उसकी, जप ले उसको पीड़ा मिटती।
दो दिन का यह रैन बसेरा, जप हरि छवि नयनों में बसती।
हरि का खेला हरि ही जाने, तड़फ रहा मन समझ दिवाने।
ध्यान धरो डोरी पर हरपल, कठपुतली बन नाच दिवाने।
शीश झुका दे हरि चरणों में, आना लाना वह ही जाने।
ज्ञान वही दे जप ले उसको, ना कर्ता बन जप दीवाने।
अंखियां रोवे प्यास मिटा ले, प्यासे प्राण पिला दे जल को।
प्रीति बढ़ा ले जप जप उसको, अमृत पीले भूल न उसको।
मर्जी उसकी से खिला फूल, उसके चरण की हम तो धूल।
बरस रहे नयनों से आंसू, जपो सतावेंगे नहीं शूल।

169

उफ न करे जो पिये हलाहल, नीलकण्ठ वह कहलाता है।
शिकवा क्या इस जग से करना, पल पल परिवर्तन होता है।
मन कर भजन जिया सुख पावे, क्यो उलझें जग जिया जलावे।
उपजे हिय में ज्ञान वही हो, कर्ता बन क्यों जिया दुखावे।
विछुड़े उससे अंखियां रोई, जीवन उसका मालिक वह ही।
याद उसे कर प्यारा रसिया, पार लगावे नैया वह ही।
नाच रही सागर में लहरें, कितने झगड़े कितनी कसमें।
सागर भूले चैन न आवे, जप सागर ना रोये नगमें।
जले दीप सब ओर वही है, काहे अपने नयन बहावे?
दो दिन का यह रैन बसेरा, झुको कृपा हरि की मिल जावे।
बना लहर बह ले सागर में, मर्जी उसकी वह ले जाये।
नयन लड़ा बस चलती उसकी, मिटा यहाँ मैं उसको पाये।

देखा और कहा, घर में कोई नहीं है। आगे बढ़ो। भिखमंगे ने कहा, मै आदमी थोड़े ही मांगता हूँ, दो रोटी दे दो। सेठ ने कहा, रोटी वोटी भी नहीं है। भिखमंगे ने हँसकर कहा– तुम फिर यहाँ बैठे बैठे क्या कर रहे हो, जब कुछ भी नहीं है तुम भी आ जाओ मेरे साथ। साथ ही मांग लेंगे। जो मिलेगा आधा आधा कर लेगें।

रामकृष्ण एक दिन बाहर दक्षिणेश्वर मन्दिर में बैठे थे उन्होने एक चील को उड़ते देखा। वह एक चूहे को लेकर उड़ रही थी। और उसके पीछे कई गि(लगे थे, और चीले लगी थी, झपट्टे मार रही थी उस पर। रामकृष्ण बैठे देखते रहे। शिष्य भी देखे लगे। फिर उस चील ने चूहा छोड दिया। चूहा को

170

कुछ तो कह दे ओ निर्मोही, प्रभु शरणा तेरी मैं आया।
अंखियां भीगी मैं तड़फ रहा, दे दे मुझको अपनी छाया।
सर्जक मेरे ना भूल मुझे, मझधारे में डोले नैया।
तुम बिन ना और सुने कोई, मैं दास पडू तेरे पैया।
बन जाऊँ बन्शी मैं तेरी , स्वर चाहे कितने फिर गाले।
नयनों में मेरे बस जाओ, मैं नहीं रहूँ तू अपना ले।
जीवन तेरा मालिक तू ही, झिल मिल करता यह संसारा।
नस नस में प्रेम बहा दे तू, फिर बहे नहीं आंसू खारा।
हरि प्रीति बढ़े जपले तुमको, धुल जाता सब मन का मैला।
आनी जानी इस दुनिया में, ना रूठ कभी मुझ से छैला।
प्रभु फूल तुम्हारी बगिया के, अपनी प्रभु कृपा सदा रखना।
तुझ में ही हरपल प्रीति बढ़े, लागे संग दूर नहीं करना।

171

मन प्रीति लगा ले तू हरि से, ना क्यों देखे अंखियां बरसे।
ना कूल हाथ आये कोई, तृष्णा में फंस जियरा झुल से।
हरि की लीला हरि ही जाने, बन कर घूमें हम बेगाने।
जप प्रीति बढ़ेगी जब हरि से, ना रोयेगे फिर अफसाने।
ले जायेगा नैया वह ही, जो जग में लाया खिला रहा।
सच देख हाथ में अपने क्या, वह बना मदारी नचा रहा।
ज्ञानी वह देवे ज्ञान हमें, जो ज्ञान मिले हमवही करे।
पड़जा मन हरि के चरणो में, फैला अंधियारा दूर करे।
जप हरि बिन ठौर नहीं कोई, अन्तिम पल तक साथी वह ही।
जप प्यासे प्राण पिला पानी, अंधियारे में दीपक वह ही।
जप साथ लगेगा डरे नहीं, कितने तूंफा आये मग में।
आना जाना सभी हाथ हरि, कर उसे समर्पण जी सुख में।

छोड़ते ही सब गि(और चीले–जो हमला कर रहे थे, उसे छोड़ कर चले गये। वे चूहे के पीछे चले गयेऋ इस चील से उन्हे क्या लेना देना था।

एक कौवा भागा जा रहा था और एक कोयल ने पूछा कि चाचा, कहाँ जा रहे हो? उस कौवे ने कहा, दूसरे देश जाते है, क्योंकि इस देश में हमारे गीत को कोई पसंद नहीं करता। कोयल ने कहाः दूसरे देश में भी यही हालत होगी। तुम्हारा गीत ऐसा है, दूसरे देश में भी कोई पसन्द नहीं करेगा। गीत बदलो अपना, देश बदलने से क्या होगा?

एक आदमी नागार्जुन के पास गया और उसने कहा मुझे ध्यान करना है। नागार्जुन ने कहा, तेरा किसी से प्रेम है? वह

जैसा राखे रहना होगा, बिन कृपा नहीं खिलना होगा।
जप ले प्यारा है वह रसिया, पी रस पी से मिलना होगा।
सुमरन कर ले मन तू उसका, मिटते दुख तू हो जा हरि का।
काली ना रैन सतायेगी, लागेगा साथ सदा उसका।

172

जमाने से शिकायत क्या, बफा ना हम निभा पाये।
बरसते नीर नयनों से, पता ना हम कहाँ जायें।
कठपुतली से बन नाचे, न केई भी ठिकाना है।
मर्जी जैसे हरि राखे, मन भी तो बेगाना है।
जप हरि बीतेगी संध्या, डरायेगी नहीं रैना।
उसी का खेल सब सारा, न रूकता नीर का बहना।
जपो वह शान्ति का दाता, विधाता भाग्य का वह ही।
चिन्ता मन क्यों करता है, लिये जा रहा जब वह ही।
झुको मन हरिचरण प्यारा, न कर्ता बहो हरि धारा।
बसते जिसके दिल में हरि, बहें आंसू न फिर खारा।
जपो मन हरि जपो हरि को, न कुछ कह तू जमाने को।
खिलेगें फूल झड़ने को, नहीं कुछ बस जपो हरि को।

173

बसो नयन में तुम मेरे, यही विनती हमारी है।
बना ले दास अपना तू, मिटी जाती कहानी है।
ना बल इतना चल आऊँ, बहे नयन से पानी है।
लगा दे पार यह नैया, तुही सबकी कहानी है।
नही मतलब किसी को है, लिये सब निज सुपन जीये।
सभी रोते यहाँ सुख को, नहीं बिन हरि कृपा पाये।
नहीं मन भूलयह भी तन, न अपना मिट रहा हरपल।
जपो हरि शान्ति को पा ले, नयन से गिर रहा है जल।

आदमी बोला, मुझे मेरी भैस से ....! ग्वाला था और एक ही भैस थी। वहीउसका भोजन, वही उसकी जीवनचर्या, वही उसका सब। उसने कहा कि आप भी क्या सोचेगे भैस प्रेम। नागार्जुन ने कहाकुछ फर्क नहीं पड़ता। तू यह सामने बाली गुफा में बैठ जा और अपनी भैस का विचार कर। और इतना विचार कर कि इसमें लौलीन हो जा। नागार्जुन ने कहा कि जब तक तुझे ऐसा न लगने लगे मैं भैस ही हो गया, तब तक जारी रखना। फिर मैं आऊँगा। मैं जब तक न पुकारूं तब तक तू निकलना भी मत। वह चला गया भीतर। एक–दो––तीन दिन बीत गये। अब नागार्जुन ने उसके द्वार पर दस्तक दी। खुला दरवाजा था गुफा का। कहा कि तू बाहर निकल आ भई। वह

जपो हरि उसी का जीवन, चरण में राख मन मस्तक।
नहीं कोई शिकायत हो, आती सांसे यह जब तक।
निहारूँ बाट मैं कितनी, झरे अंखियां मेरी झर झर।
डुबा रीती भरो गागर, हरी हो प्यार के सागर।

174

जमाने से शिकायत क्या, वफा ना हम निभा पाये।
बहे नयन से यह आंसू, तमन्ना प्यार को पाये।
उठे चल कर संभलने को, कदम पर ना संभल पाये।
कहाँ खोजूं न दीखे कुछ, नयन से नीर है आये।
तुम्हारा बाग खिलने को, सभी कलियां मचलती है।
नहीं जाने यहाँ कोई, किसी पर गाज गिरती है।
चलता चल तू ओ राही, यही जीवन निशानी है।
कहाँ खो जाये न जाने, चले चल दुनिया फानी है।
न दिल में झांक कर देखा, तड़फते ही रहे हरपल।
दिखाएँ किसे यह आंसू, तुझे भी लग रहा यह छल।
कहाँ जाये न मजिल है, गिरे दर पर यह चाहत है।
हमें बस देख लेना तुम, विनय यह दास की बस है।

175

जीवन में कुछ करना होगा, सेवा का ही व्रत मन ले ले।
बहते है नयनों से आंसू, प्यार बाट दुनिया में जी ले।
सारा जीवन है इक सुपना, रूके नहीं आंखों का बहना।
पंख लगा लो यहाँ प्रीति के, सारा जग ही फिर है अपना।
बहता जीवन रूके कहीं ना, आज यहाँ कल की जाने ना।
प्यासे प्राण पियो प्रीति रस, सुख पाये जिय मैं तज देना।
बहती धारा नही किनारा, डूब प्रीति में मिलता द्वारा।
परिवर्तित दुनिया है सारी, पकड़ प्रीति आंचल क्यों हारा।

आदमी उठा, चारों हाथ पैर पर चला और दरवाजे पर आ कर अटक गया। नागार्जुन ने कहा, निकलता क्यों नही? उसने कहा सींग फंसते है। तीन दिन तक एक ही भाव में तल्लीन रहा–भैस, भैस भैस! हो गया भैस।

नार्गाजुन ने कहा तेरे हाथ में सूत्र आ गया। जिसका ध्यान करोगे वही हो जाओगे। भैस में डाला भैस हो गया परमात्मा में डालो, परमात्मा हो जाओगे।

एक सूफी फकीर एक वृक्ष के नीचे बैठा था। एक युवक ने आ कर कहा मुझे एक गुरू की तलाश है, मैं कहाँ खोजूँ? और अगर गुरू मिल जाये तो मैं पहचानूंगा कैसे? तो उस गुरू ने कुछ लक्षण बताये, कि वह इस तरह वृक्ष के नीचे बैठा मिलेगा, इस तरह की आंखे

कमल खिले हिय खिलता जीवन, जितना जिसके वश में कर ले।
सारी दुनिया करती झिल मिल, बरसे अमृत उसको पीले।
रचना रच दी भाग्य विधाता, क्यों मन जग में भया उदासा।
प्रीति बढ़ाले घट के भीतर, घूम रहा सारा जग प्यासा।
करो समर्पण बहो जगत में, इससे बढ़ कर कुछ सुख नाहिं।
आनी जानी इस दुनिया में, प्रीति डगर में पिव मिल जा ही।

176

जमाने से शिकायत क्या, निभा ना साथ हम पाये।
नयन के कह रहे आंसू, पता ना हम कहाँ जायें?
यहाँ हम दोष किसको दे, मिटे ना भाग्य के लेखे।
बसाया है तुझे दिल में, उठा कर ना नजर देखे।
करे ना हम कभी भी उफ, न मिटता प्यार इस दिल से।
तेरी यादें भी प्यारी है, तुझे यह याद कर बरसे।
संजो कर याद हम तेरी, न भूले तू सदा मेरा।
मेरे हम दम ना मानो, मिटेगा प्यार न मेरा।
जगत का तू रचियता है, निहारूँ बाट तू आये।
मनाऊँ विधि नहीं जानूं, नयन से नीर बस आये।
मेरे सर्जक न भूलो तुम, छिपो ना रात अंधियारी।
बसो नयन में तुम मेरे, मिटे चिन्ता मेरी सारी।

177

हरि ने जो भी रच दीन्हा, करो स्वीकार तेरा क्या?
सुपन सबके समझ अपनी, नहीं हो मेल शिकवा क्या?
मदारी बन नचाता है, बन कठपुतली हम नाचे ।
न छोड़ो ध्यान डोरी से, मिटते दुख तू क्या सोचे?
जप नदिया में वह ही है, बहो मन बन लहर पागल।
खिलेगे फूल इस पथ में, जपो गिरता नयन से जल।
जपो मन साथ हरि का कर, वही दे ज्ञान करता तन।

होगी। तू जा खोज, मिल जायेगा। वह युवक खोजता रहा, खोजता रहा,खोजता रहा–तीस साल! बूढा हो गया तब थका मांदा एक दम हताश हो कर अपने गांव वापिस लौटा। थका मादा उसी वृक्ष के नीचे बैठा तो बड़ा हैरान हुआ। वह बूढ़ा फकीर अभी जिन्दा था और वही वृक्ष था। और बूढा उसी ढंग का आदमी था, जिस ढंग की इसने बात की थी। एक दम चरण पकड़लिये और कहा कि हद्द कर दी। मेरी जिंदगी बर्बाद करदी। मैने तुमसे ही तो पूछा था, अगर तुम ही मेरे गुरू थे तो कहा क्यों नही? उस बूढ़े ने कहा, ये तीस साल अगर तुम भटकते न तो तुम मुझे पहचानते। मैं तो था, गुरू तो था लेकिन शिष्य कहाँ था?

जपो कट जायेंगे संकट, पागल मन तू हरि का बन।
सुपन सब टूटते जग में, उलझ कर हम भटकते है।
जपो वह शान्ति का दाता, नयन से नीर गिरते है।
उसी का खेल सारा है, कर्ता बन तू क्यों रोवे?
जपो मन सुख मिले जियको, नैया तेरी वह खेवे।

178

मुझ को ले चल मेरे मांझी, इन नयनों में आंसू आये।
जानूं न मैं कोई किनारा, तुम बिन कृपा नहीं पथ पाये।
अबल नाथ मैं दास तुम्हारा, न बल मुझ में तेरा सहारा।
पार लगा दे मेरी नैया, इस जीवन का तू आधारा।
नयनों से बरसात हो रही, कण कण में हो छिपे पर कहीं।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, प्यार हमें दो सर्जक तू ही।
मेरी सांसो में तू गूजे, निशदिन होवे ध्यान तुम्हारा।
मिल जाये मन्दिर का कोना, बीते मेरा जीवन सारा।
छलिया मुझ से काहे रूठे, सुपने सब बन बन कर टूटे।
बस जाओ मेरे नयनों में, साथ तुम्हारा कभी न छूटे।
उफ ना निकले मिटे शिकायत, यादों में तेरी खो जाऊँ।
तेरा जीवन तुझे समर्पण, दे बल चरण तुम्हारे पाऊँ।

179

जमाने से शिकायत क्या, निभा न साथ हम पाये।
बहे नयन से यह आंसू, न दीखे राह कब आये।
तू मालिक है बगिया का, नहीं नजरें उठा देखे।
जरा कह दे तुही मुझ से, कहाँ जायें हमें देखे?
न जाने ले कहाँ जाये, नदी बस में नहीं मेरे।
तुझी से प्यार करते है, न पर तुम हो सके मेरे।
तेरी मुस्कान पाने को, जले जलते रहेगे हम।

नानक के जीवन में उल्लेख है।एक रात वह पुकार रहे हैं परमात्मा को...! आधी रात बीत गई और नानक की मां ने आ कर कहा, कि अब बहुत हो गया, अब तुम सो जाओ, अब यह भजन कब तक चलेगा? नानक ने कहा, मत रोको मुझे। सुनो! बाहर बगीचे में आम की बाड़ी में पपीहा पुकार रहा है, 'पी कहाँ? पी कहाँ? नानक ने कहा उससे मेरी होड़ बंधी है। जब तक वह चुप नही होगा, मै भी चुप होने वाला नहीं हूँ। उसी रात नानक के जीवन में क्रान्ति घटी। जो पपीहा बन गया–पी कहाँ? पी कहाँ? उसे पी निश्चित मिलते है।

स्वामी राम अमेरिका से भारत वापिस लौटे तो पहला प्रवचन काशी में दिया। लेकिन

देखो तुम उठा नजरें, नहीं पर प्यार होगा कम।
इतना क्यों बना निष्ठुर, नयन यह झर रहे झर झर।
बीती जाती संध्या है, न होगा मेल जानो फिर।
तुझे पूजा तुझे माना, बना क्यों हाय बेगाना।
समर्पण कर रहा आंसू, न मैने और कुछ जाना।

180

जमाने से शिकायत क्या, वफा ना हम निभा पाये।
न काबिल थे तुम्हारे हम, नयन में नीर बस आये।
बता तो हम कहाँ जाये, न बस चलता हमारा है।
बरसते नयन रिमझिम है, जले यह दिल हमारा है।
दिखाये दिल तुझे कैसे, तू भी क्यो हुआ सुपना?
गुजरते पल मिले थोड़े, तू ही था मेरा अपना।
तेरी राहों में बैठे, न नजरे तू उठा देखे।
नहीं मिटती जलन दिल की, क्या किस्मत के हैं लेखे?
चले थे प्यार पाने को, न तुमको पर मना पाये।
चले चल कर संभलने को, गिरे पर देख ना पाये।
न सुनता तू हुआ दुश्मन, छिपा छलिया करे है छल।
फना ले प्यार को होगे, गिरायेगे नयन यह जल।
नहीं शिकवा तड़फते पर, गगन उड़ते नहीं है पर।
नयन में तुम जरा झाको, विछुड़ता जा रहा मंजर।
तुम्हारी प्रीति भी प्यारी, गिरे कितना नयन से जल।
यही मेरा सहारा है, गुजरेगे यह सारे पल।

181

जहाँ जाये वही मंजिल, लहर का अपना कुछ न बल।
चलती मर्जी सागर की,नयन से बह रहा है जल।
नचाये नाचते हम तो, कहाँ खो जायें न जाने।

बीच प्रवचन मे एक पंडित खड़ा हो गया उसने कहा रूकें – संस्कृत आती है? राम चौके, कहा कि संस्कृत तो नहीं आती। वह पंडित हंसने लगा, और लोग भी उठ गये, उन्होने कहा जब संस्कृत ही नहीं आती तो वेदान्त कैसे आयेगा? राम उसके बाद हिमालय चले गये और एक बड़ी उदास घटना है कि राम ने सन्यासी वेश छोड़ दिया। जब वे मरे तो गैरिक वस्त्रों में नहीं थे, क्योकि उन्होने कहा, जो धर्मशब्दो में भटक गया हो और जिसका सन्यास केवल पांडित्य हो गया हो, उस समूह को क्या अपने को अंग मानना। परम्परा ने सन्यास तक को दूषित कर दिया।

एक सूफी फकीर अपनी रोटी कमाने के लिये एक नदी पर लोगो

करो सुमरन सदा संग में, मिटेगे दुख न क्यों माने।
जपो हरि फैला है जंगल, भजन बिन हो नहीं मंगल।
वही है शान्ति का दाता, न कर्ता तू उसी का बल।
उसी के हाथ में डोरी, जपो हरिनाम सुख दाई।
करो मन ध्यान उसका ही, वह लाया है ले जाई।
वही दे ज्ञान उपजे हिय, जला मन दीप इस दिल में।
जपो हरि नाम प्यारा है, लगेगा डर न मारग में।
कहाँ आना कहाँ जाना, जपो वह चैन इस दिल का।
समर्पण कर हरि आगे, खिवैया वह ही नौका का।

182

सारा जग ही है उपदेशक, रूके नीर ना बहते झर झर।
शरण तुम्हारी नाथ आ गया, प्रीति बढ़े तुझमें दे दो वर।
इस जग के हो तुम्ही रचैया, छिपो नहीं तुम बंशी बजैया।
अपना प्यार मुझे तू दे दे, तुझे याद कर रोवे अंखियां।
करूणा के सागर कहलाते,)षि मुनि सारे तुझे मनाते।
जान सका ना कोई माया, आंसू से हम खत को लिखते।
खिल जाये जीवन दुख हर लो, मेरी भटकन सभी मिटा दो।
दिल में हो जाये उजियारा, अंधियारे में दीप जला दो।
अन्तर्यामी घट घट बसते, जल में रह हम प्यासे रहते।
अज्ञानी मैं बालक तेरा, डगमग डोल रही है नैया ।
पार लगा दे मेरी नैया, खता माफ कर पड़ता पैया।

183

कहने को ना कुछ सुनने को, कैसे समझाऊँ इस मन को।
जग की इन दुस्तर गलियों में, छिप गये छोड़कर तुम मुझको।
जीवन दाता जीवन तेरा, दे प्यार मुझे बालक तेरा।
अज्ञानी हूँ कुछ ना जांनू, दो ज्ञान मुझे तम ने घेरा।

को नाव से पार करवाता था। एक दिन गांव का पंडित नाव में बैठा। पंडित ने पूछा, कुछ, कुछ पढ़ना लिखना आता है। उस फकीर ने कहा, पढ़ना लिखना तो बिल्कुल नहीं आता। मैं बिल्कुल गवांर हूँ, ना समझ हूँ। उसने जब यह शब्द कहे, तब अगर पंडित को होश होता तो देख लेता कि कितनी गहरी विनम्रता है। अपने अज्ञान को स्वीकार कर लेना, ज्ञान की तरफ पहला कदम है। पंडित ने कहा तब तुम्हारा चार आना जीवन बेकार गया। नाव थोड़ी आगे बढ़ी। पंडित ने पूछा– गणित तो आता होगा। फकीर ने कहा, अपने पास कुछ है ही नहीं हिसाब किताब क्या रखना? पंडित ने कहा तुम्हारा आठ आना जीवन बेकार गया। और तभी अचानक तूफान आ गया और नाव डूबने लगी।

तुझ कृपा बिना ना चल पाये, नयनों से नीर गिरे झर झर।
तुम दीनबन्धु करूणा सागर, जो सुमरे भव को जाता तर।
बन्शी तेरी बाजे मोहन, सुन नाचे गोपी फिर छम छम।
तुम छोड़ गये ना विरह मिटे, आंखे रहती है हरपल नम।
हरि साथ तुम्हारा प्रिय लगे, बस जाओ मेरे नयनों में।
ना रूठ कभी मुझसे जाना, पड़ता हूँ तेरे चरणों में।
करता पूजा बस पास नीर, बल ना मुझ में तुमको पाऊँ।
सिर पर रख तेरी चरण धूल, चाहूँ यादों में खो जाऊँ।

184

चलना तो खुद को पड़ता है, जीवन का तो सत्य यही है।
ज्ञान उपजता जो भी हिय में, तन करता यह झूठ नहीं है।
जीते जग में कितनी योनी, अपना अपना खेल चल रहा।
बहते नयनों से आंसू है, सबका स्वामी सदा वह रहा।
बहता जा बन लहर यहाँपर, छोड़ सुरति न संग में सागर।
जप ले चैन मिलेगा जग में, कर्ता तू ना वह बन्शीधर।
मारग कितना ही दुस्तर हो, जप ले वह जग का आधारा।
जाने न कुछ पल के मेहमा, जप दिल में होगा उजियारा।
मर्जी उसकी जहाँ ले चले, तोड़ नहीं मन उससे नाता।
सदा अकेले भरी भीड़ में, पकड़ उसे ना सुख फिर जाता।
चंचल मन जब करता क्रन्दन, और न दीखे वह सुखनन्दन।
उसकी मर्जी से चलता जग, अंखियों का जल दे उसको मन।
धूप छांव का खेल यहाँ पर, गाता जा मन हरि के नगमें।
देख जगत में कितने सुपने, शान्ति प्रदाता बसा नयन में।
बरसे नयना चैन मिलेगा, दुख तेरे सब दूर करेगा।
दे पतवार उसी के हाथों, नैया तेरी लिये चलेगा।

फकीर हंसा और उसने पूछा, तैरना आता है? उसने कहा बिल्कुल नहीं आता। फकीर ने कहा, तुम्हारी सोलह आना जिन्दगी बेकार गई। मैं तो कूदता हूँ यह नाव डूबेगी।

कृष्ण भोजन को बैठे, रूकमणी ने थाली लगाई। एक कौर लिया होगा मुश्किल से कि हड़बड़ाकर भागे! रूकमणी समझ न पाई, लेकिन द्वार तक गये, वापिस लौट आये, फिर बैठ गये थाली पर । रूकमणी ने पूछा, क्या हुआ? कृष्ण ने कहा, मेरा एक भक्त एक राजधानी की सड़क से गुजर रहा था, लोग उस पर पत्थर फेंक रहे थे। लहू बह रहा था और वह गोविन्द गोविन्द किये जा रहा था। वह न तो उत्तर दे रहा था, न बचाव कर रहा था,

185

दुख के पल होते है भारी, जप हरि हर्ता पीड़ा सारी।
जप उस बिन न चैन है जग में, जप उसकी दुनिया है सारी।
उसने जो भी रचना रच दी, बन कठपुतली खेल करे सब।
डोर उसी के हाथों में है, जपो उसे मन भूल नहीं रब।
अन्तिम पल तक वह ही साथी, जप उस बिन अंखियां यह रोती।
जाये कहाँ न रस्ता दीखे, जप ले दिल में जलती ज्योती।
कितने ही दुख पाती काया, स्वामी वह ही देगा छाया।
उस बिन ठौर नहीं इस जग में, जप ले सब उसकी ही माया।
डोल रही सागर में नैया, घबराये जिय करता धक् धक्।
उसका जीवन वह ही खेवट, जप जप बन जा हरि का सेवक।
कट जायेगी काली रैना, जप ले हरि यह बरसे नयना।
करूणा सागर सुख दाता वह, जपो सदा मन उसमें बहना।

186

क्या पाना हैक्या खोना है, सुमरो हरि मन बह जाना है।
जैसा राखे मर्जी उसकी, अपना क्या सब बेगाना है।
जपता जा चलता जा मग में, डोर उसी के है हाथों में।
देगा ज्ञान तुझे ले जाये, दुनिया सारी उसके बस में।
शान्ति प्रदाता जप वह ही है, साथ सदा से जप वह ही है।
चैन न आवे मनुआ भागे, जप ले सर्जक मन वह ही है।
बहती नदिया ले जायेगी, कुछ पल खेले जोर न अपना।
करो भजन हरि सुख को पालो, सारा जीवन है इक सुपना।
यहाँ भगाये तृष्णा हरपल, गिरता रहता नयनों से जल।
सुमर उसे तू भाग्य विधाता, छोड़ कभी ना उसका आंचल।
चैन मिलेगा ताप हरेगा, दुनिया उसकी सेवक जा बन।
अपना क्या सब कुछ है उसका, देगा पथ उसका यह जीवन।

उसने अपने को बिल्कुल मेरे हाथों में छोड़ दिया था। भागना अनिवार्य था। फिर रूकमणी ने पूछा लौट क्यों आये? कृष्ण ने कहा, लेकिन जब मैं द्वार तक पहुँचा, उसने अपना चित्र बदल लिया था। उसने खुद ही पत्थर हाथ में उठा लिया, अब वह खुद ही जवाब दे रहा है, मेरी कोई जरूरत न रही।

एक सन्यासी को गलती से, भ्रांतिवश एक सिपाही ने मार डाला। 1857 की बात, क्रान्ति के दिन, एक मौन सन्यासी, नग्न सन्यासी गुजर रहा था अंग्रेजो की छावनी के पास से, सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया, उससे पूछा कौन हो? लेकिन वह मौन है उसने व्रत लिया था सिर्फ मरते वक्त एक वार

187

ज्ञानी मैं ना तू ना दीखे, चिन्ता में यह रातें बीतें।
आया नाथ तुम्हारी शरणा, कुछ पल यह ना रोते बीते।
कण कण में है वास तुम्हारा, फिर भी बहता आंसू खारा।
प्रेम सुधा बरसा प्यासा जग, सब का तू ही सृजन हारा।
बरस रही यह अंखिया रिमझिम, कटे न पल बैचेन हुआ मन।
प्यारे अब तो छिपो नहीं तुम, आ जाओ मिट जायें सब गम।
पथ में कांटे अंधियारा है, ज्योति जले खिल जाये बगिया।
कहो कहाँ जाऊँ तेरे बिन, कृपा तुम्हारी चाहूँ रसिया।
क्या पाना है क्या खोना है, शिशुवत बन मन उसे पुकारो।
आंसू से भीगी अंखियां है, सुमरन कर ना उसे विसारो।
कर्ता ना तू पग में पड़ जा, बहती जाये नैया तेरी।
बन जा दास उसी का पागल, कह मैं ना यह दुनिया तेरी।

188

कितनी पीड़ा कितना दुख है, लीला यह क्यों रची हुई है?
जाने ना तेरी माया को, क्यों हरजाई बना हुआ है?
सुखसागर कहते है तुमको, गिरते नीर न देखे मुझको।
जतन करूँ मैं तुझे मनाऊँ, चरण पडू पथ दे दे मुझको।
तू ही ज्ञानी अन्तर्यामी, किसको अपनी व्यथा सुनाऊँ।
तू न देखे जाऊँ कहाँ मैं, इन नयनों से नीर बहाऊँ।?
चरणों में रखले ओ निष्ठुर, बीते रैना तुमको पाऊँ।
नमन करो स्वीकार हमारा, बहती है आंसू की धारा।
तुम बिन कोई और न पूछे, अबल नाथ दे मुझे सहारा।
सुख दुख के पहिये पर घूमें, चाह प्यार तेरा ले झूमे।
पीड़ हरो मैं खड़ा द्वार पर, विनय करूँ बस इतना बस में।

बोलेगा, उसके पहले नहीं। अंग्रेज सिपाही को शक हुआ और उसकी छाती में भाला भोंक दिया। खून का फव्वारा फूट पड़ा। तब उसने सिर्फ एक वचन उपनिषद् का कहाः तत्व मसि श्वेतकेतु तू भी वही है श्वेतकेतु। तू मुझे धोखा न दे पायेगा। वह अपने हत्यारे में भी परमात्मा देख सका।

एक अनूठा सन्यासी बोधिधर्म जब चीन गया बु(का संदेश लेकर तो सम्राट नूने उससे पूछा कि संक्षिप्त में मुझे बता दे कि जीवन की सबसे बहुमूल्य बात क्या है? बोधिधर्म ने कहा, सबसे बड़ा सौभाग्य यह है कि तुम पैदा ही न होते। वह बात तो हो नही सकती– खत्म। अब जितनी जल्दी हो मर

189

ना पता जाये कहाँ, ईश तेरा ही जहाँ।
बीते पल यह सुख से, मान लो मेरा कहा।
दास तेरे हम सदा, जी रहे अज्ञान में।
हरि कृपा अपनी करो, तम हरो रख चरण में।
लहर की मंजिल है क्या, जाये जहाँ बस वहीं।
पीड़को हरि तुम हरो, प्यार दे सागर तुही।
लाया ले जाये तू, बस नहीं चलता यहाँ।
प्यार मिले यदि तेरा, खिलेगा मेरा जहाँ।
सर्जक तुही दास मैं, न भूंलू तू पास में।
बीत जाये यह उमर, नाथ तेरे गान में।
बिन कृपा होवे न कुछ, देख ले न मुझ में दम।
नयन में बसो मेरे, जाये मिट सारे गम।

190

दो पल के इस सुख की खातिर, सारी दुनिया है घूम रही।
हरि भजन करो मिलता है जल, प्यासे प्राणों की प्यास यही।
बनजा मन हरि की कठपुतली, धर ध्यान हाथ उसके सुतली।
जिसके घट में हरि बस जाये, मिटते गम ना चमके बिजली।
दे ज्ञान वही इस जग में चल, ना कर्ता बन सुमरन कर मन।
चरणों में उसके शीश झुका, कुछ पल खेले सेवक जा बन।
आये जाये उसकी लीला, सुमरन कर मिट जाती पीड़ा।
सागर में लहरे नृत्य करें, उसको भूले रोवे जिबड़ा।
हरि नयन बसे दुख ना होगा, जैसा राखे रहना होगा।
हरि कृपा मिले बस मांग यही, जीवन में फिर उत्सव होगा।
यह बरस रही अंखियां रिमझिम, हरि प्रीति बढ़ा उसका जा बन।
बहता जा बन कर लहर यहाँ, कुछ ना तेरा उसका जीवन।

जाओ। यह जीते जी मरने का अर्थ हैऋ तुम ऐसे जीने लगो, जैसे तुम हो ही नहीं। और जल्दी ही तुम पाओगे कि तुम्हारी अनुपस्थिति रिक्त नहीं रही, परमात्मा धीरे धीरे उतर आया है।

एक मारवाड़ी मर रहा था। मरण शैरया पर है। उसने अपनी पत्नी को पूछा कि बड़ा बेटा कहाँ है? वह पास ही खड़ा है, पत्नी ने कहा, आप चिन्ता न करें। अच्छा, और मंझला बेटा? वह भी पास है, उसने कहा। और छोटा बेटा? वह पैर के पास खड़ा है, आप बिल्कुल चिन्ता न करें। आप शान्ति से सोये।

मारवाड़ी उठा। उसने कहा, शान्ति से सोऊं–क्या मतलब! फिर दुकान कौन चला रहा है? सभी यहाँ मौजूद है!

191

ले चल संग में अपने निष्ठुर, जीवन का शेष विताऊँगा।
ना भूलू नयन बसो मेरे, आंसू से चरण पखारूँगा।
तुम दीनबन्धु करूणा सागर, अज्ञानी मैं जग में पामर।
प्रभु ज्ञान दीप को जला यहाँ, तुम कष्ट हरो भर दो गागर।
ले चल मुझको तू बांह पकड़, बालक तेरा अन्तर्यामी।
दीखे कुछ ना अंधी गलियां, कुछ ना जानू तू ही स्वामी।
तेरा ही नाम सहारा है, दुख में बस तुही किनारा है।
हरि प्रीति बढ़े वर दो ऐसा, बहती नयनों से धारा है।
तुम पूर्णब्रह्म परमेश्वर हो, कर्ता भर्ता हर्ता तुम हो।
मैं कौन यहाँ जानूं ना कुछ , अन्तस के दीपक तुम ही हो।
हरि रोम रोम में बस जाओ, मेरी सांसो में छा जाओ।
ना कभी खफा होना मुझसे, मैं दास तुम्हारा अपनाओ।

192

खिलने से पहले झड़ जाये, क्या भाग्य लिये ऐसा बैठे?
किसको दे जग में दोष यहाँ, लेकर ऐसी किस्मत बैठे।
उड़ना चाहें पर पंख नहीं, न जीवन में उल्लास कोई।
ऐसा नीरस जीवन को दे, करूणा तेरी कह कहाँ गई।
नयनों से गिरते नीर कहें, मेरे न बनो पर हम तेरे।
अंधियारा पथ स्वामी तू ही, गायेगे गीत सदा तेरे।
ऐसे ही घुट क्या मर जाये, तपता तन मिलती छांव नहीं।
पथ में दीखे न राह कोई, क्या सच तेरा इन्साफ यही।
इस धूप छांव के मेले में, कैसे खोजूं है ज्ञान नहीं।
सूखा पत्ता बन उड़ू यहाँ, इतनी भी मुझ में शक्ति नहीं।
कर रहा समर्पित तुझे नीर, कितना ही मोहन हरो चीर।
तुम बिन जग में न ठांव कोई, दे प्यार देख ले बहे नीर।

बाप मर रहा है, यह सोच कर सब बेटे आ गये थे, दुकान बन्द कर आये थे। लेकिन मरते बाप को अभी मौत का कोई सवाल नहीं है! दुकान कौन चला रहा है।

एक सन्यासी मरा। जिस दिन मरा, उसी दिन एक वेश्या भी मरी। दोनो आमने सामने रहते थे। देवदूत लेने आये तो सन्यासी को नर्क की तरफ और वेश्या को स्वर्ग की तरफ ले जाने लगे तो सन्यासी ने कहा रूको, कुछ भूल मालूम होती है। तब देवदूतों को कारण बताना पड़ा। कारण यह था कि– सन्यासी रहता तो मन्दिर में था लेकिन सोचता सदा वेश्या की था। जब वेश्या के घर में रात रागरंग होता, बाजे बजते, नाच होता, कह कहे उठते, नशे में डूबकर लोग उन्मत्त

बेचैन यहाँ मन डोल रहा, छिप कर छलिया तू खेल रहा।
क्या बता तुझे मिल जायेगा, कितना आंखो से नीर बहा।
क्यों ना पकड़े मेरा दामन, सूना लगता यह सारा बन।
चरणों में तेरे शीश रखूं, अपना इतना रूखा ना बन।
न मिले दिशा मैं जाऊँ कहाँ, ऐसा निष्ठुर यह जीवन क्यों।
कुछ तो भर दे तू रंग यहाँ, बहते आंसू देखे ना क्यों।
ले चल मांझी सागर आता, सारे जग का तू ही ज्ञाता।
नर नारी तेरी कृपा चहें, दे प्यार नीर देखो बहता।

193

करूणा के सागर हो तुम तो, अंखियां मेरी झरती झर झर।
यह पार लगा मेरी नैया, डगमग करती तू देख इधर।
चल चलकर गिरूँ संभाल मुझे, निर्बल के बल तो तुम ही हो।
मैं दास तुम्हारा सदा प्रभु, मन मंदिर के उजियारे हो।
जैसी रचना रच दी तुमने, मैं नाच रहा बन कठपुतली।
बहते आंसू हैंदेख जरा, डर लगता चमक रही बिजली।
लाया तू ले जाये तू ही, ना बस अपने कर्ता तू ही।
हरि अपनी कृपा सदा रखना, मैं दास सदा सर्जक तू ही।
हरि पार लगा दे यह नैया, बहते नयनों से आंसू है।
हरि जपूं तुझे ना भूल मुझे, अन्तिम पल तक तू साथी है।
कुछ पास न मेरे नयन नीर, छूटे जाते सब कितनी भीड़।
तुम ना बोलो कहूँ किसे, शरणागत तेरी हरो पीड़।

194

तुम्हारी बांसुरी मोहन, उठा दे स्वर मुझे भाये।
यह दिल है प्यार का प्यासा, नयन से नीर ढलकाये।
कई जन्मों से मैं खोजूं, बता दे हम कहाँ जाये।
छिपकर हमको नचाते हो, तमन्ना गीत पर गाये।

होते, तो उसको ऐसा लगता, मैंने अपना जीवन व्यर्थ गंवाया। आनन्द कहाँ है, मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ– इस निर्जन में बैठा इस खाली मन्दिर में यह पत्थर की मूर्ति के सामने– पता नहीं भगवान है भी,शक पैदा होता। और रात जाग कर करवटे बदलता और वेश्या को भोगने के सपने देखता।

और वेश्या की हालत ऐसी थी जबमंदिर की घंटिया बजती तो वह सोचती कि कब मेरे भाग्य का उदय होगा कि मैं भी मन्दिर में प्रवेश कर सकूंगी। मैं अभागी, मैंने अपना जीवन गन्दगी में बिता दिया। अगले जन्म में हे परमात्मा, मुझे मन्दिर की पुजारिन बना देना। मुझे मन्दिर की सीढ़ियो की धूल भी बना देना तो भी चलेगा। पुजारी वेश्या की सोचता, वेश्या पूजा की सोचती। पुजारी नर्क चला

तेरे सेवक बने जग में बहे नयना करें पूजा।
न शिकवा हो यह बल देना, न बढ़कर और है दूजा।
गुजर जायेगा यह जीवन, नयन में नाथ तुम रहना।
न इससे बढ़के सुख कोई, तेरे चरणों में झुकना।
बहे नयनों से जो आंसू, वही बस जान ले पूजा।
किरपा तेरी सदा चाहूँ, सपनों में मेरे आ जा।
मुझे ले चल मेरे मांझी, यह डगमग डोलती नैया।
पुकारूँ फंस भंवर में मैं, लगा दे पार यह नैया।

195

चाहे तुम मेरा जीवन लो, होठों पर तुम मुस्काहट दो।
अन्तर्यामी जग के स्वामी, नित प्रीति बढे मुझको वर दो।
यह भटक रही नैया मेरी, तुम बिन न कोई खिवैया है।
तेरे इस मेले में आकर, देखो बहती यह अंखियां है।
कुछ ना जानूं अज्ञानी मैं, बालक तो पर मै तेरा हूँ।
जीवन की इस पगडण्डी, मैं साथ सदा ही चाहूं हूँ।
नयनों में मेरे बस जाओ, ना इतना तुम अब तड़फाओ।
मैं हार गया दुनिया तेरी, दे शरण मुझे ना शर्माओ।
ले चलो भुलावा दिये मुझे, कितने खिलते है फूल यहाँ।
बिन कृपा तेरी कुछ न होवे, तेरा ही तो यह सकल जहाँ।
मेरे स्वीकार करो आंसू, ना कुछ भी और लिये बैठा।
मैं बाट निहारूँ इस पथ पर, सुन ले मेरी काहे रूठा।

196

कुछ नहीं पाना कुछ न खोना, अपना कुछ ना ऐसे जीना।
खेल खिलावे सुख दुख के वह, चैन मिलगा हरि को जपना।
घेरे तृष्णा मनुआ चंचल, बिन हरि जपे न मिटता क्रन्दन।
साथी अंधियारी रातों का, उसे भूल ना वह सुख नन्दन।

गया। वेश्या स्वर्ग चली गई।

एक अति प्राचीन कथा है। घने वन में एक तपस्वी साधना करता था। एक दीन, दरिद्र युवती लकड़ियां बीनने आती थी वन मेंऋ वही दया कर कुछ फल तोड़ लाती, पत्तों के दौने बना कर सरोवर से जल भर लाती और तपस्वी के पास छोड़ जाती। वर्ष बीते, तपस्या पूरी हुई। इन्द्र उतरा, तपस्वी के चरणों में झुका और कहा स्वर्ग के द्वार स्वागत के लिये खुले हैं। तपस्वी ने आंखे खोली और कहा मुझे अब स्वर्ग की जरूरत नही है। पूछा, क्यो मोक्ष चाहिये? तपस्वी ने कहा, नहीं, मोक्ष का भी क्या करूँ? इन्द्र चरणों में सिर रखने को ही था क्योकि

जपले मन वह शान्ति प्रदाता, अंधियारे में दीप जलाता।
पथ हो सुगम कठिन है राहें, जपता जो भी हरि को ध्याता।
अपनी अपनी लिये कहानी, खोते जाते सब इस जग में।
मन हरि भजन करो सुख पाओ, कर्ता वह नाचे तू जग में।
सुनने बाला नहीं दीखता, जप ले मन आंसू तू गेरे।
इस जंगल में फिरे अकेले, चैन मिलेगा जो हरि टेरे।
हरि बिन कृपा नहीं कुछ होवे, मर्जी उसकी से हम आये।
दीप जलेगा अन्तस में जप, मुरझाई बगिया खिल जाये।

197

परिवर्तित सुख को जो पकड़े, कभी मिटे ना उसके दुखड़े।
जी ले हरि शाश्वत है वह ही, डोर हाथ हरि नाचे जिवड़े।
जपले मन वह शान्ति प्रदाता, मैं छूटे जो हरि को ध्याता।
सारी दुनिया रैन बसेरा, जप ले जिवड़ा नीर बहाता।
जप ले पार करेगा नैया, कर्ता ना बन पड़ जा पैंया।
बना खिलौना नाचे जग में, जप ले मन यह रोवे अंखियां।
खोज रहे सब सुख को जग में, मर्जी उसकी जोर यहाँ क्या।
सुखदाता वह समझे क्यो ना, ज्ञान वही दे अपना है क्या।
मन का चैना वही जपो हरि, सुरति न टूटे उसमे बहना।
कट जायेगी काली रैना, मन हरि चरण सदा ही पड़ना।
जप ले हरि हरि कर्ता वह ही, लाया ले जायेगा वह ही।
दुख से ना रोये यह अंखियां, ना स्वामी तू स्वामी वह ही।

198

हरि को जी ले हरि को पी ले, हरि की नदिया इसमें बह ले।
ना पता कहाँ जाये नैया, नयन बसा हरि प्रीति बढ़ा ले।
वही सहारा अंधियारे में, कर्ता ना तू ऐसे जीना।
मुरझाई बगिया खिल जाती, सांच कहूँ मैं दिल का चैना।

तपश्चर्या का अन्तिम चरण भी पूरा हो गया जहाँ मोक्ष की आकांक्षा भी समाप्त हो जाती है। परन्तु झुकने से पहले उसने पूछा, मोक्ष के पार तो कुछ नहीं है, फिरक्या चाहते हो? उस तपस्वी ने कहा,कुछ भी नहीं, वह लकड़ियां बीनने बाली युवती कहाँ है, वही चाहिये।

सिकन्दर भारत आता था, तो एक फकीर डायोजनीज से मिलने गया। वह नग्न ही रहता था। हाथ में भिक्षा का एक पात्र भी नहीं रखता था। जब शुरू शुरू में फकीर हुआ था तो एक पात्र रखता था, लेकिन एक दिन कुत्ते को नदी में पानी पीते देखा तो उसे लगा जब कुत्ता बिना पात्र के पानी पी कर काम चला लेता है तो मुझे पात्र

अंखियां रोये जप ले छलिया, उस बिन पार लगे ना नैया।
सुख दुख के मेले में घूमे, पड़ो चरण हरि वही खिवैया।
दुनिया उसकी तू भी उसका, शासन सदा उसी का चलता।
झुक जा मन ब्रह्माण्ड उसी का, बढ़ा प्यार जियरा यह रोता।
सुमरो हरि वह अंतर्यामी, जाने सबकी वह ही दानी।
उस बिन कौन सुने मन बोलो, सुमरन कर ना कर नादानी।
दीप जले अन्तस पथ देवे, ज्ञानी वह नैया वह खेवे।
बना खिलौना नाचे जग में, धन्य समर्पण कर जो जीवे।

199

कौन हो तुम कौन हो तुम, जानता ना मौन हो तुम।
अश्रु चरणों में चढ़ाऊँ, देख लो यह आँख है नम।
मैं करूँ पूजातुम्हारी, मैं अबल हूँ नाथ हारी।
ले चलो नैया हमारी, ज्ञान दो टूटे खुमारी।
सब जगत के हो नियन्ता, दास तेरा पांव पड़ता।
बहते नयनों से आंसू, दे दो पथ दुख के हर्ता।
तुम बसो नयन में मेरे, बाजे बस धुन ही तेरी।
ना कभी मुख मोड़ लेना, प्रीति में डूबूं तुम्हारी।
प्रीति भी बढ़ती कृपा से, हार बैठा मैं स्वयं से।
दो मुझे अपना सहारा, नीर बहते हैं नयन से।
नाचू कठपुतली बन कर, फूल खिलते तू सदा है।
शीश चरणों में झुका है, प्यार दे तेरा जहाँ है।

200

हरि तड़फ तड़फ कर रह जाते, तुम तो करूणाकर कहलाते।
न कभी मिटेगा नाम तेरा, बस चाह प्यार तेरा पाते।
नयनों में मेरे बस जाओ, ना मुझको अब तुम तड़फाओ।
मैं दास तुम्हारा नाथ सदा, तुम ताप हरो हरि अपनाओ।

रखने की क्या आवश्यकता? और पात्र वही फेक दिया। सिकन्दर जब मिलने गया तो डायोजनीज ने पूछा, कहाँ जा रहे हो? सिकन्दर ने कहा, एशिया माइनर जीतना है। डायोजनीज ने पूछा, फिर क्या करोगे? सिकंदर ने कहा, फिर भारत जीतना है। डायोजनीज ने कहा फिर? सिकंदर ने कहा, फिर और जो थोड़ी बहुत दुंनिया बचेगी, वह जीत लेनी है। डायोजनीज ने कहा और फिर? सिकन्दर ने कहा, फिर क्या, फिर आराम करेंगे। डायोजनीज हँसने लगा, उसने कहा, अगर आराम ही करना है तो इतनी दौड़ धूप किस लिये? आराम– देखो हम अभी कर रहे है। तुम भी आराम कर सकते हो कहीं जाने की कोई जरूरत नहीं है।

मैं छोड़ कहाँ तुम को जाऊँ, मेरी मंजिल तो तू ही है।
कहते नयनों से आँसू है, मेरा सर्जक तो तू ही है।
ले चल पथ पर दे प्यार हमें , ना भूल हमें अज्ञानी हम।
बिन तेरी कृपा न दीप जले, गिर रहे नीर है यह रिमझिम।
मैं खड़ा द्वार पर हार गया, तुम नजर उठा कब देखोगे?
इस दिल में गीत उठें तेरे, चाहूँ सुपनों में महकोगे।
अंखियां भर भर आये हरपल, मैं हार गया मुझ में ना दम।
मैं सदा कृपा तेरी चाहूँ, हरि शरण तुम्हारी हर लो गम।

201

कितना बिखरा दर्द यहाँ है, माना सब संसार तेरा है।
मोती बन बरसे नयनों से, प्रीति बढ़ा नित तू सर्जक है।
बिछुड़ा जाता मेला सारा, अंखियां नीर बहाये हरपल।
मगन होय जिय बन्शी धुन सुन, प्यासे प्राण पिला दे तू जल।
कुछ ना जाने बालक तेरे, शाम सुबेरे तुमको टेरे।
अपनी कृपा बनाये रखना, आस मिटाये तुही अंधेरे।
ले चल मुझको प्यारे निष्ठुर, पार लगा दे मेरी नैया।
बसो सदा मेरे नयनों में, तुम बिन कोई नहीं खिवैया।
नहीं अर्चना की विधि जानूं, तेरे दर पर नाथ खड़ा हूँ।
सम्बल मिल जायेगा तेरा, आस लिये हरि मैं जीता हूँ।
एक सहारा मेरा तू ही, नजर उठा बहता है पानी।
तू ही ज्ञानी अन्तर्यामी, झोली खाली भर दे दानी।

202

टूटी वीणा स्वर न उठाये, कैसे नाथ तुझे हम पाये।
अज्ञानी मैं भटक रहा हूँ, ज्ञान हमें दो तुझे मनायें।
सकल विश्व का तुही रचियता, सारा जीवन तुमसे आता।
तुझ करूणा का हुआ भिखारी, इन नयनों से पानी आता।

हैनरी फोर्ड अपने लड़कों को सड़क पर जूता पालिश करने भिजवाता था। वह कहता था, अपने जेब का खर्च तुम खुद ही पैदा करो। दुनिया का सबसे बड़ा अरबपति! पड़ोसियों ने भी कहा, यह ज्यादती है, यह तुम क्या करवा रहे हो। उसने कहा कि मैने खुद जूते पालिश कर के पैसा कमाया है। जो मेरे जमाने के धनपति थेऋ भीख मांग रहे हैं मैं भिखमंगा था। मैं आज दुनिया का सबसे बड़ा अमीर हो गया हूँ। मैं अपने बच्चों को भिखमंगा नही बनाना चाहता, इसलिये उन्हे जूते पालिस करने के लिये सड़क पर भेजता हूँ।

रॉक फैलर लन्दन आया तो एक होटल में ठहरा। उसने आते ही पूछा कि सबसे सस्ता कमरा कौन सा है?

तुम बिन कहीं मिले ना चैना, बरसे मेरे रिमझिम नयना।
अपनी कृपा दिखाओ हरि तुम, सुखद बने यह सुन्दर सुपना।
जाता जीवन तू ना आता, क्यों विषाद मुझको दे जाता।
खता हमारी तू बतला दे, तू जीवन का भाग्य विधाता।
तेरा ही बस नाम सहारा, बहा जा रहा तेरी धारा।
अपना प्यार सदा तुम देना, मेरे जीवन का आधारा।
अन्तर्यामी सभी जगह तुम, आँख उठा देखो आंखे नम।
बस जाओ मेरे नयनों में, मिट जायें फिर सारे ही गम।

203

हरि बिन कृपा नहीं कुछ होई, ज्ञान ध्यान सब कुछ है वह ही।
जपता जा पागल मन उसको, और राह ना सब कुछ वह ही।
कूल हाथ न आवे कोई,जप उस बिन गति ना है कोई।
दो पल का जीवन इठलावे, दुख में भूल न पावे कोई।
जप ले नैया पार करेगा, साथ लगेगा तू न डरेगा।
कठपुतली हम डोर हाथ हरि, ध्यान डोर रख दुख न डसेगा।
दुनिया उसकी मालिक वह ही, नाच नचावे अंखियां रोई।
जप ले नाम सहारा उसका, वही कर्ता करे सो होई।
जाने लहर न बस वह बहती, सुख दुख पथ के वह सब सहती।
जोड़े सागर से यदि नाता, मिटे स्वयं सागर बन बहती।
जप जप मिट स्वीकार उसे कर, मिटा यहाँ मैं हरि भजन कर।
स्वप्निल दुनिया क्यों भरमाया, झुक चरणों में खेवट हरि हर।

204

छोड़ तुमको जाऊँ कहाँ पर, प्रीति न तोड़ो मुझ से मोहन।
दास तुम्हारा जनम जनम का, प्यार हमें दो बहे यह नयन।
जगत इशारे तेरे चलता, अन्तर्यामी जग के कर्ता।
कुछ ना जानूं अज्ञानी मैं, ज्ञान हमें दो दीखे रस्ता।

अखबारो में फोटो निकला था। मैनेजर पहचान गया। उसने कहा कि 'आप रॉकफैलर मालूम होते है, और आप सस्ता कमरा खोजते है? आपके बेटे यहाँ आते है तो सबसे कीमती कमरा खोजते है।' तो रॉक फैलर ने ठंडी सांस भर कर कहा कि "दे आर मोर फॉर्च्युनेट, दे हैव ए रिच फादर, आई ऐम नॉट सो– मै इतना भाग्य–शाली नहीं हूँ, मैं एक गरीब बाप का बेटा हूँ। वे मौज उड़ा रहे है, वे एक अमीर बाप के बेटे हैं।"

ईसप की एक कथा हैं। एक दिन एक सिंह, एक गधा, एक लोमड़ी शिकार करने के लिये साथ साथ निकले। उन्होने काफी शिकार किया। जब सांझ हो गई तो सिंह ने लोमड़ी से कहा कि तू शिकार के तीन

हरि हरि जपें मनाये तुमको, फेरो ना मुहँ देखो हमको।
नैया हिचकोले खाती है, पार लगा खेवट बन हमको।
ऐसे जीवन को क्या जीना, पल को भी सांसे क्यों आये।
जिस पर नाज करूं ना देखे, शरण तुम्हारी क्यों शर्माये?
ले चल मांझी प्यार हमें दे, सहा न जाता गम अब इतना।
अंधियारी रातों में बन जा, मेरे इन नयनों का सुपना।
जीवन तेरा मालिक तू ही, कौन यहाँ मैं अंखियां रोई।
कृपा मिले खिल जाती बगिया, बढ़ा हाथ राखो शरणाई।

205

लहरे हमे डराने आवे, कैसे इस दिल को समझावे?
नजर उठा कर हमें देख लो, तेरे बालक नीर बहावें।
अनजानी पगडण्डी चलते, चल चल कर हम फिर फिर गिरते।
तुम बिन कृपा नहीं कुछ होता, प्यार हमें दे नयना बहते।
सारे जगके तुम हो स्वामी, गिरे नीर चरणों में पड़ता।
कौन यहाँ मैं पता न जानूं, दास तुम्हारा तू ही भर्ता।
ज्ञान ध्यान सब तुही बढ़ावे, तुम बिन नहीं ठिकाना पावे।
कर्ता भर्ता हर्ता तू ही, कृपा करो हरि जिय हर्षावे।
सुन्दर दुनिया बरसे अमृत, प्यासे को जल तुही पिलावे।
सर्जक तू हम बालक तेरे, कृपा करो बगिया खिल जावे।
जीवन दाता जीवन तेरा, कुछ न मेरा सब कुछ तेरा।
दिल मे ज्योति जला दे मेरे, मिटे अंधेरा होय सुबेरा।

206

जो मीत बने बन गये शत्रु, लगती क्या देर पलटने में।
मन भजन करो हरि सुख पाओ, बहते जाओ इस सुपने में।
हरि की लीला हरि ही जाने, अज्ञानी खेल रहे जग में।
आगे पीछे कुछ ना जाने, हरि नयन बसा पा सुख मग में।

बराबर बराबर के विभाजन कर दे। लोमड़ी ने बिल्कुल बराबर तीन हिस्से किये। सिंह नाराज हो गया और लोमड़ी की गर्दन दबा कर उसको भी शिकार के ढेर मे फेंक दिया। फिर गधे से कहा कि अब तू दो हिस्से कर दे। एक मेरे लिये और एक तेरे लिये। गधे ने सारे शिकार का एक ढेर लगा दिया और एक मरे कौए को एक तरफ रख कहा 'महानुभाव! ये मेरा आधा भाग। सिंह ने कहा,' गधे, अच्छे मित्र गधे! तूने इतना समान विभाजन करने की कला कहाँ से सीखी?गधे ने कहा, 'दिस डेड फॉक्स। इस मरी हुई लोमड़ी ने मुझे ये कला सिखायी बराबर विभाजन करने की।'

एक सूफी फकीर बायजीद अपने

हरि जपले मन का सम्बल वह, ले जायेगा तेरी नौका।
कांटे भी पथ में फूल बने, जप ले हरि खोवे ना मौका।
जपता जा शाान्ति प्रदाता वह, हरि आगे अपना शीश झुका।
मालिक वह तू तो जाने क्या, कर्ता बन मन तू क्यों चूका।
बन लहर गीत गा ले उसके, सागर वह नचा रहा तुझ को।
जुड़ जा बस उससे ज्ञान यही, अज्ञान सताये ना तुझको।
यह आंख झरे बन दास हरि, अपने यह पुष्प चढ़ा उसको।
सांसो में बस वह ही गूंजे, दे ज्ञान ले चलेगा हमको।

207

हरि बिन कृपा चैन ना पावे, चंचल मन तू जप हरि मन में।
कितने दुख है कितने सुख है, डोल रही नौका सागर में।
उठ उठ गिरें खा रहे धोखा, पार लगावे वह ही नौका।
नयनों के आंसू ना सूखे, जप ले हरि ना खोवे मौका ।
कितने नीर गिरे धरती पर, खिली हाय ना अब तक दुनिया।
तू क्या जाने उसकी दुनिया, नचा रहा वह हमको छलिया।
जपता जा मन वही सहारा, अंधियारे में वही अधारा।
काली रैन डरावे जब जब, कित जाये मन यह बेचारा।
सभी सहारे लगते झूठे, पल पल में अपने भी रूठे।
नैया बहे जाये कहाँ पर, विनती कर हरि वह ना रूठे।
जपो हरि है वही अधारा, सभी तरफ है वही नजारा।
कर्ता ना तू डोर हाथ हरि, करो समर्पण हरि की धारा।

208

तू बना मदारी नचा रहा, देखे ना यह रोते नगमें।
ऐसे निष्ठुर जीवन को दे, क्या निभा रहा तू है कसमें।
तेरे हम दास सदा ही हैं, अज्ञानी हम बल ना मुझमें।
उपजे जो ज्ञान करूँ वह ही, ना रूठ कभी बस जा दिल में।

गुरू के पास गया और उसने अपने गुरू से कहा मुझे शिक्षा दे। उसके गुरू ने कहा कि तू सिर्फ मेरे पास रह और मुझको देख मेरा निरीक्षण करऋ उठना, बैठना, खाना, पीना, सोना – सब तू मेरा देख, और मेरा निरीक्षण कर। उसी निरीक्षण से तुझे विवेक उत्पन्न होगा। बायजीद बैठ गया । पहले ही दिन एक घटना घटी एक आदमी आया और बड़ी गालियां देने लगा। गुरू बैठा चुप, हंसता रहा। दूसरे दिन एक भक्त आया और प्रशंसा के पुल बांध ने लगा। उसके जाने के बाद गुरू ने बायजीद को कहा, ' तूने देखा? जगत एक सन्तुलन हैऋ प्रशंसा भी है गाली भी है। तुम अपनी जगह रहो, बैचेन मत हो। न गाली देने वाले से कुछप्रयोजन है, न प्रशंसा करने वाले से कुछ प्रयोजन है। बायजीद से

बरसे नयना मेरे रिमझिम, होय सुरति तेरी गंगाजल।
सब प्रीति यहाँ छूटी जाये, प्यासे प्राणों का तू ही जल।
मैं बाट निहारूँ जपूं तुझे, बहती नयनों से है धारा।
तू पार लगा दे नैया को, केवट बन तू ही आधारा।
बहती नैया कुछ पता नहीं, तुम छिपे हुए हो दर्द यही।
इस पाप पुण्य की नगरी में, दे दो विवेक है विनय यही।
बन जाऊँ तेरी कठपुतली, बस जाओ मेरे नयनों में।
जग के सर्जक कुछ ना जानूं, मुझको रख ले निज चरणों में।

209

राम जपूं मैं राम पुकारूँ, तुझ पर अपना जीवन बारूँ।
दूर न अपने से तुम करना, आंसू से मैं चरण पखारूँ।
मैं हूँ अबल सृष्टि के पालक, चल चल हारा देना तुम बल।
इस जीवन के तुम ही सर्जक, प्यार हमें दो बहता है जल।
मेरे मोहन नाचूं सुन धुन, प्रीति में तू रंग ले मोहन।
दास तुम्हारा जनम जनम का, माफ खता कर मुझ मे ना गुन।
मेरे खेवट भूल मुझे ना, आंसू से भीगी अंखियां है।
कुछ ना जानूं अज्ञानी मैं, पांव पडू. मेरा सैया है।
तेरा गुलशन तू ही माली, तुम बिन कभी लगे ना लाली।
पार लगा दे मेरी नैया, पूजा की थाली भी खाली।
राम राम हर रोम पुकारे , दूर ना कर खड़ा हूँ द्वारे।
नयनों में मेरे बस जाओ, सुनो विनय तुम प्रियतम प्यारे।

210

जब तन भी अपना यहाँ नहीं, कैसे मेरे हो सकते हो?
विधि के हाथो मजबूर यहाँ, कितना उससे लड़ सकते हो?
कुछ साथ मिला हँस कर बह लो, शिकवे अपने सब तज डालो।
मुरझाई बगिया खिल जाये, तपते दिल पर बूंदे डालो।

कहा तू बस देखता रह और उसी देखने में से सार का पता चलेगा। प्रशंसा से फूल मत जाओ गाली से पीड़ित मत हो जाओ।

बाप से ज्यादा शक्तिशाली आदमी बेटे के लिये और कोई नहीं होता। जब बेटा बड़ा होने लगा तो एक दिन बाप ने बेटे को कहा कि तू इस सीढ़ी के ऊपर चढ़ जा। बेटा ऊपर चढ़ गया। बाप ने सीढ़ी अलग कर दी और कहा कि तू कूद पड़। बेटे ने कहा कि कूद पड़ूं? हाथ पैर टूट जायेंगे! बाप ने कहा मैं मौजूद हूँ तेरा पिता। मैं तुझे संभाल लूंगा। कूद पड़, डर मत। लड़के ने हिम्मत की और बाप पर भरोसा करके कूद गया। कूदते ही बाप दूर हो गया। लड़का नीचे गिरा, दोनो पैर लुहलुहान हो गये। उस लड़के ने कहा कि क्या

जो बनी लहर बहती जाये, ना पता कहाँ चल खो जाये।
जुड़कर सागर से बहे लहर, पथ दुख के सह ना घबराये।
बन कठपुतली हरि नाच यहाँ, ना अपना कुछ सब हरि जहाँ।
कर उसे समर्पण बह जग में, बस वही मुंका ले चले जहाँ।
अन्तस में दीप जलाये वह, जपले नैया ले जाये वह।
उस बिन ना ठौर यहाँ कोई, प्यासे प्राणों का जल है वह।
अपनी पतवार उसे दे दे, नयनों के नीर चढ़ा पग में।
कितना ज्ञानी तू सत्य समझ, सारी दुनिया उसके बस में।
हरि नाम सहारा पकड़ यहाँ, जपता जा पार करे नौका।
अंखियां रोये काहें टूटा, तेरे बस ना जप ले मौका।
जपता जा वह सबका स्वामी, तू कौन करे जो मनमानी।
हरि प्रीति बढ़ा सुख है वह ही, ना उससे बढ़ कोई दानी।

211

मत मान यहाँ दुख क्या माने, सारे सुपने ही ढह जाने।
हरि प्रीति बढ़ा विश्वास जगा, अमृत तुझ में पी दीवाने।
जप ले हरि को पावन गंगा, न्हाये इसमें हो मन चंगा।
कठपुतली बन कर नाच यहाँ, कर्ता बन क्यों करता दंगा।
तू लहर बना गाले हरि को, सागर तो तेरे साथ सदा।
बन बन कर मिटती लहर यहाँ, जप ले हरि लागे नहीं जुदा।
प्यासे है प्राण पिला पानी, सारी दुनिया है यह फानी।
उस बिन ना कोई और सुने, जप ले उसको वह ही दानी।
विषधर चहुँ ओर यहाँ घूमें, जप हरि भय उस बिन ना टूटे।
आंसू की बहती धारा में, जप ले उसको काहे टूटे।
अन्तस में उसका दीप जला, पी को हरपल मन तू पुकार।
सारे जग का वह ही मालिक, जपता जा पा ले हरि दुलार।

'मतलब?' अब किसी का भरोसा नहीं, अपने बाप का भी नहीं। अब तुझे मैं स्वतन्त्र करता हूँ। अब तू अपनी बुि से चल।

सिकन्दर अफलातून का शिष्य था। एक दिन सिकन्दर ने उससे कहा तुम घोड़ा बन जाओ और मैं तुम्हारे ऊपर सवारी करना चाहता हूँ। तो अफलातून को घोड़ा बना दिया और उसकी पीठ पर बैठ कर सवारी की। उसके दस–पाँच दरबारी जो मौजूद थे उनके सामने सिकन्दर ने कहा, देखो ज्ञानी की दशा। यह ज्ञानी मुझे सिखाने चला है। तो अफलातून ने कहा कि मेरी ही वासनाओ की वजह से यह मेरी दशा है, जो तुम्हारा घोड़ा बना हूँ। मैं तुम्हे ज्ञान सिखा कर भी सौदा ही कर रहा हूँ, उससे भी मैं कुछ पाना ही चाहता हूँ।

212

स्वर मिले कर्ता मिटेगा, बह सहज जो दीखता है।
स्वर मिला जो भासता है, तू नहीं हरि नाचता है।
जपो हरि नदिया उसी की , बन लहर नाचो न चलती।
ले सहारा साथ सागर, देख ले यह आँख रोती।
मन जपो वह ही ठिकाना, न पता कहाँ हमें जाना।
बन लहर बहले यहाँ पर, जोर कितना क्यों न जाना?
ज्ञानी देगा ज्ञान हमें, सब उसी का देख सच को।
शीश को अपने झुकाले, जप मिटा दुख कर जतन को।
कौन अपना है पराया, देख ले सब ओर छाया।
कुछ समय चल खो रहे सब, जप हरि रोवे यह काया।
अन्त तक साथी बना ले, प्राण प्यासे जल पिला दे।
ठौर ना उस बिन यहाँ पर, नीर हरि पग में चढ़ा दे।

213

नही ठुकरा नही ठुकरा हरि, दास तुम्हारा जनम जनम का।
मर्जी तेरी से हम आये, नीर न सूखे इन नयनों का।
अपने आंचल की छाया में, राख गीत तेरे मैं गाऊँ।
प्रीति में खो जाऊँ मैं तेरी, तुमको हरपल नाथ मनाऊँ।
मुझे डरावे काली रैना, दूर न अपने से तुम करना।
तुम बिन और न लागे अच्छा, अपनी कृपा सदा तुम करना।
चलचल कर मैं हार गया हूँ, बांह पकड़ले छोड़न बैयां।
ले चल मुझे जहाँ हो मर्जी, भीगी रहे प्रेम में अंखियां।
किस्ती बहे साथ हो मस्ती, तुमको भूले मिटती हस्ती।
नयनों में बस जाओ मेरे, बन्शी प्यारी धुन मैं सुनती।
करूँ समर्पण नाथ द्वार पर, अपना लो ना तुम ठुकराओ।
अज्ञानी मैं दास तुम्हारा, करूणा सागर तुम अपनाओ।

वह पाने की चाह ही इस हालत में ले आई ।

एक अरबपति महिला ने एक गरीब चित्रकार से अपना चित्र बनबाया। चित्र को देख कर वह बहुत खुश हुई और बोली क्या पुरस्कार दूँ? उसने कहा आपकी जो मर्जी, तो अच्छा यह पर्स तुम रख लो । पर्स तो कीमती था। लेकिन चित्रकार की छाती बैठ गई कि पर्स को रख कर क्या करूँगा? इससे तो बेहतर थाकुछ सौ डालर ही मांग लेते। तो उसने कहा नही नहीं मै पर्स का क्या करूँगा, आप कोई सौ डालर ही दे दे। उस महिला ने कहा, तुम्हारी मर्जी। उसने पर्स खोली, उसमें एक लाख डालर थे, उसने सौ डालर निकाल कर चित्रकार को दे दिये और पर्स ले कर वह चली गई। सुना है

214

क्यो न दर्द पहचाने अपने, आंसू गिरते देखा किसने?
बनी लहर इस जग में आई, बता तुही पूछा है किसने?
हरि की लीला हरि ही जाने, ना कर्ता बन ओ दीवाने।
सुख दुख के इस भंवर बीच में, दुख भंजक वह जप दीवाने।
दूर अंधेरा वही करेगा, पथ तेरा वह सुगम करेगा।
अन्तस ज्योति जलाले उसकी, नैया तेरी पार करेगा।
हरि बिन चैन नहीं इस जग में, कितनी ठोकर रोवे नगमें।
जप ले हरि वह शान्ति प्रदाता, उपजे ज्ञान बसाले दिल में।
उसकी मर्जी खेल रहा जग, मर्जी उसकी ले जाये कब?
वैर किसी से मन क्या रखना, उसकी मर्जी से होता सब।
जप हरि बन्शी बन जग में चल, ना अपना कुछ जाता यह तन।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, तज मैं चलो न दुख पाये मन।

215

किससे मन आशा रखता है, तन भी साथ छोड़ जाता है।
कुछ पल मिल सब बिछुड़ रहे हैं, क्यों मन को रंजित करता है।
बह ले सब है ज्ञान उसी का, जपता जा हरि सब सुपना है।
सम्बल उसका ले ले पागल, हरि का खेल यहाँ चलता है।
किसने पूछा यहाँ आ गये, जायेगे पथ और न दूजा।
नाच यहाँ बन हरि कठपुतली, बहते आंसू कर ले पूजा।
उस बिन नहीं सहारा कोई, अंधियारे से डर लगता है।
वह सर्जक कर उसे समर्पण, कर्ता भर्ता हर्ता वह है।
जपता जा कर प्यार उसी से, सारी दुनिया का राजा है।
जप जोड़ो मनउससे नाता, भाग्य विधाता वह अपना है।
उसे जपो जपते जाओ मन, पथ में उससे ही बल पाओ।
उसकी ही सब गूंज यहाँ पर, झुको चरण में मन सुख पाओ।

चित्रकार अब तक छाती पीट रहा है। परमात्मा ने जो दिया है वह बन्द है, छिपा है उसे खोल कर नहीं देखते। और मांगे जा रहे है दो दो पैसे, दो दो कौड़ी की बात।

एक सूफी फकीर हुआ जुन्नेद। बहुत प्रेम करता था अपने बेटे को। फिर बेटा अचानक मर गया किसी दुर्घटना में, दफना आया। पत्नी थोड़ी हैरान हुई। पत्नी सोंचती थी कि बेटा मरेगा तो जुन्नेद पागल हो जायेगाऋ इतना प्रेम करता था अपने बेटे को। लेकिन जैसे जुन्नेद को कुछ हुआ ही नही। आखिर सांझ होते होते जब सब लोग विदा हो गये सहानुभूति प्रगट करके, तो पत्नी ने पूछा कि कुछ दुख नही हुआ तुम्हें? मैं तो सोचती थी तुम टूट जाओगे इस बेटे

216

गीत सुनेगा कौन हमारे, भटक रहा मैं द्वारे द्वारे।
मन तू ऐसा गीत सुना दे, मिट जाऊँ पहुँचू हरि द्वारे।
हरि की लीला हरि ही जाने, रिमझिम बरसे आंसू खारे।
बन्शी कीधुन को सुनने को, तरसे कान सुना दे प्यारे।
शरण तुम्हारी जीवनदाता, तुम ही मेरे भाग्य विधाता।
तुम बिन कहो कहूँ मैं किससे, इन नयनों से आंसू आता।
ले चल निष्ठुर मेरी नौका, अपना प्यार मुझेतू दे जा।
अज्ञानी मैं हार गया हूँ, अपना सम्बल मुझको दे जा।
मेरे सर्जक भूल मुझे ना, खता ना मेरी मैं तो कुछ ना।
कठपुतली तेरी मैं नाचूं, देख दर्द आंखे मूदे ना।
डगमग डोल रही सागर में, पार लगा दे मेरी नैया।
नजर उठाकर देख मुझे ले, बहती कब से मेरी अंखियां?

217

कुछ हमने कहा, तुमने कहा, अपनी अपनी सब डगर गये।
मिल बैठ प्रेम से बात करें, नित खेल खिलाती प्रकृति नये।
ढोता मैं का ले बोझ यहाँ, पल में गिरता अभिमान यहाँ।
मन मान यहाँ पर प्रीति बढ़ा, खिलते हरपल है सुमन यहाँ।
कितना गिरता नयनों से जल, पीले बरसे जब अमृत जल।
मिलप्रीति बढे हिय कमल खिले, धुलजाते हैं सबमन के मल।
कितनी पीड़ा है दर्द यहाँ, किसकी चलती है अकड़ यहाँ।
दे प्यार बूंद बरसा सुख की, तू समझ इशारे हरी जहाँ।
कठपुतली उसकी नाच रहे, जो मिला ज्ञान वह बाट रहे।
मैं छोड़ बनो बन्शी उसकी, कुछ पल मेंहमा न सदा रहे।
हरि दास बने बिन नही मजा, दिन रात सतावे तुझे कजा।
सब खेल उसी का अपना क्या, कुछ पल का लेले यहाँ मजा।

218

देखी दुनिया तुम्हारी, दिल हमारा भर गया।
क्या करें शिकवा किसी से, छोड़ तू मुझको गया।

से तुम्हे इतना प्रेम था। जुन्नेद ने कहा एक क्षण को धक्का लगा फिर मुझे याद आया जब बेटा नही था तब भी मैं था और खुश था। अब वह बेटा नही है तो दुख होने का क्या कारण? फिर वैसे ही हो गया जैसा पहले था। बीच का एक सुपना टूट गया।

बल्ख का एक नवाब था, इब्राहीम। उसने बाजार में एक गुलाम खरीदा। गुलाम बड़ा स्वस्थ, तेजस्वी था। इब्राहीम उसे घर लाया। इब्राहीम उसके प्रेम में ही पड़ गया। आदमी बड़ा प्रभावशाली था। इब्राहीम ने पूछा, "तू कैसे रहना पसन्द करेगा?" तो उस गुलाम ने मुस्करा कर कहा, "मालिक की जो मर्जी। मेरा कैसा, मेरे होने का क्या अर्थ? आप

कितना रोये ना देखा, दर्द दिल को देगया।
खिलने भी न फूल पाया, हाय क्यो मुरझा गया।
गुन गुनाते गीत हम कुछ, ना तुझे भाया कभी।
बनता निर्मोही इतना, आस थी टूटी सभी।
जा रही मिटती कहानी, नीर सूखे नयन से।
जा रहे पल ना रूके यह, पा सके ना जतन से।
तुझ कृपा बिन हो नहीं कुछ, प्रीति की मदिरा पिला।
बह रही अंखियां हमारी, ना मुझे इतना रूला।
ना ज्ञानी तू ना दीखे, चिंता में रात बीते।
कैसे समझाऊँ दिल को, प्यार दे रैन बीते।

219

तुम बिन रोये मेरी अंखियां, छोड़ दिया मेले में सैंया।
नही किनारा दीखे मुझको, दास तुम्हारा पड़ता पैंया।
बस जाओ तुम रोम रोम में, कट जाये यह काली रैना।
ले चल पार लगा दे नैया, आंख मूंद ना रोवे नयना।
अगम अगोचर पार न तेरा, यह व्याकुल मन ढूंढे डेरा।
शान्ति प्रदाता नाम तुम्हारा, प्यार सदा चाहूँ मैं तेरा।
कठपुतली मैं मुझे नचावे, करूँ भजन वर दे दे छैला।
बसो नयन में रोवे जिवड़ा, धुल जाये सब मन के मैला।
दर तेरे का सदा भिखारी, ना मैं कुछ हूँ तू ही दानी।
नयनों से गंगा बहती है, प्यासे प्राण पिला दे पानी।
कितना बिखरा दर्द यहाँ पर, नीर गिरावे नयना झर झर।
तपते दिल की प्यास बुझा दे, ना रूठो मेरे करूणाकर।
डोले नैया रोवे अंखियां, सुनो मोहन कृष्ण कन्हैया।
प्यार तेरे में रंग जाऊँ, कितनी बीत गई है सदिया।
अज्ञानी हूँ मन्द बुि(हूँ, सकल सृष्टि के तुम हो पालक।
तुम ही मेरे भाग्य विधाता, करो क्षमा तेरा हूँ बालक।

जैसा रखेंगे वैसा रहूँगा।'' इब्राहीम ने पूछा, '' तू क्या पहनता, क्या खाना पसन्द करता है?'' उसने कहा, '' मेरी क्या पसन्द? मालिक जैसा पहनाये, पहनूंगा। मालिक जैसा खिलाये, खाऊंगा।'' इब्राहीम ने पूछा, कि तेरा क्या नाम है? क्या नाम ले कर तुझे पुकारे? उसने कहा, '' मालिक की मर्जी मेरा क्या नाम? दास का कोई नाम होता है? जो नाम आप दें।''

कहते है इब्राहीम के जीवन में क्रान्ति घट गई। उठ कर उसने पैर छूए इस गुलाम से कहा कि तूने मुझे राज बता दिया जिसकी तलाश में मैं था। अब यही मेरा और मेरे मालिक का नाता है। तू मेरा गुरू है।

220

कहने वाले मिले बहुत ही, साथ निभा ना पाये पर वह।
अवसर पा कर छोड़ गये वह, पकड़े हाथ न आये फिर वह।
जप ले हरि मन पावन गंगा, धो देती वह मन का मैला।
स्वप्निल यह सारी दुनिया है, चलता जा रख मन में छैला।
शान्ति प्रदाता निर्माता है, उसको भूल कहाँ हम जायें।
रंग बदलती इस दुनिया में, हरि बिन कैसे मन समझायें?
देगा ज्ञान वही जपता जा, न कर्ता बन कर ध्यान उसका।
उसके हाथों की कठपुतली, वह नचा रहा सब बल है उसका।
जीवन जीना हरि को पीना, मैं छोड़ो संग उसके रहना।
वही जा रहा ले यह नौका, जपता जा मन काहे डरना।
सबका ही वह भाग्य विधाता, सब में ज्योति जलाता है वह।
नमन करो मन उसके आगे, मर्जी उसकी ले जाये वह।

221

कौन हूँ मैं कौन हूँ मैं, बस समय कही धूल हूँ मैं।
जा रही लेकर हवाएँ, देखता सब मौन हूँ मैं।
नयन से पानी गिरे जब, दुख में डूबे जब यह मन।
जप हरि उसकी ही लीला, नमन कर कर्ता नहीं बन।
जो बनाया बन गये हम, जपो हरि से स्वर मिला ले।
किसकी चलती है यहाँपर , स्वप्न सा सब हरि बसा ले।
ना जले दीपक कृपा बिन, जप उसको तेरा साहिल।
कर समर्पित स्वयं को मन, नयन से गिरता यहाँ जल।
जप ले उस बिन ठौर न है, साथ में वह तो सदा है।
मन्द बुि(ज्ञानी सारे, ना कभी उससे जुदा है।
आंख के हैं नीर पूजा, जपो हरि वह ही ठिकाना।
ज्ञान सब मन जान उसका, सभी परिवर्तित जमाना।
जपो हरि बीते उमरिया, जाता ले वह कन्हैया।

एक मुसलमान बादशाह हुआ। उसका एक गुलाम था। गुलाम से उसका बड़ा प्रेम था, बड़ा लगाव था। बड़ा स्वामी भगत था। एक दिन दोनो जंगल से गुजरते थे। एक वृक्ष में एक ही फल लगा था। सम्राट ने फल तोड़ा। जैसी उसकी आदत थी, उसने एक कली काटी और गुलाम को दे दी। गुलाम ने चखी और उसने कहा '' मालिक एक कली और।''

और गुलाम मांगता ही गया। फिर एक ही कली हाथ में बची। सम्राट ने कहा, '' इतना स्वादिष्ट है?'' गुलाम ने झपट्टा मार कर वह कली भी छीननी चाही। लेकिन सम्राट ने चख ली। वह फल बिल्कुल जहर था। मीठा होना तो दूर। उसके एक टुकड़े को लीलना मुश्किल था।

वह नचाता नाचते हम, सुख न उस बिन रोय अंखियां।
जपो हरि हरि ज्ञान वह दे, स्वामी वह ही पीड़ा हर ले।
स्वप्न सा सब बह रहा है, न उलझ धुन उसकी सुनले।

222

कौन हो कुछ तो कहो तुम, दास तेरे आंख है नम।
अनजान जग हम भटकते, प्यारे दे मिटते सभी गम।
ले चलो किस्ती हमारी, यह भंवर में हृदय भारी।
कैसे चल कर मैं आऊँ, कांपते पग अश्रु जारी।
सब सुगन्ध के हो राजा, न रूलाओ अब तो आ जा।
मैं भिखारी द्वार तेरे , कर कृपा तू भीख दे जा।
शक्ति दे यह बाग तेरा, खिल सकूं कुछ भी न मेरा।
कण्ठ प्यासे जल पिला दे, यह झुका है शीश मेरा।
नदी तेरी बह रहा मैं, नाथ फिर क्यों आँख फेरी।
कर कृपा तुझ प्रीति पाऊँ, मिट सकें रातें अंधेरी।
प्यार से दे हमें छैंया, देख ले तपें है गलियां।
कुछ न जानूं बस पुकारू, न बनो निर्मोही छलिया।

223

यह होता सोचे वह होता, सोचे तू यह क्या पागल मन।
हरि हाथ डोर हम कठपुतली, हरि बसा हिय में मिटे चुभन।
जीवन सुपना कुछ ना अपना, कुछ पल खेले हरि ना तजना।
वह शान्ति प्रदाता साथ सदा, दीपजला हरि पथ में चलना।
ना जान सके कोई किस्ती, जा रही कहाँ अंखियां रोती।
कर उसे समर्पण स्वामी वह, तपती गलियां छैयां मिलती।
जग से मनकरे शिकायत क्या, चाहत सब अपनी ले जीते।
सुख दुख की चलती चक्की में, वह धन्य धैर्य धर हरि जीते।
टूटे सुपने हरि जी ले मन, अपना कुछ ना जाता यह तन।
कर ले इसकी भी सेवा तू, पर जान सभी उसका ही धन।

सम्राट ने कहा, '' पागल तू मुस्करा रहा है, और इस जहर को तो तू खा गया? तूने कहा क्यों नही? उस गुलाम ने कहा, '' जिन हाथों से इतने सुख मिले हो और जिन हाथों से इतने स्वादिष्ट फल चखे हैं, एक कड़वे फल की शिकायत?''

फलों का हिसाब ही छोड़ दिया, हाथ का हिसाब है।

दो भिखमंगे एक झाड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे। और एक भिखमंगा रो रहा था, शिकायतें कर रहा था। जब सम्राट रोते है, शिकायते करते है। तो बेचारा भिखमंगा! वह कह रहा था यह भी कोई जीवन है आज इस गांव कल उस गांव। बिना टिकट सफर

जप ले हरि हरि ले चले वही, पतवार उसी के हाथों में।
बहते आंसू हरि चरण चढ़ा, सर्जक वह सब उसके बस में।

224

प्रीति न कर निष्ठुर हैं वह तो, प्रीति बिना गति है ना कोई।
हरि से प्रीति बढ़ा मन पागल, चैन पड़े हिय अंखिया रोई।
पल पल परिवर्तन इस जग में, मिटती जाती सारी कसमें।
दिल में दीप जला ले हरि का, कर्ता वह ही संग वह पथ में।
जपता जा सब हरि की लीला,उपजे ज्ञान सभी वह कीन्हा।
पड़ जा मन हरि के चरणो में, होय वह जो हरि ने चीन्हा।
सुन सुन थके सुपन है दुनिया, आती है भर भर यह अंखियां।
हरि जप उस बिन ठौर न कोई, बहती जाये तेरी नैया।
सुख दुख के बहते बादल हैं, उसे भूल ना वह साजन है।
पंछी उड़ उड़ जाये कहाँ पर, वही एक मन का भावन है।
दुख में याद उसी की आवे, उस बिन पीड़ा कौन मिटावे।
जपता जा बन हरि कठपुतली, मिटा यहाँ मैं हरि को पावे।
जीवनदाता भाग्य विधाता, कौन यहाँ मैं उससे आता।
कुछ पल खेले खो जायेंगे, खिले फूल जो हरि को ध्याता।
नजर टिका ले हरिकी लीला, वही कर रहा जग में क्रीड़ा।
नाम सहारा जपता जा मन, वही हरेगा सारी पीड़ा।

225

बहती जाये यहाँ लहर पर, जाने ना है कहाँ बसा घर।
जनम जनम की बात करें सब, पल में कुछ हो नहीं है खबर।
सागर हमसे खेल रहा है, संग न शाश्वत कोई रहा हैं
प्रीति बढ़ा मन पागल इससे, ले जाये घर वही रहा है।
जप जप मन इसकी ही लीला, और हरे ना कोई पीड़ा।
उड़ जहाज पंछी कहाँ जावे, दुनिया इसकी करता क्रीड़ा।
सुमरन बिना मुक्ति है नाहिं, मनुआ रोवे मिले न ठाई।
सुख दुख में खेले यह दुनिया, नाम सहारा ले हरि पाई।

करो! कहीं भी उतार दिये जाओ। जो देखे वही उपदेश .दे। मांगो रोटी, मिले उपदेश। जो देखे वही कहे भले चंगे हो, जाओ काम करो। हर जगह अपमान, हर जगह निन्दा। यही भी कोई जीवन है?तो दूसरे ने कहा, तो फिर यह काम छोड़ क्यों नही देते? उसने कहा, क्या? क्या मैं स्वीकार कर लूं कि मैं असफल हो गया?

ईश्वरचन्द विद्यासागर ने एक संस्मरण में लिखा है कि उनको वाइसराय ने सम्मान के लिये बुलाया था। गरीब आदमी थे। पुराना बंगाली ढंग का कुरता, कमीज, धोती पहनते थे। फटे पुराने कपड़े थे। मित्रों ने कहा कि वाइसराय की सभा में इन कपड़ो में जाना उचित नहीं। अच्छे कपड़े

जप पागल तपती है राहें, जपो नाम मिल जाती छाया।
बना खिलौना नाच रहा हूँ, सुने वही सुन रोती काया।
हरि हरि जप बस वही सहारा, ले जाती है उसकी धारा।
कहाँ मन्जिल कोई न जाने, गोद उसी की वही सहारा।

226

ले चल नाविक धीरे धीरे, पार लगा दे नैया तीरे।
डगमग करती इस नौका में,सदा पुकारूँ तुम हो मेरे।
नीर नयन में बसो हृदय में, जानूं ना अनजान डगर में।
धक धक करता यह दिल मेरा, चाहूँ प्यार तुम्हारा पथ में।
कौन यहाँ मैं तेरी क्रीड़ा, रूठ न जाना रोवे जिवड़ा।
सदा रहो मेरे नयनों में, मिट जाती है सारी पीड़ा।
जीवनदाता जीवन तेरा, सबका तू है भाग्य विधाता।
धूप छाँव के इस मेले में, बढ़े प्रीति तब हिय सुख पाता।
बढ़े प्रीति नित नयना बरसे, प्राण तुझी को मोहन तरसे।
इस जीवन का तू ही माली, खिले फूल यह जीवन हरषे।
प्यार मिले भर जाती झोली, बिन हरि कृपा जले है होली।
बस जाओ तुम रोम रोम में, धन्य वही हरि मदिरा पी ली।
परिवर्तित जग पथ में कांटे, बल तेरा ही संकट मोचन।
अंधियारी रातों का साथी, प्यार बढ़े नित वर दे मोहन।
स्वीकारो मेरी पूजा को, नयन नीर खाली है थाली।
जो कुछ भी है रूप तुम्हारा, प्रेम बढ़े लग जाती लाली।

227

जब जोर नहीं चलता अपना, ना समझे मन यह घबरावे।
उसकी ही चलती सदा यहाँ, मन क्यों ना निज को समझावे?
जप ले हरि हरि बहता ही जा, जो मिले ज्ञान करता ही जा।
पर जान खिलौने हम उसके, चरणों में उसके झुक ही जा।
लाया वही ले लाये वही, कर्ता तू ना बस कहीं नहीं।

बना देते है। बात उनको भी जची। एक दो दफे इन्कार भी कियाऋ लेकिन फिर उनको भी लगा कि ठीक नही है। तो कपड़े बनवा लिये।

कल सुबह वाइसराय की सभा में जाने का है, उसके एक दिन पहले की घटना है। सांझ को लौटते थे बगीचे से टहल कर। सामने ही एक मुसलमान अपने कपड़े पहने हुए – चूड़ीदार पायजामा, शेरवानी, हाथ में छड़ी लिये, बड़े शौक से शाम को चहलकदमी करते हुए घर जा रहा था वापिस। एक आदमी भागा हुआ आया और उसने कहा मीर साहब आपके घर में आग लग गई जल्दी करिये। लेकिन वह वैसे ही चलता रहा। नौकर समझा कि शायद मालिक ने सुना नहीं। उसने पुनः कहा मकान में आग लग गयी।

सुख दुख की दुनिया में घूमें, ना पता मिटेगे यहाँ कहीं।
जप हरि हरि देगा ज्ञान वही, उन बिन जागे न कोई भान।
आंसू की गंगा बहती है, वीणा अपनी से उठा तान।
मन करो समर्पण हरि आगे, शुभ यही कर्म से ना भागे।
गाता जा उसके गीत यहाँ, हरि कृपा बिना ना तू जागे।
हरिनाम सहारा केवल है, उर संशित नैया डगमग है।
वह पार लगावेगा नैया, वह ही खेवट मन स्वामी है।

228

हरि प्रेम बढ़े तुझमें मेरा, सब कुछ तेरा ना कुछ मेरा।
अंखियों से आंसू बहते हैं, हरि नाम सहारा बस तेरा।
ले चल हौले हौले मुझको, दे प्यार नहीं तड़फा मुझको।
बगिया तेरी खिल जायेंगे, दे ज्ञान हमें पायें तुमको।
जग की अनजानी गलियां है, नाचे मन ता ता थैया है।
कैसे समझाऊँ इस दिल को, निर्मोही तू तो छलिया है।
जीवन तेरा कुछ ना मेरा, मैं तुझे पुकारूँ भंवर बीच।
ना रूठ कभी मुझसे जाना, बरसे अंखियां यह रही सींच।
सांसो में हरि हरि घूम रहा, छिप गया कहाँ ना चैन रहा।
स्वीकार करो मेरे आंसू, क्यो तुझ बिन जीवन यहाँ रहा।
कुछ ना जानूं अज्ञानी मैं, मैं चरण पडू तेरे सैंया।
तू पार लगा दे यह नैया, बालक तेरा दे दे छैंया।

229

सूर्य चन्द्रमा करते फेरी, बहता जीवन नदिया तेरी।
अपनी कृपा सदा तुम रखना, मैं हूँ नाथ शरण में तेरी।
जग की अनजानी गलियों में, ढूढ़ रहा तुमको ना जाना।
आंखो से आंसू बहते है, कहते करूणा कर हो जाना।
गूंजे गीत सब तरफ तेरे, रंगू प्रेम में यह वर दे दे।
पार लगा दे मेरी नैया, बहते आंसू में रंग भर दे।

मुसलमान ने कहा सुन लिया क्या इस वजह से जिन्दगी भर की चाल बदल दें। ईश्वर चन्द पीछे थे। उन्होने सुना तो बड़े हैरान हुए। तो उन्होने भी सोचा कि जिन्दगी भर के कपड़े बदले वाइसराय के लिये। और यह भी एक आदमी है। देखे यह आदमी अनूठा है। घर पहुँच गया। आग लगी है उसने नौकरों से कह दिया बुझाओ और स्वयं बाहर खड़ा रहा। सब इन्तजाम कर दियाऋ लेकिन उस आदमी में रत्ती भर भी फर्क नहीं है। ईश्वरचन्द ने लिखा है मेरा हृदय क्ष(ा से झुक गया। वह किस चीज को सम्भाल रहा है कि अपने होश को नहीं खोना है। इस दुनिया में ऐसी कोई चीज भी नहीं है इतनी मूल्यवान।

दुनिया है यह एक कहानी, बनती मिटती यहाँ जवानी।
तू ही पार करे यह नैया, बहता नयनों से है पानी।
ले चल मर्जी जहाँ कहीं भी, मर्जी चली सदा है तेरी।
प्रीति न मुझ से कभी तोड़ना, जनम जनम से तेरी चेरी।
बसो नयन में दूर न होना, अज्ञानी जानू ना होना।
करे अर्चना बहते आंसू, मांगू प्यार तेरा खिलौना।

230

मन लगाते फिर रहे सब, छिप गया जाने कहाँ रब?
अश्रु की गंगा है बहती, ढूढ़े पूछे कोई कब?
हरि जपो ना चैन उस बिन, झरती अंखियां यह झर झर।
ज्ञान का दाता वही है, जा रहा ले मार्ग दुस्तर।
नाम जप ले ले सहारा, बहता आंसू यह खारा।
ना कर्ता तू कर्ता वह, जाती ले उसकी धारा।
जप हरि बीतेगी रैना, बस वह हैप्यारा छैला।
प्राण प्यासे जल पिलाले, जाये धुल सारे मैला।
साथ अन्तिम तक वही है, हरि जपो जपते रहो मन।
देख जग में कौन है संग, संग भी तेरा छोड़े तन।
सिर झुका हरि के चरण में, दास मन उसी का बन जा।
जा रहा ले नाव तेरी, प्यार से उसमें रंग जा।
कौन अपना है पराया, कुछ पलों का साथ आया।
दीप अन्तस में जले जब, जपो हरि सब ओर छाया।
उसकी कठपुतली हम तो, जपो हरि मन चैन आवे।
पार नैया को लगावे, क्यो ना तू उसको ध्यावे।

231

तुही तू है मैं नहीं हूँ, कौन मैं ना जानता हूँ।
अश्रु से सींचू चरण को, बस कृपा को मांगता हूँ।
छिप गया हमको रूला कर, बस नही चलता यहाँ जब।

उन्नीस सौ दस में काशी नरेश का आपरेशन हुआ अपेन्डिक्स का। तो उन्होने कहा कि मैने कसम ले रक्खी है कि बेहोशी की कोई दवा कभी न लूंगा। कभी कोई नशा न करूँगा डॉक्टरो ने कहा यह कैसे हो सकेगा? यह कोई छोटा मोटा काटा निकालना नही है। पूरा पेट चीरा फाड़ा जायेगा, हड्डी काटी जायेगी। घण्टो लगेंगे। लेकिन काशी नरेश ने कहा आप उसकी फिक्र न करें। सिर्फ मुझे मेरी गीता पढ़ने दे। मैं अपनी गीता पढ़ता रहूँगा आप अपना – आपरेशन करें। आपरेशन हुआ चिकित्सक चकित रह गये कि कैसे सम्भव हुआ? इतनी पीड़ा हुई। लेकिन काशी नरेश ने कहा मुझे पता न चला क्योकि मेरा ध्यान तो गीता पर लगा था। सारे जीवन

क्या गुनाह न जानते हम, खोजती आंखे कहाँ रब?
छोड़ जाते साथ सारे, दीखता ना जब किनारा।
खोजती आंखे गगन में, छिपो नही मैं तो हारा।
बीत जाये यह उमरिया, नाम ले तेरा सांवरिया।
नयन में तुम बसो मेरे, दास भर भर आये अंखियां।
जगत की अनजान गलियां, मैं भिखारी ज्ञान दे दे।
द्वार पर तेरे ख्ड़ा मैं, कर क्षमा पीड़ा मिटा दे।
अश्रु से करूँ मैं पूजा, नाथ मेरे हाथ खाली।
फूल तेरे बाग के हम, देख लो नम आंख माली।

232

तुम न कहो पर हम जपते है, अपनी पीड़ तुझे कहते है।
नहीं किताारा दीखे कोई, मझधारे मेंडोल रहे हैं।
बालक तेरे नाथ अबल हम, साथ सदा देना ना है दम।
पार लगा दे मेरी नैया, मेरी देखो आंखे है नम।
तू ही खेवट तू ही सर्जक, नयना बहते मोड़ नहीं मुख।
बसो नयन में हरि मेरे तुम, मिट जायेगे फिर सारे दुख।
जीवन तेरा मालिक तू ही, अज्ञानी मैं ज्ञानी तू ही।
ज्योति जला हिय मिटे अन्धेरा, इन सांसो में बसता तू ही।
राम पुकारू राम पुकारूँ, चरणों में गिर तुझे निहारूँ।
प्रीति बढ़ा दे ऐसी मोहन, ताप हरो ना तुझे बिसारूँ।
तुम बिन कृपा नहीं होवे कुछ, बाट निहारे अंखियां बूझे।
दीप जला दो अन्तस में हरि, अंधियारा पथ रस्ता सूझे।

233

जपते हम तुम तो ना कहते, अपनी पीड़ तुझे कहते है।
अनजानी दुनिया में बहते, अंखियों से आंसू गिरते है।
पूर्णब्रह्म ब्रह्माण्ड है तेरा, लगा रहे सब तेरा फेरा।

की गहनतम कला ध्यान की मालकियत को उपलब्ध कर लेना है।

एक सेठ के घर नौकर था। एक दिन उसने अपने मालिक से कहा कि अब बहुत हो गया, आज आप मुझे छुट्टी दे दे। सीमा होती है हर चीज की, और आपको मुझ पर रत्ती भर भरोसा नही। अब और नहीं सह सकता इस संदेह की स्थिती की। मालिक ने कहा क्या कहते हो भरोसा और तुम पर नही? तिजोरी की चाबियां तक यहाँ टेबल पर पड़ी रहती है। उसने कहा चाबिया पड़ी जरूर रहती है परन्तु उसमें से लगती एक भी नहीं।

मार्क ट्वेन ने लिखा है कि एक सभा में मैं गया। और जो पुरोहित बोल रहा था, बड़ा अद्भुत बोल रहा था। पाँच मिनट

अज्ञानी मैं कुछ ना जानू, मिले प्यार तो मिटे अंधेरा।
नीर बह रहे तुम देखोगे, आस यही हम लेकर चलते।
पार लगा दो मेरी नैया, बने विवश चरणों में गिरते।
जीवन दाता जीवन तेरा, चाह यही कुछ रंग तू भर दे।
मिटे ताप मिल जाये छैया, इस जीवन का मतलब दे दे।
पवन उड़ा कर लिये जा रही, दूर नही इस दिल से होना।
एक सहारा नाम तुम्हारा, कभी दूर ना मुझको करना।
बीत जायेंगे स्वप्निल पल यह, कैसे तुमको नाथ मनाऊँ?
अन्तर्यामी सब कुछ जानो, अंखियों के मैं नीर चढ़ाऊँ।

234

धरती भीगे बरसे रिमझिम, सब ओर महके गन्ध तेरी।
सूनी सी मैं अंखियां लेकर, व्याकुल घूमू शरणा तेरी।
चाहा रोना रो सके नहीं, हँसना चाहा हँस सके नहीं।
ऐसे निष्ठुर जीवन को दे, छिप गया कहाँ कुछ पता नहीं।
मैं दास तुम्हारा सदा नाथ, जीवन का भाग्य विधाता है।
न खता मेरी कोई मोहन, सब ज्ञान तुझी से आता है।
बस एक सहारा तेरा है, तुम बिन बोलो मैं किसे कहूँ?
अनजानी राहे नीर बहे, तुझसे ही अपना दर्द कहूँ।
हरि अपनी कृपा सदा रखना, मैं अबल न बल मुझमें कोई।
लेचलो मुझे निज छाया में, न और मेरा साथी कोई।
निष्ठुर ना बन इतना मोहन, सारी दुनिया तेरे बस में।
जीवन जी लें गीतों को गा, बस जाओ मेरे नयनों में।

235

पल पल परिवर्तित यह दुनिया, दिल यहाँ लगे ना जप सैयां।
ले जाये वह किस्ती तेरी, जपता जा उसकी ही दुनिया।
बहता जा गा ले गीत सदा, सुख दुख में होता नहीं जुदा।

सुनकर मुझे ऐसा लगा कि आज मेरे पास जो सौ डालर है दान कर जाऊँगा। दस मिनट के बाद मार्क ट्वेन लिखता है कि मुझे भीतर विचार उठने लगा कि सौ डालर जरा ज्यादा है, पचास से भी काम चल सकता है। और अतंरग वार्तालाप चलने लगा। जब करीब करीब तीन चौथाई व्याख्यान पूरा हो चुका था तब उसने सोचा कि किसी को पता थोड़ी है एक डालर भी दूँ तो काम चल जायेगा। और जब थाली उसके पास आई भेंट मांगने के लिये तो एक डालर भी खीसे से नहीं निकला एक डालर को भी जेब में डाल लिया सोचा कौन देखता है। किसको पता चलेगा।

एक बहुत बड़ा धनपति समुद्र यात्रा सेवापिस लौट रहा था। भंयकर तूफान उठा।

मन करो समर्पण शाश्वत वह , उसकी ही चलती यहाँ सदा।
मन प्रीति बढ़ा निर्मोही वह, उस बिन न ठौर कोई जग में।
आसान डगर हो कटे सफर, ना छोड़ सुरति पागल पथ में।
कठपुतली उसकी नाच रहे, नाचो पर उसका ध्यान रहे।
हरि हाथ डोर मन जान सदा, कर्ता बन क्यों हम अकड़ रहे।
उस बिन ना चैन मिले जिय को, दे साथ वही रट ले पिव को।
उसका ही सारा खेल यहाँ, हम आज यहाँ फिर ना कल को।
जप ले हरि हरि ज्ञानी वह ही, तन करता उपजे ज्ञान वही।
बन जा मन बन्शी उसकी तू, सुर उसके तूना यहाँ कहीं।

236

लिये जा रहा जब सागर, लहर की बोल मन्जिल क्या?
सुरति रख ले इसीकी मन, न कोई और है मन्जिल।
सदा यह संग तेरे है, खिलाता गोद में लेकर।
चले इसकी सदा ही है, समझ ले और ना है घर।
वही दे ज्ञान स्वामी वह , उसी का दास बन जी ले।
गुजरती जा रही घड़ियां, वही अमृत है मन पीले।
यहाँ आये कहाँ जाये, कभी जाना किसी ने मन।
खिलाता खेल यह मन ही, यहाँ तो छूटता यह तन।
जपो सागर लिये जाता, यहाँ सब कुछ बिछुड़ जाता।
बढ़े जब प्रीति सागर से, न इतना शूल चुभ पाता।
यह स्वप्निल सारी दुनिया, बहाती नीर यह अंखियां।
समर्पण कर उसी के मन, वही देवे तुझे छैया।

237

आंसू से खोजे तू किसको, खो जाते ना मिलते हमको।
परिवर्तन जग की रीति यहाँ, स्वीकार करो जप लो हरि को।
दुख के बादल छट जाते हैं, जो भी हरि को मन ध्याते हैं।
कठपुतली उसकी नाच रहे, पर सुरति डोर पर रखते है।

जब जिन्दगी बिल्कुल मौत के करीब आ गई तो उसने परमात्मा से प्रार्थना की कि तूने आज बचा लिया तो मेरा जो महल है राजधानी में उसे बेच कर गरीबों में बाट दूंगा। तूफान शान्त हो गया। नाव किनारे लग गई। पछताने लगा कि यह तूफान शान्त तो हो ही जाना था। मैं नाहक फंस गया क्योंकि लोगो ने भी सुन लिया। आखिर गांव में उसने खबर कर दी ठीक है मकान बेचना है और यह घोषणा की कि यह मकान और यह बिल्ली जो दरवाजे पर बंधी है दोनो साथ ही बिकेंगे। बिल्ली का दाम दस लाख रूपया और मकान का दाम एक रूपया। खरीदार मिल गये बढ़िया मकान था। उसने दस लाख जेब में रख लिये और एक रुपया गरीबों में बाट दिया।

आन जाना उसकी मर्जी, मेहमां कुछ पल अमृत को पी।
दे ज्ञान वही सब कुछ उसका, ना कर्ता बन जपता जा पी।
मन जपो हरि ना ठौर कोई, बढ़ता जा कंटक राहों में।
ले नाम सहारा मिटते दुख, सब सृष्टि उसी के हाथों में।
मन गाता जा हरि नगमों को, कट जायेगी काली रातें।
किससे जग में तू आस करे, सुन ले सब तू जग की बातें।
हरि जपो उदय हो शु(ज्ञान, ले चले वह बस इतना जान।
अनजानी इस पगडण्डी पर, सुख पाये मन तू संग जान।

238

हरि प्यार मिले मैं लिये भूख, तू भी छिप गया नहीं सम्मुख।
जैसा राखे मर्जी तेरी, हरि किसे कहूँ मैं अपने दुख?
जीवन जैसा जीना चाहा, जी सके न हम रोये पथ में।
तेरी आहट को सुनने को, यह मेरे रोते हैं नग में।
नयनों से बहता पानी है, यह दुनिया आनी जानी है।
यह पल भी होते क्यों भारी, हरि दास तुम्हारे स्वामी है।
हरि पहुँच सकूं तेरे द्वार, इतना तो बल भर दे मुझ में।
हरि अपनी कृपा सदा देना, मैं अबल नहीं है बल मुझमें।
खोई खोई नभ में आंखें, क्या ढूंढ रही तुम कहाँ गये?
जीवन के भाग्य विधाता तुम, किन सुपनों को तुम पिरो गये?
स्वीकार करो मेरे आंसू, अज्ञानी पर बालक तेरा।
हरि घूम रहा है तेरा चक्र, तुम बसो नयन दुस्तर घेरा।

239

नाम जपो मन यह सुखदाई, खाते ठोकर जग हरजाई।
तपती गलियां बहती अंखियां, जप ले उसे छांव मिल जाई।
बहती जाये तेरी नैया, सुख दुख में खेले यह जिवड़ा।
अन्तिम पल तक साथ यही है, उसको भूल भटकता जिवड़ा।
तृष्णा के बादल छट जाते, शाश्वत को हम जब भी ध्याते।
मर्जी उसकी खेल खिलावे, स्वीकारो दुख मिटते जाते।
किसको पकड़े किसको छोड़े, हरि बिन ठौर कही ना पाई।

बाबर नानक के समय भारत आया। उसके सिपाहियों ने नानक को भी संदिग्ध समझ कर कैद कर लिया। तो कहते है नानक को संदेश भेजा कि मुझसे मिलने के लिये आओ। नानक ने कहा मिलने तो तुम्हे ही आना पड़ेगा। बाबर खुद कारागृह में आया। वह नानक से बहुत प्रभावित था। नानक को साथ ले गया महल में और उसने बहुमूल्य से बहुमूल्य शराब पीने के लिये निमंत्रित किया। नानक हंसेऋ और उन्होने एक गीत गाया। जिस गीत का अर्थ है कि मैं परमात्मा की शराब पी चुका। अब इस शराब से मुझे नशा न चढ़ेगा। आखिरी नशा चढ़ गया है। अच्छा हो बाबर, कि तुम ही मेरी शराब पियो, बजाय अपनी शराब पिलाने के।

स्वप्निल दुनिया कुछ पल खेला, अंखियां हैं यह भर भर आई।
नमन करो हरि सुगम बने पथ, मर्जी उसकी कहीं ले चले।
दिल में जब बस जाते है हरि, मुरझाया जो कमल फिर खिले।
हरि बिन जग में कौन संभाले, समस्त सृष्टि को वह संभाले।
ज्ञानी वह दे ज्ञान तुझी को, कर दे नैया हरी हवाले।

240

जग से प्रीति हुई न पागल, सुरमरन में ना जिय लगता है
कितने देखे रव्वाव यहाँ पर, याद उसे कर जिय जलता है।
मन भटके यह ठौर न पावे, गिरे कहाँ खेला चलता है
तन छोड़े संग होता रंग भंग, बिन हरि कृपा न कुछ मिलता है।
दास बनों हरि प्रीति बढ़ा लो, प्रीति बिना ना दिल खिलता है।
अज्ञानी है बालक हरि के, याद उसे कर दिल रोता है।
जपले हरि हो पार डगरिया, दुख का पार करे वह दरिया।
पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर वह ही , बहती है देखो यह अंखियां।
रूदन मेरा यह अंधी गलिया, चरण पडू प्रभु पार लगाना।
बसो नयन में जपू तुझे मैं, रूठ कभी ना मुझ से जाना।
दीनबन्धु परमेश्वर मेरे, चाहूँ सदा रहो तुम मेरे।
जनम जनम का दास तुम्हारा, सदा प्राण तुमको ही टेरे।

241

मन यह उड़े कहाँ को जावे, पर यह ठौर कहीं ना पावे।
रामचरण में प्रीति बढ़े जो, भव सागर से यह तर जावे।
दो दिन दुनिया रैन बसेरा, ढलक रही पलपल में अंखियां।
बिन हरि प्रीति धुले ना मैला, बही जा रही तेरी नैया।
आंख मिचौनी सुख दुख मेला, छोड़ कहाँ जावेगा छेला।
इन प्राणों का सम्बल वह ही, छोड़ न दामन उसका खेला।
अंधियारा पथ राहें टेढ़ी, सुमरन छोड़ न बन हरि चेरी।
दीप जलावे अंधियारे में, सूर्य चन्द्रमा करते फेरी।
कौन यहाँ तू समय खिलौना, नजर हटा ना उस बिन कुछ ना।
जैसे उड़े जहाज का पंछी, जाये कहाँ हरि बिन ठांव ना।
चलता जा गा गीत उसी के, छोड़ यहाँ मैं बनो हरि के।
बन हरि चाकर जीवन जी ले, सारे स्वर ही है उस पी के।

सूफी फकीर हुआ बायजीद। वह अपनी प्रार्थना में परमात्मा से कहता था, मेरी प्रार्थनाओं का ख्याल मत करना। तू उन्हे पूरी मत करना। क्योंकि मेरे पास इतनी बुि(मिता कहाँ है। कि मैं वही माँग लूँ जो शुभ है। आदमी बिल्कुल बुि(हीन है वह जो भी मांगता है उसी के जाल में भटकता है। अगर पूरा हो जाता है, तो मुश्किल खड़ी हो जाती है पूरा नहीं होता तो मुश्किल खड़ी होती है तुमने जो मांगा, उसमें से कुछ पूरा हुआ है, उससे तुम्हे सुख मिला? तुमने जो मांगा उसमें से कुछ पूरा नहीं हुआ है, उससे तुम्हें सुख मिला? तुम दोनो हालत में दुख पा रहे हो।बु(िमानी क्या है? सिर्फ परमात्मा को मांगने वाला पछताता नही। जो उसकी बन्शी बन कर जीता है।